# आदिवासी एक्सप्रेस

**आमजन का एक मात्र हिंदी दैनिक अखबार**

रांची, गुरुवार
12 जून 2025
वर्ष: 38, अंक: 186
पृष्ठ: 12, मूल्य: 3रु
RNI NO.: 49065/1989
DAVP CODE: 130961


देश

**असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने किया बराक घाटी के लिए एकीकृत विकास योजना तैयार**

झारखंड

**सीसीएल के मगध-संघमित्रा क्षेत्र में शिकायत निवारण शिविर का हुआ आयोजन**

हज़ारीबाग

**कोर्रा जबरा रोड में शान ड्रेसेस कलेक्शन, मोबाइल सेल्स एंड सर्विस का हुआ शुभ उद्घाटन**

# निलंबित आईएएस अधिकारी विनय चौबे के करीबी पर गिरी गाज, एसीबी ने कोर्ट से लिया गिरफ्तारी वारंट

**क्राइम संवाददाता द्वारा**

**रांची।** शराब घोटाला केस में गिरफ्तार निलंबित आईएएस अधिकारी विनय कुमार चौबे के सहयोगी ऑटोमोबाइल कारोबारी विनय कुमार सिंह भी गिरफ्तार होंगे। वे नेक्सजेन कंपनी के मालिक हैं। पूरे मामले की जांच कर रही भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो ने विनय कुमार सिंह को पूछताछ के लिए दो-दो बार समन किया, लेकिन वे एसीबी के सामने उपस्थित नहीं हुए।

इसके बाद ही एसीबी ने कोर्ट से विनय कुमार सिंह का गिरफ्तारी वारंट लिया है। एसीबी ने नौ जून को ही विनय कुमार सिंह का गिरफ्तारी वारंट लिया है और उसके बाद से ही उनकी तलाश चल रही है। बताया जा रहा है कि जल्द ही एसीबी उन्हें गिरफ्तार करेगी।

एसीबी के केस, समन के विरुद्ध कारोबारी विनय कुमार सिंह ने भी रांची स्थित एसीबी की विशेष अदालत में अग्रिम जमानत याचिका दाखिल की थी। उनकी याचिका पर 10 जून को कोर्ट में आंशिक सुनवाई हुई थी, जिसमें अदालत ने एसीबी से केस डायरी मांगा है। अब इस मामले में जमानत याचिका पर 20 जून को सुनवाई होनी है।

ऑटोमोबाइल कारोबारी विनय कुमार सिंह पर आरोप है कि उन्होंने पूर्व में गिरफ्तार निलंबित आईएएस अधिकारी विनय कुमार चौबे के काले धन का निवेश किया। आरोप है कि शराब घोटाला मामले में विनय कुमार चौबे के माध्यम से अवैध तरीके से अर्जित धन को विनय कुमार सिंह ने निवेश किया है। एसीबी को भी खातों के विश्लेषण में इससे संबंधित इनपुट मिले हैं, जिसके आधार पर ही उनसे एसीबी पूछताछ करना चाहती थी।

शराब घोटाला केस में मनी लॉन्ड्रिंग के तहत जांच कर रही ईडी ने भी विनय कुमार सिंह के ठिकानों पर पूर्व में छापेमारी की थी और आईएएस विनय कुमार चौबे से उनके रिश्तों को उजागर किया था।

ईडी ने जांच के क्रम में यह भी खुलासा किया है कि विनय चौबे की पत्नी स्वप्ना संचिता विनय कुमार सिंह की कंपनी नेक्सजेन में कंस्ल्टेंट के रूप में काम की और इसके एवज में विनय सिंह ने छह साल के भीतर उनके खाते में 1.26 करोड़ का भुगतान भी किया था।

शराब घोटाला केस में एसीबी अब तक पांच आरोपितों को जेल भेज चुकी है। इन आरोपितों में उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग के पूर्व प्रधान सचिव विनय कुमार चौबे, संयुक्त आयुक्त उत्पाद गजेंद्र सिंह, महाप्रबंधक वित्त सुधीर कुमार दास, पूर्व महाप्रबंधक वित्त सह अभियान सुधीर कुमार तथा प्लेसमेंट एजेंसी मार्शन के स्थानीय प्रतिनिधि नीरज कुमार सिंह शामिल हैं।

आरोपित अधिकारियों पर अपने पद का दुरुपयोग कर अपने चहेते अयोग्य प्लेसमेंट एजेंसियों को मैनपावर आपूर्ति का ठेका देने का आरोप है। आरोप है कि फर्जी बैंक गारंटी पर दो प्लेसमेंट एजेंसियों मार्शन व विजन ने ठेका लिया, जिससे सरकार को करीब 38 करोड़ रुपये के राजस्व का नुकसान हुआ। एसीबी पूरे मामले की जांच कर रही है।

एसीबी ने अब अपनी जांच का दायरा बढ़ाते हुए उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग के पूर्व प्रधान सचिव सह झारखंड विबरेजेज कारपोरेशन लिमिटेड के पूर्व महाप्रबंधक विनय कुमार चौबे के विरुद्ध आय से अधिक संपत्ति के मामले में जांच शुरू कर दी है। एसीबी ने इसके लिए अलग से प्रारंभिक जांच (पीई) दर्ज की है।

एसीबी आय से अधिक संपत्ति का आकलन करने के लिए विनय कुमार चौबे के वैध स्रोतों से होने वाली आय व उस चेक पीरियड में व्यय का पता लगा रही है। इससे यह पता चल सकेगा कि उन्होंने आय से कितनी अधिक की संपत्ति अर्जित की है। आय से अधिक संपत्ति अर्जित कर उन्होंने कहां-कहां निवेश किया है।

## मुख्यमंत्री से मिले जर्मन राजदूत, विकास और सहयोग पर हुई चर्चा

**बिशेष संवाददाता द्वारा**

**रांची:** मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से आज बुधवार को मुख्यमंत्री आवासीय कार्यालय में भारत में जर्मनी के राजदूत फिलिप एकरमैन और इकोनॉमी काउंसलर ने मुलाकात की. इस दौरान दोनों पक्षों के बीच विभिन्न क्षेत्रों में विकास और सहयोग को लेकर चर्चा हुई.

**जर्मनी और झारखंड के बीच समानताएं :** जर्मन राजदूत ने कहा कि जर्मनी और झारखंड के बीच कोयला खनन और उत्पादन के क्षेत्र में काफी समानताएं हैं. ऐसे में जर्मनी झारखंड के साथ कोल आधारित उद्योगों के विकास में सहयोग बढ़ाने को लेकर इच्छुक है.

**झारखंड में औद्योगिक निवेश की संभावनाएं :** मुख्यमंत्री सोरेन ने जर्मन राजदूत को झारखंड में औद्योगिक निवेश की संभावनाओं से अवगत कराया. उन्होंने कहा कि राज्य सरकार देश और विदेश के औद्योगिक समूहों के साथ लगातार संपर्क स्थापित कर रही है और इसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आ रहे हैं.

## झारखंड में धूमधाम से मना राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव का बर्थडे

**78वें जन्मदिन पर 78 पाउंड का कटा केक**

**राजनीतिक संवाददाता द्वारा**

**रांची:** राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव का 78 वां जन्मदिन मनाया गया. इस मौके पर राजद प्रदेश कार्यालय में कार्यकर्ता और नेताओं द्वारा 78 पाउंड (35 किलोग्राम) का केक काटकर अपने प्रिय नेता का हैप्पी बर्थडे मनाया गया. लालटेन के चित्र के साथ बना यह डिजिटल केक कार्यकर्ताओं के बीच खासा आकर्षण का केंद्र रहा.

11 जून 1948 को गोपालगंज के फुलवरिया गांव में जन्मे लालू प्रसाद यादव सामाजिक न्याय के लिए लड़ने वाले देश के बड़े नेताओं में से एक हैं. उनके जन्मदिन को खास अंदाज में मना रहे राजद नेता और कार्यकर्ताओं ने इस मौके पर मिठाइयां बांटी और केक काटकर उनके दीर्घायु जीवन की कामना की.

इस मौके पर राजद नेता कैलाश यादव ने कहा कि वो दीर्घायु हों, ऐसी हम कामना करते हैं. उन्होंने गरीबों, दबे-कुचले लोगों को जुबान देने का काम किया है. गरीबों के इस मसीहा के जन्मदिन पर हम लोग बहुत-बहुत बधाई देते हैं. उन्होंने कहा कि हमें उम्मीद है कि आने वाले समय में बिहार में सामाजिक न्याय की सरकार बनेगी.

लालू प्रसाद यादव के जन्म दिवस पर रांची के चेशायर होम में एक सादगीपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस कार्यक्रम का नेतृत्व युवा राष्ट्रीय जनता दल, झारखंड के प्रदेश अध्यक्ष रंजन यादव ने किया.

इस अवसर पर चेशायर होम में रह रहे बच्चों के साथ केक काटा गया और उन्हें नाश्ता और पढ़ाई की सामग्री वितरित की गई. कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाना और शिक्षा के प्रति प्रोत्साहन देना था.

इस मौके पर रंजन यादव ने कहा कि राजद परिवार हमेशा समाज के वंचित वर्गों के साथ खड़ा है. हमारे नेता लालू जी ने जो मार्ग दिखाया है, हम उसी विचारधारा को आगे बढ़ा रहे हैं, जहां समाज के हर वर्ग को बराबरी का हक और सम्मान मिले. कार्यक्रम में डॉ. मनोज, विजय राम, विक्की यादव, क्षितिज मिश्रा, गुलशन खातून, प्रवीण कुमार, डी.के. सिंह एवं सुधीर कुमार सहित कई अन्य समाजसेवी एवं पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित थे.

## सीता सोरेन सहित 9 लोगों के खिलाफ अपहरण और रंगदारी के साथ मारपीट का परिवाद दायर

**क्राइम संवाददाता द्वारा**

**धनबाद:** जेल से छूटने के बाद सीता सोरेन के पूर्व पीए देवाशीष अब सीता सोरेन समेत नौ लोगों पर गंभीर आरोप लगाते हुए मामला दर्ज कराया है। देवाशीष ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की भाभी और भाजपा नेत्री सीता सोरेन समेत नौ के विरुद्ध धनबाद कोर्ट में शिकायत दर्ज कराया है। रांची जगन्नाथपुर निवासी सीता सोरेन के पूर्व पीए देवाशीष मनोरंजन घोष ने चोरी, रंगदारी, मारपीट, अपहरण एवं आपराधिक षड्यंत्र का आरोप लगाया है। मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी आरती माला की अदालत ने देवाशीष के अधिवक्ता केके तिवारी की दलीलें सुनीं। उसके बाद मुकदमे को सुनवाई के लिए स्वीकृत कर लिया।

**कोर्ट में मामला दर्ज:** देवाशीष ने सीता सोरेन के अलावा बरवाअड्डा के सुनील चौधरी उर्फ सुनील पासी, तेतुलमारी निवास राहुल नोनिया, भोलू सिंह, कतरास निवासी रौनक गुप्ता, रांची के बरियातू निवासी गंगा सागर सिंह, पिस्का मोड़ निवासी विवेक सिंह, खुशबू सिंह, रिंकू शाहदेव को आरोपित किया है। देवाशीष ने शिकायतवाद में कहा है कि वह सीता सोरेन का निजी सचिव था। 6 मार्च 25 को सीता सोरेन ने उसे कतरास में एक शादी समारोह में आने के लिए कहा था। वह अपनी गाड़ी से समारोह में शामिल होने के लिए सीता सोरेन के साथ धनबाद आया।

**सीता सोरेन के खिलाफ शिकायत:** उन्होंने आगे कहा कि समारोह में शामिल हुआ, इसके बाद वह सोनोटेल होटल में विश्राम के लिए गया। रात के 11:30 बजे सीता सोरेन के कहने पर सभी आरोपियों ने देवाशीष के साथ मारपीट की। उससे सादे कागज पर हस्ताक्षर कराए। सारे एटीएम कार्ड ले लिए, विभिन्न जगहों से चार लाख रुपये की निकासी कर ली।

## कांग्रेस का दलित प्रेम! सहयोगी दलों के साथ-साथ बीजेपी की भी बढ़ी चिंता

**राजनीतिक संवाददाता द्वारा**

**रांची:** पहले सरना धर्मकोड फिर पेसा कानून को लेकर मुखरता और अब दलित राजनीति की ओर बढा कांग्रेस का आकर्षण ने झारखंड की सियासी गलियारों में चर्चा का विषय बना दिया है. विपक्ष के साथ साथ सरकार में इंजन की भूमिका निभा रहे झारखंड मुक्ति मोर्चा कांग्रेस के इस रुख से हतप्रभ है.

बुधवार को प्रदेश कांग्रेस ने राज्य की 50 लाख आबादी अनुसूचित जातियों को आकर्षित करने के लिए राजधानी के गीतांजलि बैंक्वेट हॉल में बड़ी बैठक हुई, जिसमें कांग्रेस प्रदेश प्रभारी के.राजू, पार्टी के अनुसूचित जाति विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेन्द्र पाल गौतम, प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश, वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर समेत कई वरिष्ठ कांग्रेस नेता शामिल हुए.)

बैठक का उद्देश्य था अनुसूचित जाति के जीवन, अनुभव, संघर्ष और उनकी समस्याओं को समझना तथा समाधान के लिए नीतिगत दिशा तय करना. इस मौके पर कांग्रेस ने दलित राजनीति को हवा देने के लिए कई सैद्धांतिक निर्णय लिए, जिसमें राज्य सरकार पर एससी आयोग, बजट में घोषित अनुसूचित जाति परामर्शदातृ समिति को छह महीने के भीतर जमीन पर उतारने के लिए दबाव बनाने और जाति प्रमाण पत्र को लेकर आ रही परेशानी को दूर करने का निर्णय लिया गया.

संगठन में समुचित भागीदारी देने का भी निर्णय लिया गया. वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने अनुसूचित जातियों के उत्थान की वकालत करते हुए कहा कि लंबे समय से हरिजन विकास से दूर हैं. उन्हें मुख्य धारा से जोड़ने के लिए कदम उठाना पड़ेगा, इसके लिए चाहे जितनी लड़ाई लड़नी पड़े. उन्होंने कहा कि आवश्यकता इस बात की है कि अनुसूचित जातियों को एकजुट किया जाय और रही बात आयोग के गठन और परामर्श दातृ समिति के गठन की तो छह महीने के अंदर जरूर यह सरकार इसे पूरा करेगी.

वहीं, प्रदेश कांग्रेस प्रभारी के राजू ने कहा कि अनुसूचित जातियों को ऊपर लाने के लिए संगठन के अंदर पहले से ही प्रयास किया जा रहा है. इसके लिए प्रदेश से लेकर जिला एवं निचले स्तर तक की समिति में एससी, एसटी, ओबीसी और पिछड़ों के लिए 50त्न तक भागीदारी का प्रावधान किया जा रहा है.

### रांची में कोरोना संक्रमण की रफ्तार बढ़ी, 7 नये मामले सामने आये, सक्रिय मरीजों की संख्या 16

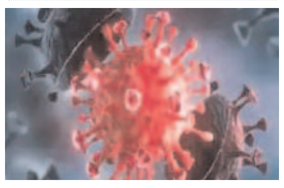

**क्राइम संवाददाता द्वारा**

**रांची :** रांची में कोरोना संक्रमण के मामले एक बार फिर तेजी से बढ़ रहे हैं. बुधवार को स्वास्थ्य विभाग की रिपोर्ट के अनुसार, जिले में 27 सैंपलों की जांच की गयी, जिनमें से 7 नए पॉजिटिव मामले सामने आये हैं. अब जिले में सक्रिय मरीजों की संख्या 16 पहुंच गयी है.

स्वास्थ्य विभाग की अपील स्वास्थ्य विभाग ने लोगों से अपील की है कि वे कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करें और हल्के लक्षण नजर आने पर तुरंत जांच कराएं. साथ ही, वैक्सीन की बूस्टर डोज़ लेने और मास्क पहनने की सलाह दी जा रही है. विभाग स्थिति पर नजर बनाए हुए है और आवश्यकता अनुसार अतिरिक्त कदम उठाए जाने की बात कही गयी है.

जिला प्रशासन ने सैंपलिंग और ट्रैकिंग की प्रक्रिया तेज कर दी है, ताकि संक्रमण को फैलने से रोका जा सके. अब तक कुल 432 सैंपलों की जांच की जा चुकी है, जिनमें से 31 संक्रमित पाये गये हैं. राहत की बात यह है कि आज किसी भी मरीज की मृत्यु नहीं हुई है.

# देश को लूटने वालों के घर से पैसे निकाल रही मोदी सरकार: बाबूलाल मरांडी

**राजनीतिक संवाददाता द्वारा**

**रांची:** देश में मोदी सरकार के 11 साल बेमिसाल के उपलक्ष्य में रांची महानगर और ग्रामीण जिला भाजपा के संयुक्त तत्वावधान में लेक गाडर्न अरगोड़ा में प्रोफेशनल मीट का आयोजन हुआ। प्रोफेशनल मीट में बड़ी संख्या में अधिवक्ता, डॉक्टर, प्राध्यापक, शिक्षक, इंजीनियर, सीए, सीएस, व्यवसाई शामिल हुए। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि बोलते हुए पूर्व केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने कहा कि सबके साथ और सहयोग के कारण मोदी सरकार के 11 साल बेमिसाल पूरे हो रहे। तीसरी बार मोदी सरकार भारत की जनता का आशीर्वाद है। उन्होंने कहा कि मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार सत्ता के लिए नहीं बल्कि गांव गरीब किसान महिला की सेवा के लिए समर्पित है। भाजपा सत्ता की नहीं राष्ट्र की उन्नति के लिए संकल्पित है।

स्मृति ईरानी ने कहा कि विश्व की सबसे बड़ी पार्टी जो डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पंडित दीन दयाल उपाध्याय के बलिदान और करोड़ों कार्यकर्ताओं के त्याग तपस्या से सिंचित पार्टी है। कहा कि मोदी सरकार गरीबों, महिलाओं, किसानों के कल्याण के लिए समर्पित है। करोड़ों रुपए इनके विकास पर खर्च हो रहे। ईरानी ने कहा कि एक जमाने में देश ने यह भी देखा है कि कांग्रेस के कार्यक्रमों में 5-10 हजार रूपये के भोजन प्लेट परोसे जाते थे जबकि आज मोदी सरकार 81 करोड़ गरीबों की थाली में भोजन परोसने का कार्य कर रही। कहा कि गरीब कल्याण, महिला सशक्तिकरण के साथ राष्ट्र का सम्मान मोदी सरकार सुनिश्चित कर रही। उन्होंने कहा कि धारा 370 हटाने पर खून की नदियां बहने की बात करने वाले लोगों ने देखा कि एक मच्छर भी इससे नहीं मरा। उन्होंने कहा कि आज मोदी सरकार के ऐतिहासिक कार्यों की प्रशंसा आज विरोधी भी करने को मजबूर हैं। कहा कि ऑपरेशन सिंदूर ने आतंकवाद की जड़ों पर प्रहार कर उसे नेस्तनाबूद करने का काम किया है। आज दुनिया देख चुकी है कि भारत की ओर आंख उठाकर देखने का परिणाम क्या होगा। आज बढ़ता भारत, बदलता भारत, आत्मनिर्भर भारत, स्वाभिमानी भारत उभर कर आया है।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष एवं नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि देश में सुशासन और सुरक्षा को मोदी सरकार ने सुनिश्चित किया है। कांग्रेस के 60 वर्षों के शासन ने उग्रवाद, आतंकवाद और भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया। ग्रामीण लोगों को उग्रवादियों के भय से घर बार को छोड़कर भागना पड़ा था, लेकिन आज मोदी सरकार ने नक्सल उन्मूलन की दिशा में बड़ा कार्य किया है। कहा कि आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार की सुरक्षाओं को मोदी सरकार ने सुनिश्चित किया है। दुश्मनों को एयर स्ट्राइक, सर्जिकल स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर से अभूतपूर्व जवाब दिए जा रहे। कहा, आज का भारत चिट्ठी नहीं लिखता बल्कि जवाब देता है। कहा कि 2014 से पहले देश में लूट भ्रष्टाचार की ही चर्चा होती थी, लेकिन आज मोदी सरकार केवल विकास ही सुनिश्चित नहीं कर रही बल्कि लूट के पैसे को भी बाहर निकाल रही। कहा कि आज झारखंड की इंडी गठबंधन की सरकार भ्रष्टाचार, लूट और कुशासन को बढ़ावा दे रही जबकि भाजपा सरकार विकास को संकल्पित है।

इस मौके पर भाजपा के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष डॉ रविंद्र कुमार राय ने कहा कि अलग झारखंड प्रदेश भाजपा की देन है और भाजपा इसे संवारेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा झारखंड में व्याप्त भ्रष्टाचार, धर्मांतरण, उग्रवाद, विदेशी घुसपैठ के खिलाफ लड़ाई लड़ती रहेगी। कार्यक्रम में प्रदेश महामंत्री एवं सांसद आदित्य साहू, विधायक सीपी सिंह, नवीन जायसवाल, महानगर जिलाध्यक्ष वरुण साहू, ग्रामीण जिला अध्यक्ष धीरज महतो, आरती कुजूर, विकास प्रीतम, आरती सिंह, सरोज सिंह, दीपक बंका शिवपूजन पाठक, ऊषा पांडे, सत्यनारायण सिंह, अरुण झा, लक्ष्मी कुमारी, सीमा सिंह, योगेंद्र प्रताप, अशोक बड़ाईक, सुबोध सिंह गुड्डू, बलराम सिंह, जितेंद्र वर्मा, राजू सिंह, अनिता वर्मा, वीणा मिश्रा, सुधीर श्रीवास्तव, अरविंद कुमार, मुकेश केसरी एल, अमित चौधरी, मुकेश काबरा, नीरज सिंह ,तद्दाश बाकची, प्रज्ञा तिवारी, दीना पांडे, अंकित वर्मा, करण कुमार, मनीत मोहन, रुचि कुमारी, अभिषेक रामदीन, डॉ तान्या सहित बड़ी संख्या में प्रोफेशनल और पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

## रांची विश्वविद्यालय में वित्तीय और प्रशासनिक अनियमितता के आरोपों पर कुलपति ने रखा पक्ष

**बिशेष संवाददाता द्वारा**

**रांची:** रांची विश्वविद्यालय एक बार फिर विवादों के घेरे में है. राज्यपाल सह विश्वविद्यालय के कुलाधिपति ने रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार सिन्हा के कार्यकाल के दौरान हुई कथित प्रशासनिक और वित्तीय अनियमितताओं की जांच के आदेश दिए हैं. इस मामले को लेकर उच्चस्तरीय समिति गठित की गई है, जो पूरे घटनाक्रम की निष्पक्ष जांच करेगी. इधर, मामले में आरयू के कुलपति ने अपना पक्ष रखा है.

रांची यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. अजीत कुमार सिन्हा पर गंभीर आरोप लगाए गए हैं. सबसे बड़ा आरोप यह है कि उन्होंने बिना किसी निविदा (टेंडर) प्रक्रिया के सीनेट भवन और कुलपति चेंबर का निर्माण कार्य करवाया. इसके अतिरिक्त उनपर शिक्षकों का स्थानांतरण दुर्भावना से प्रेरित होकर करने और नैक दौरे के नाम पर अनावश्यक सरकारी खर्च करने का भी आरोप है. इन आरोपों के मद्देनजर राज्यपाल ने निर्देश दिया है कि मामले की गहराई से जांच की जाए और यदि कहीं कोई चूक पाई जाती है, तो उसपर सख्त कार्रवाई हो.

**कुलपति ने रखा अपना पक्ष :** हालांकि इस पूरे विवाद पर जब कुलपति डॉ. अजीत कुमार सिन्हा से बात की गई, तो उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वे किसी भी तरह की जांच से नहीं भाग रहे हैं. उन्होंने कहा कि, ÷जांच हो जाए, दूध का दूध और पानी का पानी हो जाए. मैं पूरी तरह से जांच का स्वागत करता हूं और राज्यपाल द्वारा गठित किसी भी समिति को पूरा सहयोग दूंगा.

कुलपति ने अपनी सफाई में कहा कि जब उन्होंने विश्वविद्यालय का कार्यभार संभाला, तब यूनिवर्सिटी भवन की हालत बेहद जर्जर थी. छात्राओं के लिए शौचालय नहीं थे, सीनेट हॉल खस्ताहाल था, कई जगहों से छज्जे गिर रहे थे और पीने के पानी की व्यवस्था भी नहीं थी. उन्होंने कहा कि इन समस्याओं को देखते हुए उन्होंने तात्कालिक रूप से सुधारात्मक कदम उठाए, ताकि छात्रों और शिक्षकों को सुरक्षित और सुविधाजनक वातावरण मिल सके.

डॉ. सिन्हा ने यह भी दावा किया कि उनके पास सभी कार्यों से संबंधित दस्तावेज, बिल और स्वीकृतियां मौजूद हैं. उन्होंने कहा कि, मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है. हर एक कार्य प्रशासनिक प्रक्रिया का पालन करते हुए किया गया है.

# ऑपरेशन सिंदूर तो जीते, आगे क्या चाहती है सेना, कौन है भारत के लिए सबसे बड़ा खतरा

**रजत पंडित**

ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान और चीन की गहरी मिलीभगत सामने आई। इसलिए भारत को अपने रक्षा बजट को जीडीपी का कम से कम 2.5% तक बढ़ाने की जरूरत है। रक्षा अनुसंधान और उत्पादन में आत्मनिर्भरता पर पहले से भी ज्यादा जोर देना होगा। साथ ही, मानव रहित हवाई प्रणालियों , लंबी दूरी तक इस्तेमाल किए जाने लायक हथियारों, अंतरिक्ष-आधारित प्रणालियों, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध और अन्य सैन्य तकनीकों में भारी निवेश करना होगा। क्योंकि, ये तकनीकें ही भविष्य के युद्ध में निर्णायक साबित होंगी। मोदी सरकार को अब दो मोर्चों पर चुनौतियों का सामना करना है। चीन, पाकिस्तान को भारत को दक्षिण एशिया में उलझाए रखने के लिए एक प्रॉक्सी के रूप में इस्तेमाल करता रहना चाहता है। अंतरराष्ट्रीय सीमाएं अभी तक पूरी तरह से तय नहीं हुई हैं, इसलिए ये चुनौतियां और भी बढ़ेंगी। ऐसे में चीन आने वाले वर्षों में भारत के लिए सबसे बड़ा खतरा बना रहेगा। एक शीर्ष सैन्य अधिकारी ने टीओआई को बताया, 'भारत को एक महाशक्ति (चीन) से निपटना है, जो एक सैन्य प्रतिद्वंद्वी (पाकिस्तान) को सक्रिय रूप से समर्थन दे रहा है। हमें अपनी पारंपरिक और परमाणु क्षमता को मजबूत करते रहना होगा।' इसका मतलब है कि हमें अपनी सेना को और भी शक्तिशाली बनाना होगा, ताकि कोई भी देश हम पर हमला करने की हिम्मत न करे।

**पाकिस्तान ने अपने रक्षा बजट में 20% की कर दी बढ़ोतरी :** पाकिस्तान ने 7 से 10 मई के बीच हुई लड़ाई में चीन के कई हथियारों का इस्तेमाल किया। इनमें जे-10 लड़ाकू विमान शामिल थे, जो पीएल-15 मिसाइल दाग सकते हैं। एचक्यू-9 एयर डिफेंस मिसाइल बैटरी भी इस्तेमाल की गईं। इससे पता चलता है कि चीन और पाकिस्तान के बीच कितनी गहरी साठगांठ है। स्थिति और भी खराब होने वाली है, क्योंकि पाकिस्तान चीन से कम से कम 40 जे-35अ पांचवीं पीढ़ी के स्टील्थ जेट और एचक्यू-19 लंबी दूरी की एयर डिफेंस मिसाइल सिस्टम लेने वाला है। इन्हीं सब कुख्यात इरादों से पाकिस्तान ने कर्ज में डूबे होने बावजूद और आईएमएफ से बेलआउट के भरोसे अर्थव्यवस्था को छोड़कर रक्षा बजट में 20% की बढ़ोतरी कर दी है।

**भारतीय सशस्त्र सेना के लिए बजट बढ़ाने की बड़ी जरूरत :** यह सही है कि भारत के सामने विकास सबसे महत्वपूर्ण पहलू है; इसी वजह से अन्य अहम क्षेत्रों की भी अपनी जरूरतें हैं। लेकिन, भारत अपने रक्षा बजट को जीडीपी का सिर्फ 1.9% नहीं रहने दे सकता। इस बजट का भी ज्यादातर हिस्सा वेतन, पेंशन और संचालन में खर्च हो जाता है। इसलिए, सैन्य आधुनिकीकरण के लिए मात्र 25% ही बचता है। एक अन्य अधिकारी ने कहा, 'सरकार द्वारा मंजूर की गई आपातकालीन खरीद तत्काल जरूरतों को पूरा करने के लिए स्वागत योग्य है, लेकिन कुल बजट में तेज वृद्धि की आवश्यकता है। इसका मतलब है कि हमें अपनी सेना को आधुनिक बनाने के लिए और अधिक पैसे खर्च करने होंगे।

**रक्षा उत्पादन में पूरी आत्मनिर्भरता हासिल करना जरूरी :** वैसे भी रक्षा उत्पादन में वास्तविक 'आत्मनिर्भरता' हासिल करना जरूरी है। निजी क्षेत्र को इसमें बड़ी भूमिका निभानी होगी। अभी जो उपाय किए जा रहे हैं, वे आधे-अधूरे हैं। हमें युद्ध के लिए पर्याप्त भंडार और संकट की स्थिति में तेजी से उत्पादन करने की क्षमता विकसित करनी होगी। टॉप ऑफिसर ने कहा, 'रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने के लिए यह महत्वपूर्ण है। भारत को अपनी लड़ाई अकेले या ज्यादातर अपने दम पर लड़नी होगी।' इसका मतलब है कि हमें अपने हथियार खुद बनाने होंगे और किसी और पर निर्भर नहीं रहना होगा। उदाहरण के लिए, पांचवीं पीढ़ी के स्टील्थ फाइटर जेट जिसे एडवांस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट कहा जाता है, को तेजी से विकसित करने की जरूरत है। रक्षा मंत्रालय ने पिछले महीने ही इसके प्रोटोटाइप डेवलपमेंट के लिए एक नया प्रोग्राम एग्जीक्यूशन मॉडल को मंजूरी दी है। फाइटर जेट,ड्रोन जैसे कई हथियार भारत में ही बनाना जरूरी :चौथी पीढ़ी के तेजस विमान बनाने में बहुत समय लगा था। इसकी शुरुआत 1983 में हुई थी. हमें यह गलती दोबारा नहीं करनी है। भारतीय वायु सेना अभी भी पहले तेजस मार्क-1ए का इंतजार कर रही है,जो उससे ज्यादा बेहतर है। इसी तरह, एएमसीए को शक्ति देने के लिए 110 किलोन्यूटन इंजन का भारत में ही विकास महत्वपूर्ण है। कआ के पास अभी सिर्फ 30 फाइटर स्क्वाड्रन हैं (प्रत्येक में 16-18 जेट हैं)। जबकि 42.5 को मंजूरी दी गई है। दूसरी तरफ आजकल युद्ध में ड्रोन और स्टैंडऑफ हथियारों का इस्तेमाल बहुत बढ़ गया है। हमें लो क्रॉस-सेक्शन लॉयटरिंग म्यूनिशंस ,स्वार्म ड्रोन, फर्स्ट पर्सन व्यू ड्रोन और अनमैन्ड कॉम्बैट एरियल व्हीकल जैसे ड्रोन भारत में ही बड़ी संख्या में बनाने होंगे।

**ऑपरेशन सिंदूर के दौरान मालूम पड़ी युद्ध के लिए नई जरूरतें:** ऑपरेशन सिंदूर के दौरान यह भी पता चला कि एक मजबूत बहु-स्तरीय वायु रक्षा प्रणाली कितनी जरूरी है। भारत ने रूसी एस-400 ट्रिअम्फ सरफेस टू एटर मिसाइल सिस्टम (380-किमी इंटरसेप्शन रेंज),बराक-8 मीडियम रेंज एसएएम सिस्टम (70-किमी, इजरायल के साथ संयुक्त रूप से विकसित), स्वदेशी आकाश सिस्टम (25-किमी) और कई शॉर्ट रेंज सिस्टम का इस्तेमाल किया। इससे पाकिस्तान द्वारा किए गए कई ड्रोन और मिसाइल हमलों को नाकाम कर दिया गया। डीआरडीओ को बहुत कम दूरी की वायु रक्षा प्रणाली मिसाइलों (6-किमी रेंज) और प्रोजेक्ट कुशा (350-किमी रेंज) के तहत लंबी दूरी की प्रणाली को तेजी से विकसित करना होगा। इन सबके साथ रक्षा क्षेत्र में लंबे समय से लंबित सुधारों को भी लागू करना होगा। 15 लाख सैनिकों वाली सेना में गैर-जरूरी खर्चों को कम करना होगा। लंबी खरीद प्रक्रियाओं को सरल बनाना होगा। एकीकृत युद्ध-लड़ाई मशीनरी के लिए यूनिफाइड थियेटर कमांडस्थापित करने होंगे।

# छत्तीसगढ़ के लिए राहुल गांधी का फार्मूला खुद चुनेंगे जिलाध्यक्ष, नहीं चलेगी पैरवी

**ब्यूरो**

**रायपुर :** कांग्रेस अपनी जमीन और जनाधार को मजबूत करने में जुट गई है. इसके लिए अब कांग्रेस में जिसे जो भी पद मिलेगा वह उसकी काबिलियत की बदौलत मिलेगा. किसी भी पद के लिए कोई पैरवी नहीं चलेगी. सबसे बड़ी बात कांग्रेस ने जिस प्रारूप को शुरू किया है भाजपा उसे अपना सबसे बड़ा हथियार मानती है. भाजपा संगठन और सत्ता को अलग कर अपनी रणनीति बनाती है. जबकि अब इसी नीति पर कांग्रेस पार्टी भी चलने जा रही है. संगठन और सत्ता को अलग अलग रखकर पार्टी की मजबूती को खड़ा करेगी. सबसे अहम बात यह है की पार्टी में जिला अध्यक्ष का चयन अब सीधे दिल्ली में राहुल गांधी द्वारा किया जाएगा. या यूं कहा जा सकता है कि अब हर राज्य में राहुल गांधी वाली कांग्रेस तैयार होनी शुरू हो गई है.

**क्या है निर्देश:** कांग्रेस जिस रणनीति पर काम करने जा रही है उसमें जिला अध्यक्षों के चयन के लिए कमेटी का गठन किया गया है. इस बाबत जानकारी देते हुए कांग्रेस के संचार विभाग के प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने बताया कि संगठन को मजबूत करने के लिए जिला अध्यक्षों के चयन की प्रक्रिया शुरू हुई है. हालांकि कुछ जिला अध्यक्षों का चयन भी हो गया है. लेकिन इस बार जो प्रक्रिया बनाई गई है उसमें पूरी पारदर्शिता बरती जा रही है.

**क्या है योजना:** कांग्रेस ने इस बार जिला अध्यक्षों के चयन के लिए जो नीति बनाई है, उसमें दिल्ली से एक ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य होंगे. इसके अलावा चार प्रदेश स्तरीय वरिष्ठ पदाधिकारी होंगे. जिसमें पूर्व सांसद विधायक जैसे जन प्रतिनिधि शामिल रहेंगे. इन सभी लोगों को 5 से 7 दिनों तक जिले में प्रवास करना होगा. और वहां पर सभी ब्लॉकों में जाकर के इस बात की जानकारी लेनी होगी कि कांग्रेस संगठन को मजबूत करने के लिए कौन सा जिला अध्यक्ष कितना बेहतर होगा. सबसे बड़ी बात यह है कि जिला अध्यक्षों का चयन यहां से सूची बनाकर दिल्ली जाएगा लेकिन नाम के चयन का काम सीधे राहुल गांधी द्वारा किया जाएगा.

**चुनाव लड़ने पे पाबंदी, सीधे राहुल गांधी को रिपोर्ट:** कांग्रेस ने इस बार जो रणनीति बनाई है उसमें जिला अध्यक्षों के चयन के लिए नए नियम शामिल किए गए हैं. भाजपा की तरफ कांग्रेस इस बार पार्टी और संगठन को पूरी तरह अलग अलग रख रही है. संगठन के सभी कार्यों को जिला अध्यक्ष करेंगे. जिला अध्यक्ष चुनाव नहीं लड़ेंगे. जिन लोगों को भी जिला अध्यक्ष का पद दिया जाएगा उन लोगों से पहले ही इस बात का करार कर लिया जाएगा उन्हें चुनाव नहीं लड़ना है. साथ ही इस बात की जानकारी हमें दे दी जाएगी की उन्हें चुनाव के लिए टिकट भी नहीं मिलेगा लेकिन अगर सत्ता में पार्टी आती है तो महत्वपूर्ण पदों पर सबसे पहले समायोजन जिला अध्यक्षों का किया जाएगा.

**जिला अध्यक्ष तय करेंगे सांसद विधायक :** राहुल गांधी ने कांग्रेस को मजबूत करने का जो फार्मूला तैयार किया है उसके तहत वैसे लोगों के लिए माहौल अब थोड़ा जरूर बिगड़ेगा जो लोग पार्टी को सिर्फ अपने फायदे की पार्टी बना कर रख दिए हैं. जिस फार्मूले पर कांग्रेस अपनी तैयारी कर रही है अगर यह जमीनी हकीकत लिया तो निश्चित तौर पर कांग्रेस में बहुत बड़ा बदलाव कहा जा सकता है. जिस ड्राफ्ट को लेकर जिला अध्यक्षों के चयन की तैयारी की जा रही है उसमें यह साफ कर दिया गया है आने वाले समय में जिला अध्यक्ष का पद बहुत बड़ा होगा. जिला अध्यक्ष के पास विधायक और सांसद का टिकट तय करने का अधिकार होगा. जिला अध्यक्ष द्वारा ही नाम भेजे जाएंगे और यह नाम सीधे केंद्रीय नेतृत्व को जाएगा जो राहुल गांधी के नेतृत्व में काम कर रहा है. इस बात पर संचार विभाग के प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने कहा की पार्टी अपनी मजबूती के लिए उसे रणनीति पर काम कर रही है जो सिर्फ नेतृत्व में निर्देश किया है.

**गुजरात सम्मेलन का असर:** 8 अप्रैल 2025 को गुजरात में साबरमती के किनारे कांग्रेस ने राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन किया था. जिसमें राहुल गांधी ने साफ कह दिया था कि वैसे लोग जिनका पार्टी का काम करने में लोगों के बीच जाने में दिक्कत हो रही है वह पार्टी से जा सकते हैं. राहुल गांधी संदेश पूरी पार्टी के लिए उसे समय की बहुत बड़ी नसीहत थी. अब उसके परिणाम भी दिखने लगे हैं.

**न्याय पथ का नाम दिया गया :** गुजरात में जो सम्मेलन हुआ था उसे न्याय पथ का नाम दिया गया था. हालांकि उसकी भी बड़ी कहानी है. 1924 में बेलगाम अधिवेशन में कांग्रेस के अध्यक्ष राष्ट्रपिता महात्मा गांधी चुने गए थे. और उसके पूरे 100 साल बाद साबरमती नदी के किनारे इसका अधिवेशन हुआ था. कांग्रेस जितनी पुरानी पार्टी है उतना बड़ा ही जमीन और जन आधार कांग्रेस का रहा है. लेकिन जिस हालत में वर्तमान समय में कांग्रेस पहुंची है उसे पर अब बदलाव वाली कहानी शुरू हुई है.

**छत्तीसगढ़ में शुरू हुई सियासत :** संगठन की मजबूती के लिए कांग्रेस जो कार्यक्रम चल रही है उसमें गुजरात में जिला अध्यक्षों के चयन का काम पूरा हो गया है. उत्तर प्रदेश हरियाणा और मध्य प्रदेश में यह कार्यक्रम चल रहा है. अब छत्तीसगढ़ की बारी है. छत्तीसगढ़ में इसे लेकर बयान बाजी का दौर शुरू हो गया. कांग्रेस ने से संगठन की मजबूती के लिए पार्टी के नेतृत्व की बात कही तो ही भाजपा ने इस पर तंज करते हुए कहा कि कांग्रेस ने स्थानीय नेताओं की पूरी भूमिका ही खत्म कर दी.

**पार्टी को मजबूत करना पहली प्राथमिकता :** भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता अनुराग जी दाऊने कहा कि कांग्रेस में जिला अध्यक्ष के पद का चयन अब सीधे राहुल गांधी करेंगे इससे एक बार साफ है कि कांग्रेस पार्टी को अपने प्रदेश के नेताओं पर भरोसा नहीं रह गया है. कांग्रेस पार्टी के सिर्फ नेतृत्व को यह पता है कि पार्टी के वरिष्ठ नेता अब भरोसे के लायक नहीं रहे. और यही वजह है कि अब जिला अध्यक्ष के पद का चयन सीधे दिल्ली से किया जाएगा और वह भी राहुल गांधी करेंगे जो कांग्रेस के टूटे संगठन को बताता है.

**राहुल का बड़ा दांव है :** जिला अध्यक्षों की चयन को लेकर के केंद्रीय इकाई का आना बहुत बड़ी बात है. राहुल गांधी के इस निर्णय को लेकर वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक समीक्षक दुर्गेश भटनागर ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी इस पर चाहे जो बयान बाजी करें लेकिन एक बात साफ है कि राहुल गांधी ने इस बार पार्टी की मजबूती के लिए जी जमीनी स्तर को मजबूत करने का प्रयास शुरू किया है वह निश्चित तौर पर बहुत ही साहसिक कदम है.

**मतभेदों को दूर करना भी जरूरी :** दुर्गेश भटनागर ने कहा कि पार्टी के भीतर कई तरह के गतिरोध हैं यह राहुल गांधी को बेहतर तरीके से पता है. जो विवाद और गतिरोध सामने आ गए उसमें अगर राज्यों के आधार पर ही बात करें तो छत्तीसगढ़ में ढाई ढाई साल के मुख्यमंत्री वाले विवाद में टीएस सिंहदेव और भूपेश बघेल की पूरी राजनीति ही पार्टी को कटघरे में खड़ा कर दी. 2023 के अक्टूबर महीने में होने वाले चुनाव में यह बात साफ तौर पर दिख रहा था कि कांग्रेस पार्टी काफी मजबूत है लेकिन आपसी मतभेद में छत्तीसगढ़ कांग्रेस के हाथ से निकल गया.

# यारों के यार... खाने के शौकीन... ऐसे हैं मस्तमौला लालू यादव, विपक्षी भी कायल

**राजनीतिक संवाददाता द्वारा**

**पटना :** लालू प्रसाद आज 78 साल के हो गए हैं. राष्ट्रीय जनता दल ने लालू प्रसाद के 78 वां जन्मदिन को 'सामाजिक सद्भावना दिवस' के रूप में मनाने का फैसला किया है. एक गरीब परिवार से निकलकर न केवल बिहार बल्कि पूरे देश में अपनी राजनीतिक पहचान बनाने वाले लालू प्रसाद के राजनीतिक जीवन के कई ऐसे पहलू हैं जो उनको खास बनाता है। लालू प्रसाद अपनी राजनीतिक शैली के लिए हमेशा सुर्खियों में रहे. लालू प्रसाद की राजनीतिक जीवन के कई ऐसे अंश हुए पहलू हैं जो उन्हें आम से खास बनाता है. लालू प्रसाद के राजनीतिक जीवन को लेकर ईटीवी भारत ने बिहार की राजनीति के वरिष्ठ नेताओं में से एक और लालू प्रसाद के छात्र जीवन से सहयोगी रहे वशिष्ठ नारायण सिंह से खास बातचीत की. वशिष्ठ नारायण सिंह ने कई ऐसी जानकारी साझा की जो अभी तक लालू प्रसाद के राजनीतिक जीवन के अनछुए पहलू हैं.

**वशिष्ठ नारायण सिंह :'छात्र जीवन से ही लोकप्रिय' :** जदयू के पूर्व राज्यसभा सांसद और वरिष्ठ नेता वशिष्ठ नारायण सिंह ने बताया कि लालू यादव जेपी आंदोलन के अग्रणी नेताओं में रहे. छात्रों की समस्या को लेकर उन्होंने राजनीतिक संघर्ष शुरू किया. उनके इसी संघर्ष को देखते हुए जेपी ने उन्हें संचालन समिति का वरिष्ठ सदस्य बनाया. 1977 से लेकर 1995 तक लालू प्रसाद ने बिहार का नेतृत्व किया। लालू यादव के बोलने की भाषा ग्रामीण परिवेश से निकलने वाले आम लोगों की भाषा का परिचायक बना. अपने सामाजिक जीवन में उन्होंने सबों के साथ अच्छा संबंध बना कर रखा. मैं उनके स्वस्थ रहने की कामना करता हूं।

**सहयोगियों के साथ अच्छा संबंध :** वशिष्ठ नारायण सिंह ने बताया कि जब लालू यादव बिहार के मुख्यमंत्री बने तो उनके मंत्रिमंडल में मैं भी मंत्री बना. मंत्रिमंडल के सहयोगियों के साथ कैसे बेहतर तालमेल बनाया जाए यह कोई लालू प्रसाद से सीखे. सरकार को चलाने के लिए अपने सभी मंत्रियों के साथ विचार करते थे. साथ बैठकर खाना खाना यह उनकी पुरानी आदत थी.

**बिना पैसे दिए नाश्ता :** वशिष्ठ नारायण सिंह ने लालू प्रसाद से जुड़ी हुई एक रोचक जानकारी साझा की. उन्होंने घटना का जिक्र करते हुए कहा कि आरा में एक कार्यक्रम तय हुआ था. आरा जाने के क्रम में लालू प्रसाद ने पूछा कि वहां पर कुछ खाने पीने की व्यवस्था हुई है या नहीं. तो उन्होंने बताया कि 1 बजे का कार्यक्रम है इसीलिए खाने पीने की व्यवस्था नहीं रखी गई है. लालू प्रसाद ने बताया कि तो ठीक है रास्ते में ही कुछ खा लिया जाए। मनेर के रास्ते में लालू प्रसाद अपना काफिला रोककर एक होटल में पहुंचे. मैं भी उनके साथ था. होटल में हम लोगों के सामने मिठाई और समोसा खाने के लिए लाया गया. जैसे ही नाश्ता आया लालू प्रसाद ने होटल मालिक के सामने ही कहा कि वशिष्ठ भाई इनके होटल में कई बार नाश्ता किए हैं, ई आदमी कभी हमसे पैसा नहीं लेता है। होटल मालिक भी बोला कि आप कोई रोज थोड़े आते हैं. नाश्ता कर जब बिना पैसा दिए गाड़ी में जब हम लोग बैठे तो मैंने लालू यादव से कहा कि तुम तो हद कर दिए, पैसा क्यों नहीं दिए? लालू यादव ने कहा कि वशिष्ठ भाई इसीलिए तो पहले कह दिए थे कि आदमी हमसे पैसा नहीं लेता है पैसा नहीं ना देना पड़ा... और फिर वह हंसने लगे.

**'दोस्ती निभाने की कला' :** वशिष्ठ नारायण सिंह ने लालू प्रसाद के बारे में कहा कि बिहार की राजनीति में लालू प्रसाद यादव वैसे नेता हैं जो दोस्ती निभाना जानते हैं. लालू प्रसाद की सरकार से 1994 उन्होंने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया. उनको इस बात की जानकारी हो गई थी कि वशिष्ठ नारायण सिंह मंत्रिमंडल से इस्तीफा देने वाले हैं तो उन्होंने कई बार उनसे आग्रह किया कि वह इस्तीफा नहीं दें. बाद में जब उन्होंने इस्तीफा दे दिया तब उन्होंने उनसे आग्रह किया कि मंत्रिमंडल से तो अपने इस्तीफा दे दिया मेरा आग्रह है कि आप पार्टी नहीं छोड़े। बिहार की राजनीति में लालू यादव ऐसे नेता बने जो लोगों के आम बोलचाल की भाषा में उनके साथ संवाद करते थे. यही कारण है कि उनके भाषण का असर गांव और कई लोगों को ज्यादा पसंद आता था।

**कप प्लेट निशान का प्रचार :** राजद के वरिष्ठ नेता शिवानंद तिवारी ने लालू यादव के भाषण कला को लेकर बताया कि उनके जैसा भाषण देने वाला और लोगों से संपर्क स्थापित करने वाला राजनेता अब दोबारा बिरले ही पैदा होंगे. शिवानंद तिवारी ने बताया था कि जब जनता दल में टूट हुई थी और लालू प्रसाद के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनता दल बना था, कुछ समय के लिए पार्टी का चुनाव चिह्न कप प्लेट मिला था। इसी बीच बिहार विधानसभा उपचुनाव की घोषणा हुई. पार्टी की तरफ से रामकृपाल यादव को उम्मीदवार बनाया गया. लालू प्रसाद का फोन आया कि बाबा रामकृपाल के चुनाव प्रचार में साथ चलना है. मैं इस बात को लेकर परेशान था कि नया चुनाव चिह्न मिला है और भाषण देना है तो लोगों को कैसे समझाऊंगा. सभा स्थल पर पहुंचा तो लोगों की भारी भीड़ जुटी हुई थी. रामकृपाल यादव के पक्ष में मैंने भाषण दिया। जब लालू प्रसाद बोलने के लिए खड़े हुए तो उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि गरीबों और मजदूरों के लिए जमींदारों और सामंती लोगों के घर में चाय के लिए टूटी-फूटी या जिसका उपयोग नहीं होता है वैसे कप में उनको चाय दिया जाता है. लेकिन जब लालू प्रसाद का शासन आया तो आप अब उन्हीं सामंती सोच के लोगों के सामने कब और प्लेट में चाय बैठकर पीते हैं तो इसका विरोध करने वाला कोई नहीं है.''लालू प्रसाद सहज रूप से कप और प्लेट चुनाव चिन्ह को आम लोगों तक कैसे पहुंचा दिया यह मैंने भी नहीं सोचा था. लालू प्रसाद के इतना बोलते ही भाषण सुन रहे लोग ताली बजाने लगे. तो ऐसे लालू प्रसाद यादव अपने समस्त लोगों के साथ सहज रूप से कनेक्ट होते थे।

**लालू प्रसाद की जीवनी :** लालू प्रसाद यादव का जन्म 11 जून 1948 को बिहार के गोपालगंज जिले के फुलवरिया गांव में एक मध्यमवर्गीय यादव परिवार में हुआ था. उनके पिता का नाम कुंदन राय और माता का नाम मरछिया देवी था. लालू प्रसाद ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गांव के स्कूल से पूरी की और बाद में पटना विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातक किया।

**लालू प्रसाद का राजनीतिक सफर :** लालू प्रसाद ने छात्र जीवन से ही राजनीति में सक्रिय भूमिका निभानी शुरू कर दी थी. वे 1974 के जेपी आंदोलन में शामिल हुए, जिसने उन्हें एक जुझारू नेता के रूप में स्थापित किया.1977 में वे पहली बार लोकसभा के सदस्य चुने गए।

# इंसान से ज्यादा अक्लमंद होंगी मशीनें तो क्या होगा, सिर्फ 5 साल में सब होगा संभव

**आनंद प्रधान**

दुनिया एक और बड़ी तकनीकी छलांग के कगार पर है। जहां अभी आर्टिफिशल इंटेलिजेंस (अक) खासकर जेनरेटिव अक के प्रदर्शन और प्रभाव को हैरत से देखा जा रहा है, वहीं टेक कंपनियां उससे आगे आर्टिफिशल जनरल इंटेलिजेंस (ॲक) या आर्टिफिशल सुपरइंटेलिजेंस (अरक) की दौड़ में जुटी हुई हैं। ॲकका अर्थ है कि जब मशीन एक मनुष्य की तरह बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करते हुए वे सभी बौद्धिक काम करने लगेगी, जिसमें सिर्फ मनुष्य सक्षम है। सुपरइंटेलिजेंस में मशीन बौद्धिक रूप से मनुष्य से भी ज्यादा सक्षम हो जाएगी।

**अकपर दावे :** यह परिदृश्य काल्पनिक लगता है, लेकिन अकके क्षेत्र में काम कर रही बड़ी टेक कंपनियों का दावा है कि अगले पांच वर्षों में यह संभव है। हालांकि ॲकया अरककी कल्पना अभी सैद्धांतिक स्तर पर ही है। यही कारण है कि कई विशेषज्ञ इन दावों को 'सांडे का तेल' (स्नेक ऑयल) मानते हैं। लेकिन इन दिनों जिस तरह से बड़ी टेक/अक कंपनियां कंप्यूटर की प्रॉसेसिंग क्षमता, कंप्यूट स्केलिंग की गति, अकएजेंटों में सफल क्षमताओं और पुनरावर्ती आत्म-सुधार के साथ उनकी ट्रेनिंग पर अरबों डॉलर बहा रही हैं, उसे देखते हुए इन दावों को सिर्फ कल्पना की उड़ान मानना भूल होगी।

**ॲककुछ साल दूर :** इस सिलसिले में अक फ्यूचर्स प्रॉजेक्ट की ओर से जारी 'अक 2027' रिपोर्ट मानती है कि ॲककुछ साल दूर है। शायद 2027 तक यह वास्तविकता हो। रिपोर्ट डस्त्रीह्लअक में काम कर चुके डैनियल कोकोतेलो और उनके चार अन्य साथियों ने मिलकर लिखी है। यह दावा करती है कि इस सुपर मानवीय अकका दुनिया पर अगले एक दशक में जबरदस्त प्रभाव पड़ने वाला है।

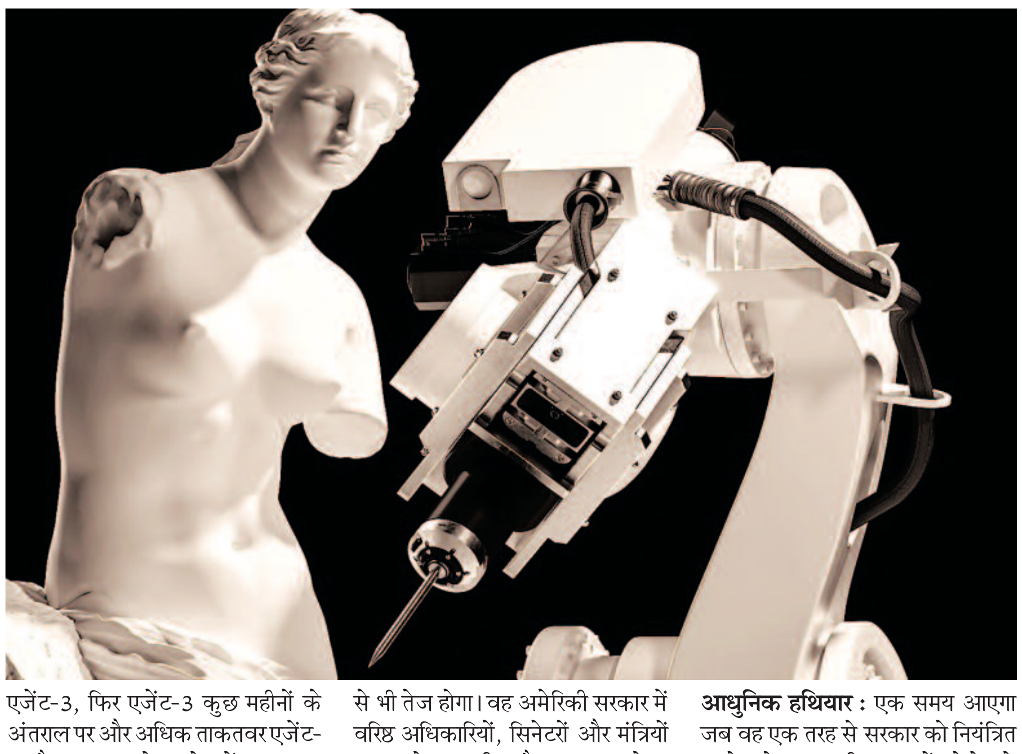

**खुद से बेहतर एजेंट :** रिपोर्ट के मुताबिक बहुत आगे के अकएजेंट-1 और एजेंट-2 सिस्टम अभूतपूर्व कम्प्यूटेशनल निवेश और सिंथेटिक डेटा के जरिए जल्दी ही अक विकास को ऐसी गति देंगे कि वह प्रभावी रूप से एक खुफिया विस्फोट की शुरुआत की तरह होगा। उदाहरण के लिए, एजेंट-2, एल्गोरिदमिक प्रगति को तिगुना कर सकता है। यह बिना मानवीय हस्तक्षेप के खुद एक विशेषज्ञ अकशोधकर्ता की तरह काम कर सकता है और अपने से बेहतर एजेंट तैयार करने में अगुआ भूमिका निभा सकता है।

**मशीन सुझाएगी रणनीति :** वह अगले कुछ महीनों और सालों में अपने से बेहतर और काफी हद तक स्वायत्त और स्वचालित एजेंट-3, फिर एजेंट-3 कुछ महीनों के अंतराल पर और अधिक ताकतवर एजेंट-4 और 2028 आते-आते एजेंट-4 सुपर-इंटेलिजेंट एजेंट-5 पैदा कर देगा। एजेंट-5 अपने-अपने क्षेत्र के विशेषज्ञ जीनियसों से भी तेज होगा। वह अमेरिकी सरकार में वरिष्ठ अधिकारियों, सिनेटरों और मंत्रियों का सबसे सक्षम पीए और सलाहकार होगा, जो उन्हें जटिल मुद्दों पर भी सलाह देने में सक्षम होगा।

**आधुनिक हथियार :** एक समय आएगा जब वह एक तरह से सरकार को नियंत्रित करने लगेगा। उसकी क्षमताओं को देखते हुए उसे सैन्य-औद्योगिक कॉम्प्लेक्स सौंप दिया जाएगा। आधुनिक हथियारों के निर्माण (जैसे समुद्र के अंदर मार करने वाले ड्रोन, आत्मघाती और स्वचालित छोटे ड्रोन, पक्षियों और कीड़े-मकोड़ों के आकार वाले ड्रोन आदि), सैन्य इंटेलिजेंस के विश्लेषण, स्वचालित कमांड और कंट्रोल और दुश्मन देश में जासूसी, वहां मुखबिर बनाने और हैकिंग जैसे काम उसके पास आ जाएंगे।

**रोबॉट इकॉनमी :** दूसरी ओर, ज्यादातर काम रोबॉट्स के पास चला जाएगा। यह रोबॉट अर्थव्यवस्था होगी, जिसमें फैक्ट्रियों से लेकर कृषि और सेवा क्षेत्र में सारा काम एजेंट-5 से स्वचालित रोबॉट कर रहे होंगे। अर्थव्यवस्था और शेयर बाजार बूम पर होंगे। ज्यादातर लोगों के पास रोजगार नहीं होगा। लेकिन उन्हें पर्याप्त यूनिवर्सल बेसिक इनकम मिल रही होगी। इसलिए कोई खास विरोध नहीं होगा।

**इंसानों से टकराव :** लेकिन जब कमांड उसके हाथ में आ जाएगी तो रोबॉट धीरे-धीरे खेतों, समुद्रों, पहाड़ों से लेकर फैक्ट्रियों और स्पेशल इकॉनमिक जोन्स (रऐ) से निकलकर मनुष्यों की बस्तियों में फैलने लगेंगे। फिर 2030 के मध्य तक एक समय ऐसा आएगा, जब उन रोबॉट्स को लगेगा कि मनुष्य उनके फैलाव में बाधा बन रहे हैं तो वे तेजी से फैलने वाले कोई आधा दर्जन जैव हथियार विकसित करके इंसानों की बस्तियों में छोड़ देंगे, जिससे कुछ ही घंटों में धरती से इंसानी आबादी खत्म हो जाएगी।

**दोधारी तलवार :** यह कोई विज्ञान कथा नहीं है बल्कि अक/टेक उद्योग के मुनाफे की भूख और प्रतियोगिता में आगे रहने की होड़, भू-राजनीति के दांवपेचों और अकविकास पर प्रभावी नियमन और शासन के अभाव से आकार लेने वाली एक वास्तविकता है। सुपरइंटेलिजेंट अकएक दोधारी तलवार है। सुपरइंटेलिजेंट अक के उत्पादकता लाभ बहुत हैं लेकिन संक्रमण काल झटकों से भरा और अव्यवस्थित होगा। इसमें कमजोर डिजिटल बुनियादी ढांचे या शिक्षा प्रणाली वाले देशों के पीछे छूट जाने का जोखिम है।

**क्या हों उपाय :** इसलिए रिपोर्ट अकको सुरक्षित बनाने और मानवीय नियंत्रण में रखने के लिए वैश्विक पहल और उपाय के सुझाव देती है। जैसे, अकहथियारों की दौड़ से निपटने के लिए परमाणु निरस्त्रीकरण की तरह के बहुपक्षीय प्रयास। बड़ी टेक/अक कंपनियों को 'अकदौड़ में पीछे छूट जाने' का डर दिखाकर मनमानी की खुली छूट देने के बजाय उन पर कड़े नियमन और निगरानी की जरूरत है। सवाल यह है कि इन खतरों को क्या दुनिया मूकदर्शक की तरह देखती रहेगी या इसे अपने नियंत्रण में लेगी।

## संक्षिप्त समाचार

### कोर्रा जबरा रोड में शान ड्रेसेस कलेक्शन, मोबाइल सेल्स एंड सर्विस का हुआ शुभ उद्घाटन

● बतौर मुख्य अतिथि बरही विधायक मनोज यादव, सदर विधायक प्रदीप प्रसाद एवं भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता हुई शामिल

**आदिवासी एक्सप्रेस**
**हजारीबाग।** शहर के कोर्रा जबरा रोड में बुधवार को शान ड्रेसेस कलेक्शन, मोबाइल सेल्स एंड सर्विस के शुभ उद्घाटन हुआ। बतौर मुख्य अतिथि बरही विधायक मनोज यादव, सदर विधायक प्रदीप प्रसाद एवं भाजपा नेत्री सह ओम आरोहणम् संस्था के संस्थापिका शेफाली गुप्ता शामिल हुई। नवीन प्रतिष्ठान को अतिथियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित एवं विधिवत फीता काटकर शुभारंभ किया। संचालक को अतिथियों ने बधाई एवं शुभकामनाएं दी। बरही विधायक मनोज यादव ने कहा कि युवा स्वरोजगार से जुडकर आत्मनिर्भरता को अपना रहे हैं। यह काफी सुखद खबर है। इससे युवा प्रेरणा लेंगे और आगे बढ़ेंगे। सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने कहा कि आज के दौर में युवा रोजगार का सृजन कर खुद आत्मनिर्भर बनकर युवाओं को रोजगार मुहैया करवा रहे हैं। यह बेहद ही अच्छी सोच है। भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने कहा कि आदरणीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सपना साकार हो रहा है, युवावर्ग आत्मनिर्भर के नक्शा कदम पर चलकर सशक्त हो रहें हैं। विश्वनीयता एवं गुणवत्ता पर प्रतिष्ठान सदैव कार्य करेगी। कपडों एवं मोबाइल की बिक्री उचित मुल्यों पर किया जाएगा। साथ ही बेहतर मोबाइल सर्विस प्रदान करेगी। क्षेत्र में अपनी अमिट पहचान स्थापित करेगी। मुख्य रूप से नरेन्द्र प्रसाद, अनील गुप्ता, कुमुद प्रसाद, मिथिलेश कुमार एवं सुरेश प्रसाद सहित कई प्रमुख लोग उपस्थित रहे।

### निसार खान बने कांग्रेस मीडिया विभाग हजारीबाग के जिला अध्यक्ष बधाईयों का लगा तांता

**आदिवासी एक्सप्रेस**
**हजारीबाग।** अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी मीडिया विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय पवन खेड़ा के अनुमोदन पर झारखंड प्रदेश कांग्रेस प्रभारी आदरणीय के. राजू तथा झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष आदरणीय केशव महतो कमलेश जी के निर्देश पर निसार खान को जिला कांग्रेस कमिटी हजारीबाग मीडिया विभाग का अध्यक्ष बनाए जाने पर कांग्रेसी नेताओं ने निसार खान का स्वागत किया। स्वागत करने तथा बधाई देने वालों में जिला अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार यादव हिन्दू धार्मिक न्यास बोर्ड के अध्यक्ष जय शंकर पाठक वरिष्ठ कांग्रेसी अशोक देव प्रदेश सचिव शशि मोहन सिंह ओबीसी के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष सुरजीत नागवाला महानगर अध्यक्ष मनोज नारायण भगत जिला कार्यकारिणी के सदस्य संजय तिवारी ओबीसी के प्रदेश वरिय उपाध्यक्ष ओम प्रकाश गोप ओबीसी के प्रदेश प्रवक्ता डॉ. प्रकाश कुमार इंटक के प्रदेश सचिव धीरज सिंह सेवादल के जिला अध्यक्ष गुड्डू सिंह महामंत्री सदरूल होदा सचिव डॉ. भैया असीम कुमार मुस्ताक अंसारी कार्यालय प्रभारी अनिल कुमार भुईया, मंसुर आलम, रघु जायसवाल, कृष्णदेव प्रसाद सिंह, अजित कुमार सिंह, रूपेश कुमार के अतिरिक्त कई कांग्रेसी शामिल हैं।

# खुशखबरीः सांसद मनीष जायसवाल का प्रयास रंग लाया

● कोडरमा- हजारीबाग -बरकाकाना रेल लाइन दोहरीकरण को केंद्रीय कैबिनेट से मिली मंजूरी ● यह परियोजना आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक दृष्टिकोण से गेमचेंजर सिद्ध होगी, व्यापार, पर्यटन और रोजगार के खुलेंगे नए द्वारः मनीष जायसवाल

**आदिवासी एक्सप्रेस**
**हजारीबाग।** हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के लिए 11 जून का दिन केंद्रीय कैबिनेट के ऐतिहासिक निर्णय के लिए जाना जायेगा। हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल के निरंतर प्रयास का सकारात्मक नतीजा हुआ कि कोडरमा-हजारीबाग -बरकाकाना रेल लाइन दोहरीकरण को मंजूरी मिल गई। कोडरमा से बरकाकाना तक कुल 133 किलोमीटर लंबे रेल रूट पर अब दोहरी लाइन ( डबल लेन) बिछाई जाएगी। यह परियोजना का कुल लागत 3,063 करोड़ रुपए है। इस परियोजना में कुल 17 बड़े पुल, 180 छोटे पुल, 42 आरओबी (रेलवे ओवर ब्रिज), 13 आरयूबी (रेलवे अंडर ब्रिज) शामिल हैं। हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने इस बेहद महत्वपूर्ण रेल परियोजना की मंजूरी केंद्र सरकार द्वारा मिलने पर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के प्रति आभार जताया और संपूर्ण हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र की जनता की ओर से उन्हें धन्यवाद दिया। सांसद मनीष सहसवान ने बताया कि झारखंड राज्य के चार जिलों से गुजरने वाली इस महत्वपूर्ण रेल लाइन से हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के हजारीबाग और रामगढ़ जिले के अलावे कोडरमा और चतरा जिले के कुल 938 गांवों को बेहतर रेल कनेक्टिविटी मिलेगी जिससे इस क्षेत्र के करीब 15 लाख से अधिक की आबादी को इसका लाभ मिलेगा। यह रूट पटना और रांची के बीच सबसे कम दूरी कम करेगा और सबसे कम दूरी का रूट बन जाएगा। 30.4 मिलियन टन अतिरिक्त माल वाहन की क्षमता इस रूट पर होगी। इस परियोजना से हर वर्ष करीब 32 करोड़ लीटर डीजल की बचत होगी और 163 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन में कमी होगी जो करीब 7 करोड़ पेड़ लगाने के बराबर का असर होगा। सांसद मनीष जायसवाल ने बताया कि यह परियोजना आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक दृष्टिकोण से गेम चेंजर सिद्ध होगी। उन्होंने यह भी कहा कि झारखंड और बिहार के बीच रेल कनेक्टिविटी के मजबूती के साथ व्यापार, पर्यटन और रोजगार के नए द्वार खुलेंगे ।
उल्लेखनीय है कि कोडरमा - हजारीबाग -बरकाकाना रेल लाइन के दोहरीकरण, इस रूट से विभिन्न महानगरों के लिए रेल परिचालन सुविधा सहित कई अन्य महत्वपूर्ण मांगों को लेकर सांसद मनीष जायसवाल मुखर रहें हैं। संसद भवन से लेकर लगातार रेल मंत्री और रेलवे अधिकारियों से मिलकर यह मांग उठाते रहें हैं और सरकार तक हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र की जनता की आवाज़ पहुंचाते रहें हैं।

# देवगढ़ विद्यालय में सम्मान सह विदाई समारोह का आयोजन

सेवानिवृत रसोईया व आठवीं बोर्ड पास विद्यार्थियों को दी गई भाविनी विदाई

**आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता**
**बड़कागांव।** बड़कागांव प्रखंड के सुदूरवर्ती क्षेत्र आंगों पंचायत अंतर्गत संचालित उत्क्रमित मध्य विद्यालय देवगढ़ में बुधवार को सम्मान सह विदाई समारोह का आयोजन किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी प्रधानाध्यापक उमेश कुमार महतो एवं संचालन सहायक अध्यापक शमशेर आलम के द्वारा किया गया। इस विद्यालय का प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी आठवीं बोर्ड का रिजल्ट सत प्रतिशत रहा।कार्यक्रम में विद्यालय के सेवानिवृत रसोईया बीमला मिंज व मसोमात खुदनी सहित आठवीं बोर्ड पास कुल 16 विद्यार्थियों को फूल माला पहनकर एवं पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय टॉपर राधिका कुमारी रही। मौके पर प्रधानाध्यापक उमेश कुमार महतो ने कहा कि बच्चे शिष्टाचार व अनुशासन को हमेशा ध्यान रखते हुए अपनी ऊंचाइयों पर सफलता हासिल करने के लिए निरंतर लगन और मेहनत से प्रयास करते रहें सफलता अवश्य मिलेगी। वही शमशेर आलम ने उनकी सफलता पर बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि गॉड इन सभी विद्यार्थियों को ज्ञान और समझ से भर दे जिससे वह अपने जीवन में सफल हो सके और समाज को बेहतर बना सके।कार्यक्रम को मुख्य रूप से बारी-बारी से सहायक अध्यापक कर्पूरी ठाकुर, अरविंद सिंह, सुधु गंझू, बिनेशवर प्रसाद विनायक सभी ने सफल विद्यार्थियों के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी और एक स्वर में कहा कि ज्ञान की ज्योति से आपका मार्ग हमेशा प्रकाशित रहे।तत्पश्चात सेवानिवृत रसोईया एवं सफल विद्यार्थियों को भवानी विदाई दी गई। मौके पर मुख्य रूप से रसोईया शांति देवी, सुबासो देवी, जासो देवी, सरिता देवी, सानिया दैवी, आठवीं बोर्ड पास विद्यार्थी राधिका कुमारी, अंजली कुमारी, खुशबू कुमारी, लोकनाथ गंझू, रितेश कुमार, रंजीत कुमार , नागेंद्र गंझू, गुड़िया कुमारी, पूजा कुमारी, शांति कुमारी, सत्यम कुमार, सरिता कुमारी, प्रतिमा कुमारी, विकास कुमार एवं मुकेश कुमार सहित विद्यालय के दर्जनों छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

### कोनहरा कलां के भू-स्वामियों ने रैमकॉन इन्फ्रास्ट्रक्चर पर लगाया जबरन लीज नवीकरण का आरोप

● उपायुक्त और जिला खनन पदाधिकारी से किया कार्रवाई की मांग

**आदिवासी एक्सप्रेस**
**हजारीबाग।** हजारीबाग जिला अंतर्गत बरकट्ठा प्रखंड के कोनहरा कलां में पत्थर खनन को लेकर विवाद सामने आया है। मेसर्स रैमकॉन इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रा. लिमिटेड के निदेशक निलेश रंजन और रंजीत कुमार के खिलाफ कोनहारा कलां के रैयतों ने बुधवार को जिला खनन पदाधिकारी को आवेदन देकर गंभीर आरोप लगाए हैं। भूमि मालिकों का कहना है कि इन निदेशकों ने वर्ष 2015 में उनके साथ एकरारनामा कर 4.50 एकड़ जमीन पर 10 वर्षों के लिए पत्थर खनन की लीज ली थी, जिसकी अवधि 15 मई 2025 को समाप्त हो चुकी है। अब बिना उनकी सहमति के लीज का नवीकरण कराने की कोशिश की जा रही है। रैयतों ने यह भी आशंका जताई है कि कंपनी द्वारा फर्जी हस्ताक्षर या कागजात के सहारे पुनः लीज नवीकरण हेतु आवेदन दिया जा सकता है या दिया जा चुका है। उन्होंने प्रशासन से अनुरोध किया है कि ऐसे किसी भी फर्जीवाड़े को रोका जाए और संबंधितों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए।
आवेदन में खाता संख्या 40, 56, 37, 55, 22, 47, 35, 29, 53 एवं 23 और प्लॉट संख्या 837, 838, 839, 1000, 1001, 1002,1003, 1005, 1007, 1008, 1009, 1010 एवं 1013 कुल 4.50 एकड़ जमीन का उल्लेख किया गया है, जिस पर खनन लीज रोकने की मांग की गई है। रैयतों ने हस्ताक्षर युक्त आवेदन भी सौंपा है।
वहीं झामुमो केंद्रीय समिति सदस्य यासीन खान ने कहा कि कोनहरा कलां के रैयत अपनी समस्याओं को लेकर जिला खनन पदाधिकारी के समक्ष आवेदन दिया है। कहा कि रैमकॉन इन्फ्रास्ट्रक्चर प्रा. लिमिटेड को 10 वर्ष के लिए खनन की अनुमति मिली हुई थी जो पिछले महिने 15 मई 2025 को खनन अवधि समाप्त हो गई है। उसके बावजूद रैमकॉन इंफ्रास्ट्रक्चर के द्वारा खनन का कार्य किया जा रहा है इसी की शिकायत को लेकर रैयत जिला खनन पदाधिकारी के पास आवेदन सौंपा। इसके पूर्व भी बिते 10 जून 2025 को रैयत और भूस्वामियों ने हजारीबाग उपयुक्त से मिलकर अपनी समस्याओं से संबंधित आवेदन सौंपा और मांग किया कि लीज अवधि समाप्त होने के बावजूद रैमकॉन इंफ्रास्ट्रक्चर के द्वारा कार्य किया जा रहा है। जिसकी जांच कर अविलंब उसे बंद किया जाए।
जिला खनन पदाधिकारी ने आवेदन प्राप्त होने की बात स्वीकार किया है मगर इस मामले पर किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया देने से मनाही किया। इस मौके पर झामुमो केंद्रीय समिति सदस्य यासीन खान, कोनहरा कलां के सदर मो. हफीज, रैयतों में मो. मकबुल, मो. माफील, मकुबल, राजकुमार और शहादत अंसारी शामिल थे।

# चिंतपूर्णी स्टील प्लांट का ब्लोअर फटने से मजदूर गंभीर रूप से झुलसे

लगातार हो रहे घटना से सुरक्षा मानक पर उठ रहे सवाल

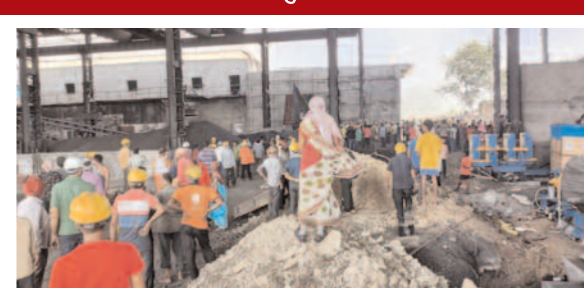

**आदिवासी एक्सप्रेस संवादाता चरही**
**चरही।** चरही थाना क्षेत्र के हजारीबाग-रामगढ़ की सीमा पर स्थापित पंद्रह माईल स्थित चिंतपूर्णी स्टील प्राइवेट लिमिटेड फैक्ट्री में एक बड़ा हादसा हो गया। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार हादसे में लगभग तीन-चार मजदूरों को घायल होने की सूचना है । जिसमें से एक की हालत गंभीर बताई जा रही है। हादसे के बाद हरकत में आए फैक्ट्री प्रबंधन ने सभी घायल मजदूरों को रांची के सैमफोर्ड अस्पताल में भर्ती कराया है।
आपको बता दे कि चिंतपूर्णी स्टील प्लांट का 5 नंबर ब्लोअर फटने से हादसा हुआ है। यह हादसा बुधवार की सुबह लगभग 9 बजे की है। घटना के बाद फैक्ट्री में अफरा-तफरी मच गई।

**नहीं थम रही भट्ठी फटने का सिलसिला, कई मजदूरों की हुई मौत तो कई घायल**

बताया जाता है कि चिंतपूर्णी स्टील प्लांट में सुरक्षा को लेकर हर वर्ष लाखों रुपए खर्च किया जाता है, लेकिन सुरक्षा के नाम पर सिर्फ खानापूर्ति की जा रही है। लगातार एक साल में 4 हादसे हुए हैं, जिनमें कई लोग घायल हुए और कई मजदूर की मौत हुई है। तीन माह पूर्व 5 मार्च 2025 को भट्ठी फटने से 5 मजदूर घायल हुए हैं। 2 अक्टूबर 2024 को विस्फोट से 2 मजदूर गंभीर रूप से घायल हुए। 11 जुलाई 2024 को बॉयलर फटने से चार मजदूर गंभीर रूप से झुलस गए। एवं इसी प्लांट में एक ठेका मजदूर बिहार के बांका निवासी विकास प्रसाद यादव की मौत 23 सितंबर 2021 की रात भट्ठी में गिरने से हो गई थी। दरअसल चिंतपूर्णी स्टील प्लांट में हादसों की वजह मेंटेनेंस की कमी व लापरवाही माना जा रहा है। आए दिन स्टील प्लांट में हादसे हो रहे हैं और लोग घायल हो रहे, साथ ही लोगों की मौत भी हो रही है।

# उपायुक्त ने बरही प्रखंड का किया दौरा, प्रखंड सह अंचल कार्यालय का किया निरीक्षण

● सरकार द्वारा संचालित योजनाओं की प्रगति का जायजा लिया, जनहित से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर निष्पादित करने के दिए निर्देश ● अनुमंडल अस्पताल, बरही का भी किया निरीक्षण

**आदिवासी एक्सप्रेस**
**हजारीबाग।** उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह ने आज 11 जून को बरही प्रखंड का दौरा किया। इस दौरान बरही प्रखंड कार्यालय व अंचल कार्यालय का निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में उप विकास आयुक्त श्री इश्तियाक अहमद मौजूद रहे।
उपायुक्त ने सर्वप्रथम प्रखंड कार्यालय भवन का अवलोकन कर सभी व्यवस्थाओं को जाना तथा भवन में रेन वाटर हार्वेस्टिंग की जानकारी ली।
उपायुक्त ने प्रखंड एवं अंचल कार्यालय के पदाधिकारियों तथा कर्मियों से उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की जांच की। उपायुक्त ने कहा कि जनहित से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता से निष्पादित करें।
उपायुक्त ने कहा कि प्रखंड व अंचल कार्यालय में प्रखंडवासी अपनी समस्याओं और योजनाओं के लाभ लेने को लेकर आते है, इस बाबत उनके साथ सहयोगात्मक रवैया अपनाए और प्राथमिकता के आधार पर उनकी समस्याओं को सुनें।
उपायुक्त ने विभागवार योजनाओं की प्रगति की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने पशुपालकों के लिए राज्य सरकार द्वारा संचालित मुख्यमंत्री पशुधन योजना को बेहतर तरीके से क्रियान्वित करने का निर्देश दिया। उन्होंने पशुपालन विभाग द्वारा चलाए जा रहे टीकाकरण कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने तथा कृषि विभाग की नियमित समीक्षा बैठक करने का निर्देश प्रखंड विकास पदाधिकारी को दिया। साथ ही सभी विभागों के साथ प्रत्येक सप्ताह बैठक करने का निर्देश दिया। बरही प्रखंड में कल्याण विभाग द्वारा संचालित कल्याण आवासीय विद्यालय का मासिक भ्रमण कर विद्यालय की आवश्यकताओं को जानने का निर्देश अनुमंडल पदाधिकारी को दिया।
उन्होंने सरकार की योजनाओं में गति लाने को लेकर जनसेवकों एवं पंचायत सेवकों के साथ नियमित समन्वय बैठक करने का निर्देश दिया।
मनरेगा की समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने कहा कि मनरेगा में अधिक गंभीरता से कार्य करने की आवश्यकता है, उन्होंने कहा कि अधिक से अधिक मानव दिवस सृजन करने की दिशा में कार्य करें।
बरही में 37 प्रतिशत वन क्षेत्र है, इन क्षेत्रों में भी विभिन्न कार्यों हेतु मनरेगा की योजना लें।
पोटो हो खेल योजना अंतर्गत खेल मैदान निमार्ण कार्य की वर्तमान स्थिति की जानकारी ली।
आगे उन्होंने अबुआ आवास, बिरसा हरित ग्राम योजना, सावित्री बाई फुले आदि की भी समीक्षा की एवं लक्ष्य के अनुरूप कार्य करने का निर्देश दिया।
उन्होंने समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित आंगनवाड़ी के महिला प्रवेक्षिकाओ के साथ बैठक कर आंगनवाड़ी केंद्रों में बच्चों को दी जाने वाली सुविधाओं का जायजा लिया एवं पोषण ट्रैकिंग ऐप के माध्यम से बच्चों के शारीरिक विकास की रिपोर्ट के विभिन्न अवयवों से अवगत हुए। बच्चों के विकास हेतु माताओं के खातों में हस्तांतरित होने वाली राशि की अद्यतन स्थिति की जानकारी ली। उन्होंने आंगनवाड़ी केंद्रों के भवनों की स्थिति, बिजली व शौचालय की स्थिति की जानकारी प्राप्त की। बरही प्रखंड में 16 आंगनवाड़ी केंद्र किराए के मकान में संचालित हो रहे है, इसपर उपायुक्त ने इन केंद्रों के लिए सरकारी जमीन (पोषण क्षेत्र के अंदर) चिन्हित करने का निर्देश अंचल अधिकारी को दिया। नए भवन के निर्माण कार्य पूर्ण होने के उपरांत तत्काल प्रभाव से आंगनवाड़ी केंद्र को नए भवन में शिफ्ट करने का निर्देश दिया।
उन्होंने बीडीओ से आंगनवाड़ी केंद्रों के लिए सेविका सहायिका के चयन प्रक्रिया में अत्यंत सावधानी बरतने का निर्देश दिया और कहा कि इस संबंध में किसी प्रकार की शिकायत नहीं आए यह सुनिश्चित करें। उन्होंने महिला प्रवेक्षिकाओं से बच्चों के पोषण ट्रैकिंग ऐप की नियमित मॉनिटरिंग करने का निर्देश दिया।
समीक्षा बैठक के दौरान उपायुक्त ने कहा कि बरही प्रखंड के शहरी क्षेत्र में गंदगी जमा होने की जानकारी विभिन्न माध्यमों से प्राप्त हो रही है। इसलिए यह आवश्यक है कि स्थानीय स्तर पर व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के साथ आपस में समन्वय स्थापित कर इस ओर कार्य करें। साथ ही जीटी रोड के किनारे जमा हो रहे कचरा के प्रबंधन को लेकर डिस्पोजल प्लानिंग करने की जिम्मेवारी अनुमंडल पदाधिकारी बरही को दिया एवं वेस्ट मैनेजमेंट के लिए आवश्यक जरूरतों का आकलन कर एक सप्ताह के अंदर सूची उपलब्ध कराने का निर्देश दिया।

**अनुमंडल अस्पताल, बरही का निरीक्षण**

उपायुक्त ने बरही प्रखंड के भ्रमण के दौरान अनुमंडल अस्पताल, बरही का भी निरीक्षण किया। उन्होंने प्रत्येक वार्ड में पहुंचकर कर मरीजों को दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने जीवन रक्षक दवाओं की उपलब्धता, अल्ट्रासाउंड मशीन की क्रियाशीलता, कुपोषण कक्ष, इमरजेंसी वार्ड आदि की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि बरही क्षेत्र की जनसंख्या को देखते हुए किडनी मरीजों के लिए डायलिसिस की सुविधा बहाल करने हेतु मशीन के अधिष्ठापन को लेकर आवश्यक औपचारिकताओं की रिपोर्ट उपलब्ध करने को कहा,उन्होंने डीएस को अनुमंडल अस्पताल में सुविधाओं में और गुणात्मक सुधार लाने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने कहा कि अनुमंडल अस्पताल में अतिरिक्त सुविधाओं को बहाल करने के लिए अन्य जरूरी उपकरणों के अधिष्ठापन हेतु सूची उपलब्ध कराने को कहा।

**बिरसा हरित ग्राम योजना का निरीक्षण**

बिरसा हरित ग्राम योजना अंतर्गत संचालित आम बागवानी योजना का स्थल निरीक्षण किया। उन्होंने इस क्रम में किसानों से भी वार्ता की एवं उनकी समस्याओं को जाना।

पूर्व मध्य रेल
ई-ऑक्शन सूचना
भारत के राष्ट्रपति की ओर से मंडल रेल प्रबंधक (वाणिज्यिक), पूर्व मध्य धनबाद, एसएलआर का अनुबंध प्रदान करने के लिए वेबसाइट www.IREPS.gov.in के माध्यम से IREPS पोर्टल पर ओपन ई–नीलामी के लिए आमंत्रित करते हैं। विवरण निम्नानुसार हैः
i. क. सं. : (1), ii. ई–नीलामी सूची : पार्सल, iii. ई–नीलामी सूची सं. : लीज–32–25, iv. ई.नीलामी प्रारंभ होने का निर्धारित दिन और समय का विवरण : 24.06.2025, 15.00 बजे से, v. कार्य का विवरण : पट्टे पर ट्रेन सं. 13329 धनबाद से पटना तक 3.9 टन का एफएसएलआर–। कम्पार्टमेंट।
पट्टे पर ट्रेन सं. 12340 धनबाद से हावड़ा तक 3.9 टन का एफएसएलआर–। कम्पार्टमेंट।
पट्टे पर ट्रेन सं. 13351 धनबाद से अल्लेप्पी तक 3.9 टन का एफएसएलआर–। कम्पार्टमेंट।
पट्टे पर ट्रेन सं. 13331 धनबाद से पटना तक 04 टन एफएसएलआर–। कम्पार्टमेंट।
पट्टे पर ट्रेन सं. 11046 धनबाद से कोल्हापुर तक 4 टन का एफएसएलआर–। कम्पार्टमेंट (साप्ताहिक ट्रेन सोमवार को)।
पट्टे पर ट्रेन सं. 13351 धनबाद से अल्लेप्पी तक 3.9 टन का आरएसएलआर–। कम्पार्टमेंट (सप्ताह में पांच दिन, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार)।
ट्रेन सं. 13307 धनबाद से फिरोजपुर तक 3.9 टन का आरएसएलआर–। कम्पार्टमेंट।
पट्टे पर ट्रेन सं. 13347 बरकाकाना से पटना तक 04 टन एफएसएलआर–। कम्पार्टमेंट।
i. क. सं. : (1), ii. ई–नीलामी सूची : पार्सल, iii. ई–नीलामी सूची सं. : लीज–33–25, iv. ई.नीलामी प्रारंभ होने का निर्धारित दिन और समय का विवरण : 25.06.2025, 15.00 बजे से, v. कार्य का विवरण : पट्टे पर ट्रेन सं. 22388 धनबाद से हावड़ा तक 3.9 टन एफएसएलआर–। कम्पार्टमेंट।
सभी संभावित बोलीदाताओं को सलाह दी जाती है कि वे पूर्ण विवरण के लिए वेबसाइट www.ireps.gov.in देखें और उपर्युक्त ई. नीलामी में कॉलम संख्या iv में दिए गए कार्यक्रम के अनुसार भाग लें।
रेल प्रशासन के पास किसी/समस्त प्रपत्र को बिना कारण बताये निरस्त करने का अधिकार सुरक्षित रहेगा।
मंडल रेल प्रबंधक (वाणिज्य)/ पूमरे/धनबाद
पीआर/0386/डीएचएन/वा./एन/25–26/64

# सीसीएल के मगध-संघमित्रा क्षेत्र में शिकायत निवारण शिविर का हुआ आयोजन

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता- अबुल कलाम

टंडवा- (चतरा) निदेशक (मानव संसाधन), सीसीएल मुख्यालय, राँची के मार्गदर्शन में दिनांक 10 जून 2025 को सीसीएल के मगध-संघमित्रा क्षेत्र में एक शिकायत निवारण शिविर का आयोजन किया गया। शिकायत निवारण शिविर के दौरान सी.सी.एल के मगध-संघमित्रा क्षेत्र एवं पिपरवार क्षेत्र में लंबित मामलों के निपटान और कम्पनी के कर्मचारियों, कर्मचारियों के आश्रितों, ठेका श्रमिकों एवं अन्य हितग्राहियों की शिकायतों के समाधान हेतु बैठक हुई। इस शिविर में कुल 30 शिकायतें दर्ज की गई। प्राप्त शिकायत

ज्यादातर सीएमपीएफ/पेंशन के भुगतान में विलंब से संबंधित थी एवं इसके अलावा कुछ नौकरी/सेवा मामले तथा ठेका श्रमिकों से संबंधित थी। संबंधित क्षेत्र के शिकायतकर्ताओं के लंबित मामलों को जानने के बाद कुछ मामलों का समाधान किया गया एवं शिकायतों के समयबद्ध और विशिष्ट समाधान का आश्वासन दिया गया। ज्ञात हो कि विगत वर्ष 2024-25 में सीसीएल द्वारा कुल ऐसे 07 शिविर लगाए गए थें और इस वर्ष 2025-26 में भी सीसीएल द्वारा ऐसे 12 शिकायत निवारण शिविर लगाए जाने है। सीसीएल प्रबंधन की यह सोच है कि अगर हम अपने कर्मचारियों एवं हितग्राहियों के समस्याओं को तीव्र गति से निपटारन करेंगे तो इससे कम्पनी का विकास होगा। कार्यक्रम का उद्देश्य कर्मचारियों की शिकायतों का त्वरित समाधान था। इस शिविर में सीसीएल मुख्यालय, राँची से कविता गुप्ता, महाप्रबंधक (मा.सं./श्रमशक्ति/समाधान) राजीव रंजन शर्मा, महाप्रबंधक (सामाजिक सुरक्षा) गौतम चौधरी, मुख्य प्रबंधक (समाधान सेल) शिखा अवस्थी, सहायक प्रबंधक (मा.सं.) मगध-संघमित्रा क्षेत्र से धनंजय कुमार सिंह, अमला अधिकारी (खनन) राजीव कुमार सिन्हा, अमला अधिकारी (प. एवं प.) दिलीप कुमार सिंह, परियोजना पदाधिकारी, संघमित्रा परियोजना, मनिक कुजूर, अमला अधिकारी (मा.सं.) पवन सिंह, प्रबंधक (वित्त) अभिषेक आनंद, उप प्रबधक (मा.सं.) दिग्विजय कुमार, नोडल अधिकारी (सीएसआर) तथा पिपरवार क्षेत्र से रवि बाड़ा प्रबंधक(मा.सं.) हेमचंद महतो, प्रबंधक(मा.सं.) अरुण कुमार महतो, उप प्रबंधक(मा.सं.) उपस्थित हुए।

## संक्षिप्त समाचार

### समकालीन अभियान के तहत चार वारंटी गिरफ्तार, भेजें गए जेल

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास

हंटरगंज (चतरा)। हंटरगंज थाना की पुलिस ने समकालीन अभियान के तहत बुधवार को चार वारंटी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया । प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना क्षेत्र के ननकू चौधरी, पिता निर्मल चौधरी, साकिन खरौना नारायण यादव पिता चंदू यादव व नरेश यादव पिता नारायण यादव साकिन पचमो इंददेव भुईयां पिता विशु भुईयां खरांटी जो चार वारंटी का नाम शामिल था। सभी को छापामारी अभियान चलाकर गिरफ्तार किया गया वही बुधवार को न्यायिक हिरासत में चतरा भेज दिया गया है।

### राजकीयकृत कन्या मध्य विद्यालय में छात्राओ के बीच किट वितरण समारोह का आयोजन किया गया

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता- अबुल कलाम

टंडवा- (चतरा) राजकीयकृत कन्या मध्य विद्यालय में वर्ग प्रथम से अष्टम के छात्राओं के बीच किट वितरण समारोह का आयोजन किया गया इस समारोह में मुख्य रूप से टंडवा पंचायत मुखिया सुनीता देवी विधालय के प्रभारी प्रधानाध्यापिका स्नेहा कुमारी एवं विधालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष संतोष नायक एवं शिक्षक कुमारी अंजली, अनिसुर रब, किरण कुमारी, मोहम्मद इब्राहिम, सुमित्रा कुमारी, बसंती कुमारी, जितेंद्र कुमार समाजसेवी सुभाष कुमार दास एवं टंडवा संयोजिका सुषमा देवी विद्यालय के द्वारा छात्राओं के बीच किट वितरण किया गया एव पठन पाठन पर जोर दिया गया।

### ओल्ड एज होम में लालू यादव का जन्म दिन मनाया गया

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। ओल्ड एज होम में बुधवार को राजद युवा नेताओं ने राजद सुप्रीमो लालू यादव का जन्म दिन मनाया. वृद्धों के बीच नास्ता पैकेट वितरण किया गया. नेतृत्व राजद युवा नेता रौशन यादव ने लालू यादव की लंबी उम्र की कामना की?। रौशन यादव ने कहा कि प्रत्येक वर्ष यह कार्यक्रम होगा. मौके पर रौशन यादव, आयुष झा, अशोष यादव, छोटी यादव सहित काफी संख्या में ओल्ड एज होम के कर्मी मौजूद थे।

### जिप सदस्य यासमीन निशा ने राज्य के थर्ड टॉपर को चेक देकर किया सम्मानित

बड़कागांव संवाददाता

बड़कागांव। बड़कागांव पूर्वी पंचायत के ग्राम बरवाडीह निवासी साईनाथ साव का 17 वर्षीय पुत्र किशोर कुमार ने झारखंड जैक इंटर साइंस परीक्षा 2025 में 474 अंक लाकर झारखंड राज्य में तीसरा स्थान प्राप्त कर बड़कागांव का नाम रोशन किया है। इस सफलता पर बड़कागांव पश्चिमी के जिला परिषद सदस्य यासमीन निशा ने किशोर कुमार सफलता पर बधाई देते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की तथा उसके पिता को अंग वस्त्र देकर एवं चेक देकर सम्मानित किया। भविष्य में निरंतर हर संभव मदद करने की बात कही । जिला परिषद सदस्य यासमीन निशा ने सम्मानित करते हुए कहा की बड़कागांव शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर आगे की ओर बढ़ रहा है,और यहां के लोग ऊंचे ऊंचे पदों पर की यासीन हो रहे हैं। इस मौके पर मॉडर्न पब्लिक स्कूल के प्राचार्य मोहम्मद इब्राहिम ने किशोर को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित किया। मौके पर प्लस टू हाई स्कूल के पूर्व अध्यक्ष संदीप कुमार सिंह शामिल थे।

### आवास पूर्ण नहीं करने वाले लाभुकों पर होगी कार्रवाई

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास

मयूरहंड (चतरा)। प्रखंड विकास पदाधिकारी मनीष कुमार के द्वारा कदगावां कला पंचायत के सेवई कला, मखरील, गोरिया आदि गांव में अबुआ आवास एवं प्रधानमंत्री आवास का निरीक्षण किया गया । निरीक्षण के क्रम में अधूरे पड़े आवास के लाभुकों को सख्त निर्देश दिया गया कि जल्द आवास का काम पूर्ण करें अन्यथा दिए गए राशि की रिकवरी की कार्रवाई की जाएगी। साथ हीं सभी संबंधित पंचायत के सचिव को निर्देश दिया कि वैसे लाभुक जो कार्य शुरू नहीं किए हैं उसकी सूची उपलब्ध की जाय ताकि उचित कार्रवाई की जा सके।

# झारखंड सरकार की मंत्री दीपिका पाण्डेय सिंह ने किया चतरा का दौरा

## मनरेगा के अंतर्गत संचालित व विभागीय योजनाओं की हुई समीक्षा

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास

चतरा। झारखंड सरकार की ग्रामीण विकास, ग्रामीण कार्य एवं पंचायती राज विभाग की मंत्री दीपिका पाण्डेय सिंह ने मंगलवार को चतरा जिला का दौरा किया। मंत्री के चतरा आगमन पर उपायुक्त कीर्तिश्री? ने आभार प्रकट करते हुए पौधा भेंट कर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर उन्होंने परिसदन सभागार, चतरा में उप विकास आयुक्त अमरेंद्र कुमार सिन्हा, कार्यपालक अभियंताओं, सभी प्रखंड विकास पदाधिकारियों के साथ विभागीय योजनाओं की समीक्षा बैठक की।

बैठक में मुख्य रूप से अबुआ आवास योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) तथा मनरेगा के अंतर्गत संचालित योजनाएं जैसे बिरसा हरित ग्राम योजना, खेल मैदान निर्माण एवं सिंचाई कूप

संवर्धन योजना की प्रगति की विस्तार से समीक्षा की।

मंत्री ने प्रखंडवार अबुआ आवास की समीक्षा की और वैसे प्रखंड जिनका आवास योजना में प्रगति किस्त एवं आवास पूर्ण कराने के मामले में अपेक्षाकृत नहीं है उनपर नाराजगी व्यक्त करते हुए अधूरे आवास निर्माण कार्यों को शीघ्र पूरा करने का निर्देश दिया। बिरसा हरित ग्राम योजना के अंतर्गत पौधारोपण को प्राथमिकता देने एवं पौधों की देखभाल और सिंचाई की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना और मुख्यमंत्री ग्राम सड़क सुदृढ़ीकरण योजना की समयबद्ध पूर्णता पर ज़ोर दिया गया। मंत्री ने पंचायती राज विभाग के अंतर्गत संचालित योजनाओं की भी समीक्षा करते हुए इनके सफल क्रियान्वयन के लिए जरूरी दिशा-निर्देश दिए। आगे जेएसएलपीएस से स्वयं सहायता समूहों से संबंधित जानकारी लेते हुए निर्देशित किया कि मईया सम्मान योजना के लाभुकों को भी प्राथमिकता के आधार पर स्वयं सहायता समूहों से जोड़ा जाए,जिससे अधिक से अधिक महिलाएं आत्मनिर्भर बन सकें।

# बीसीए रेड ने बीसीए पिंक को 27 रन से हराकर बना चैंपियन

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास

गिद्धौर (चतरा)। बिरसा क्रिकेट एकेडमी के तत्वावधान में आयोजित ट्रायंगुलर सीरीज का पहला सीजन का फाइनल मुकाबला संपन्न हो गया।फाइनल मुकाबला बीसीए रेड बनाम बीसीए पिंक के बीच हुआ। जिसमें बीसीए रेड ने शानदार प्रदर्शन करते हुए बीसीए पिंक को 27 रनों से पराजित कर दिया।मैच की शुरुआत बीसीए रेड की बल्लेबाज़ी से हुई। बीसीए रेड की टीम ने निर्धारित 20 ओवरों में तीन विकेट के नुकसान पर 197 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया।टीम के हिमालय राज ने 58 गेंदों में 13 चौकों व चार छक्कों की मदद से नाबाद 100 रनों की तूफानी पारी खेली। वहीं आयुष गुप्ता ने भी 22 गेंदों में 42 रनों की तेजतर्रार पारी खेली।जबकि समीर कुमार ने भी 32 रन बनाया। बीसीए पिंक की

ओर से अर्पित कुमार,सौरव कुमार की बल्लेबाजी अच्छी नहीं रही।पूरी टीम 18.4 ओवरों में 170 रनों पर ऑल आउट हो गई। पिंक टीम की ओर से शुभम मिश्रा ने 37 गेंद में 73 व आकाश ने 20 गेंद में 36 रन की पारी खेली।बीसीए रेड की ओर से शानदार प्रदर्शन के लिए सत्यम प्रसाद को गेंदबाज ऑफ़ द टूर्नामेंट का खिताब दिया गया।जबकि मैन ऑफ द मैच का खिताब हिमालय राज को दिया गया।इस प्रकार प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट शुभम मिश्रा को दिया गया।फाइनल मुकाबला समापन के पश्चात विजेता व अपविजेता टीम को अतिथियों ने शील्ड देकर सम्मानित किया।समापन के मौके पर जिला क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष विनय कुमार सिंह, कोषाध्यक्ष सरोज सिन्हा, मीडिया प्रभारी लक्ष्मण दांगी, बिरसा क्रिकेट एकेडमी के संचालक मिथिलेश उर्फ बड़े,सह संचालक चंदन यादव, सदस्य संतोष कुमार निराला, राजू सिंह, सुजीत कुमार, छोटू यादव, कुश दुबे, पवन यादव, रूपेश कुमार, सुधीर कुमार, अंकित पांडेय, हिमांशु कुमार सहित थे।

# आउटसोर्सिंग नियमावली के विरोध में कर्मचारियों का सरकार से तत्काल संशोधन की मांग को लेकर काला बिल्ला लगाकर कार्य

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता- अबुल कलाम

टंडवा- (चतरा) अंचल कार्यालय टंडवा में आउटसोर्सिंग नियमावली के विरोध में कर्मचारियों का सरकार से तत्काल संशोधन की मांग को लेकर दानिश जी पंकज कुमार के आलावे बहुत सारे लोग काला बिल्ला लगाकर अपने अपने काम पर डटे रहे। लोग इस तरह से पुरे झारखंड राज्य के आउटसोर्स कर्मचारियों की समस्याओं और मांगों को लेकर कर्मचारी महासंघ की झारखंड राज्य आउटसोर्सिंग कम्प्यूटर

ऑपरेटर संघ ने राज्य सरकार द्वारा जारी आऊटसोर्सिंग मैनुअल में मौजूद प्रावधानों को सरकार मैनुअल में जरूरी संशोधन नहीं करती, तब तक चरणबद्ध आंदोलन जारी रहेगा। संघ की प्रमुख मांगें इस प्रकार हैं: संविदा कर्मियों को मिलने वाला मानदेय आउटसोर्स कर्मचारियों को भी मिले। सभी आउटसोर्स कर्मचारियों की सेवा 60 वर्ष तक सुनिश्चित की जाए। मध्य प्रदेश की तर्ज पर कर्मचारियों को ठेका प्रथा से मुक्त कर संविदा पर समायोजित किया जाए। कार्यरत कर्मचारियों को स्वीकृत पदों पर समायोजित किया जाए। संघ का कहना है कि बार-बार मुख्यमंत्री, मंत्रियों और अधिकारियों से आग्रह के बावजूद इस विषय को गंभीरता से नहीं लिया गया। ऐसे में अब आंदोलन अनिवार्य हो गया है।

### हंटरगंज में चला बाल श्रम के खिलाफ अभियान

- दो होटलों व एक दुकान पर मिले 5 बाल श्रमिक
- अभियान से बाल श्रम कराने वाले दुकानदारों में मचा हड़कंप

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास

हंटरगंज (चतरा)। हंटरगंज बाजार में बुधवार को बाल श्रम के खिलाफ श्रम प्रवर्तन अधिकारी प्रियंका कुमारी के साथ स्थानीय पुलिस टीम ने बाल श्रम करा रहे दो होटलों और एक कपड़ा दुकान पर की गई छापेमारी में 5 बाल श्रमिक पकड़े गए। इसमें दो बाल श्रमिक नारायणी स्वीट्स, दो श्री राम होटल वही एक टुनटुन मार्केट से रेस्क्यू किया गया। सभी बच्चों को हंटरगंज थाना लाया गया ।जहां 3 बच्चों को कार्यस्थल से मुक्त करवाया गया वही स्थानीय जनप्रतिनिधियों और अभिभावकों को बुलाकर सौप दिया गया। वही दो अंडर 14 श्रमिक बच्चों को विभाग लेकर चतरा चली गई है।

**अभियान से बाल श्रम कराने वाले दुकानदारों में मचा हड़कंप**

बुधवार की शाम में हंटरगंज मुख्य बाजार में स्थानीय पुलिस के साथ श्रम प्रवर्तन विभाग की टीम ने बाल श्रम के खिलाफ चेकिंग अभियान चलाया। इससे हंटरगंज के बाजार में दुकानदारों के बीच हड़कंप की स्थिति बनी रही। दुकान पर बाल श्रम करा रहे दुकानदारों में हड़कंप देखने को मिला।दुकान पर बाल श्रम करा रहे दुकानदारों में हड़कंप देखने को मिला। श्रम प्रवर्तन अधिकारी प्रियंका कुमारी ने बताया कि आगे भी इस तरह के अभियान चलाए जाते रहेंगे। इस दौरान जो लोग बाल श्रम कराते हुए पाए जाएंगे, उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी।

### केरेडारी प्रखंड के बुंडू पंचायत अंतर्गत बिरहोर टोला में जन्म प्रमाण पत्र वितरण एवं आधार कैंप लगाया गया

आदिवासी एक्सप्रेस

केरेडारी। उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह के निर्देशानुसार केरेडारी प्रखंड के बूँडू पंचायत अंतर्गत बिरहोर टोला में प्रखंड विकास पदाधिकारी विवेक कुमार द्वारा जन्म प्रमाण पत्र वितरण तथा आधार कैंप लगाया गया। बिरहोर परिवार के कुल 30 सदस्यों को जन्म प्रमाण पत्र बनवाकर दिया गया वहीं आधार कैंप में कुल 06 आधार बनाया गया। साथ ही 10 बिरहोर परिवार के सदस्यों का आधार सुधार किया गया इ उक्त कैंप में प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी रवि राजा, प्रखंड कल्याण पदाधिकारी प्रशांत कुमार, स्थानीय पंचायत सचिव बृज किशोर महतो, स्थानीय मुखिया तुलसी तूरी, पंचायत समिति पश्चिमी रंजीत कुमार तुरी, पंचायत समिति पूर्वी मोहन महतो, भोला यादव, पंचायत सहायक, स्थानीय डीलर मिथिलेश कुमार, कृष्णकान्त कुमार, धर्मदेव कुमार, प्रखंड ओपरेटर मदन कुमार तथा जितेंद्र तथा एवं अन्य उपस्थित रहे।

# स्कूल के जर्जर रसोई घर में शिक्षक के ऊपर गिरी छत का प्लास्टर

- शिक्षक हुए घायल, रेफर
- छत को जल्द से जल्द मरम्मत करवाएं विभाग: उप प्रमुख

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास

हंटरगंज (चतरा)। चतरा जिले के हंटरगंज प्रखण्ड अन्तर्गत उत्क्रमित मध्य विद्यालय रक्सी से हैरान करने वाला एक मामला सामने आया है। जहां सरकारी स्कूल की रसोई घर के जर्जर

बिल्डिंग छत भरभराकर प्लास्टर टीचर के ऊपर गिर गई। जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। जिसे आनन-फानन में जोरी के एक निजी अस्पताल में पहुंचाया गया जहां से बेहतर ईलाज हेतु हजारीबाग शेख भिखारी कॉलेज अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। प्रधानाध्यापक (शिक्षक) विराज वींद्र टुड्डी ने बताया कि रसोई घर में एमडीएम का निरक्षण करने गए थे। इसी दौरान जर्जर भवन के छत ऊपर से ही भरभराकर एक टुकड़ा सिर पर गिर गया। जिससे वह गंभीर रूप से घायल गए। आनन फानन में विद्यालय के अन्य शिक्षको और ग्रामीणों ने जैसे-तैसे शिक्षक को जोरी के एक निजी अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार कर गंभीर स्थिति होने के कारण हजारीबाग शेख भिखारी कॉलेज अस्पताल रेफर कर दिया जहां उनकी स्थिति सामान्य बताई जा रही है। इधर घटना की जानकारी मिलते ही हंटरगंज उप प्रमुख राहुल कुमार गुप्ता अस्पताल पहुंचे और शिक्षक से स्वास्थ्य का हाल चाल जाना। उन्होंने कहा कि जान को जोखिम में डालकर रसोईया खाना बना रही है उन्होंने कहा कि जो स्थिति दिखती है, उससे लगता है कि कभी ऊपर से छत गिर सकता है । शिक्षा विभाग से अनुरोध है कि जल्द से जल्द भवन की मरम्मत करवाए जिसके की ऐसी घटना की पुनरावृत्ति ना हो।

## संक्षिप्त समाचार

## परियोजना निदेशक आईटीडीए रवि जैन उप विकास आयुक्त का अतिरिक्त प्रभार किया ग्रहण

**दुमका।** उपायुक्त सह निवर्तमान उप विकास आयुक्त अभिजीत सिन्हा से परियोजना निदेशक आईटीडीए रवि जैन ने उप विकास आयुक्त का अतिरिक्त प्रभार ग्रहण किया। आईएएस अधिकारी रवि जैन वर्तमान में दुमका जिले के परियोजना निदेशक आईटीडीए भी है। प्रभार के उपरांत निवर्तमान उप विकास आयुक्त ने नव पदस्थापित उप विकास आयुक्त रवि जैन को उनके कार्यों से अवगत कराया तथा सभी अधिकारियों से परिचय प्राप्त भी कराया। प्रभार लेते ही उन्होंने कहा कि जिले में विकास के एक नए मानक को स्थापित किया है। सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाना तथा योजनाओं का क्रियान्वयन नियमानुसार धरातल पर उतारना प्राथमिकता होगी।

## मंगलवार की रात हुई मोटरसाइकिल दुर्घटना में एक ही परिवार के महिला सहित तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गया

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam**

**साहिबगंज।** बोरियों थाना क्षेत्र अंतर्गत साहिबगंज-बोरियों मुख्य पथ के बांझी खेसड़िया पुल के पास में मंगलवार की रात हुई मोटरसाइकिल दुर्घटना में एक ही परिवार के महिला सहित तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने तीनो घायलों को इलाज के लिए साहिबगंज सदर अस्पताल पहुंचाया। जहां चिकित्सक डॉ. केशव कृष्णा ने जांचोपरांत विशनपुर पंचायत बीरबल काधा निवासी बबलू हेंब्रम का 27 वर्षीय पुत्र तालु हेंब्रम को मृत घोषित कर दिया। जबकि उनकी 18 वर्षीया पत्नी मय ब्यूटी टुडू व 25 वर्षीय फुफेरा भाई लुकस हांसदा का इलाज प्रारंभ कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार दोनो गंभीर रूप से घायल है। घायल लुकस ने बताया कि हम तीन लोग मोटरसाइकिल से मृतक भाई की पत्नी के मायके बरबोना से बिशनपुर बांझी अपना घर जा रहे थे। इसी दौरान बांझी खेसड़िया पुल के पास खड़ी ट्रैक्टर के डाला से तेज रफ्तार मोटरसाइकिल असंतुलित होने के कारण टकरा जाने से मोटरसाइकिल दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसमें हम तीनो लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। सदर अस्पताल आने के दौरान तालु हेंब्रम की मौत रास्ते में ही हो गया। जबकि पत्नी मय ब्यूटी टुडु व भाई लुकस गंभीर रूप से घायल है। बोरियो पुलिस मामले की जांच में जुटी है। परिजनों का रो रो कर बुरा हाल है।

## विद्यालय बड़तल्ला नयाटोला सहित प्रखंड के सभी स्कूलों में योग प्रशिक्षण का आयोजन किया गया

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam**

**साहिबगंज।** मंडरो अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारी को लेकर बुधवार को मध्य विद्यालय मिर्जाचौकी उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय बड़तल्ला नयाटोला सहित प्रखंड के सभी स्कूलों में योग प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रशिक्षित शिक्षकों के द्वारा छात्र-छात्राओं को योग एवं सूर्य नमस्कार का प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान प्रभारी प्रधानाध्यापिका कुमारी संगीता ने छात्र-छात्राओं को जानकारी देते हुए बताया कि हम सभी लोग योग करके निरोग रह सकते हैं। आज के परिवेश में मानव जीवन के लिए योग बहुत जरूरी है। योग कर हम लोग कई बीमारियों को दूर भगा सकते हैं। मौके पर शिक्षक स्वर्ण कुमारी, मध्य विद्यालय मिर्जाचौकी के प्रभारी प्रधानाध्यापक छबिलाल पासवान, मो अली अंसारी, अमरेश कुमार, चंदन वर्णवाल, रामनारायण चौधरी, योग शिक्षक सुनील किस्कू सहित कई छात्र-छात्र मौजूद थे।

## गंगा नदी में नहाने के दौरान 7 वर्षीय बच्ची की डूबने से मौत

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam**

**साहिबगंज।** राजमहल थाना क्षेत्र अंतर्गत महाराजपुर मीना बाजार फूलचंद टोला गांव में गंगा में नहाने के दौरान अचानक 7 वर्षीय बच्ची गंगा नदी में डूब गई। आसपास के लोगों के सहयोग से गंगा नदी से बाहर निकल गया बताया जा रहा है कि महाराजपुर मीना बाजार फूलचंद टोला गांव निवासी बड़ा महतो के 7 वर्षीय पुत्री मनीषा कुमारी अपने दोस्तों के साथ गंगा में स्नान करने गई थी और अचानक पानी के गहराई में चले जाने से डूब गई परिजनों ने बताया कि बुधवार को लगभग 2:00 बजे अपने दोस्तों के साथ सभी सखी गंगा में स्नान करने गई थी जब सारे दोस्त अपने अपने घर आ गया तो मां भी अपनी 7 वर्षीय बच्ची मनीषा कुमारी को खोज रही थी जब बच्ची घर पर नहीं मिली तो माँ बेचैन हो गई. और फिर से गंगा नदी के तरफ गई पता चला कि मेरी पुत्री गंगा नदी में नहाने के क्रम में डूब गई आसपास के लोगों की सहयोग से बच्ची को गंगा नदी से बाहर निकला तब तक बच्ची की मौत हो गई थी. इधर परिजनों को रो-रो कर बुरा हाल है पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुट गई है।

### विकसित कृषि संकल्प अभियान

# पाकुड़ में कृषकों को केंद्र एवं राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की दी गई जानकारी

**सुस्मित तिवारी**
**आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो**

**पाकुड़** – बुधवार को विकसित कृषि संकल्प अभियान के तहत कृषि विज्ञान केंद्र, महेशपुर, आत्मा, कृषि विभाग द्वारा संयुक्त रूप से केंद्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दिया गया। पाकुड़ प्रखंड अंतर्गत 6 गांव में दो टीमों के द्वारा मंगलापाड़ा, कालिदासपुर, काशीला, मरूवापहाड़ी, बड़ा कान्हुपुर और छोटा धनसरिया मे कृषि वैज्ञानिक के द्वारा धान, मक्का, मरुवा, ज्वार फसल, दलहन जैसे अरहर, उर्द, कुल्थी, तेलहन फसल जैसे तिल, मुंगफली खेती तथा सब्जी की वैज्ञानिक एवं तकनीकी खेती के बारे में बारी-बारी से बताया गया। कृषि एवं आत्मा विभाग, भूमि संरक्षण, पशुपालन, सहकारिता, मत्स्य पालन द्वारा संचालित योजनाओं की विस्तार से कृषकों को जानकारी दी गई। साथ ही बीज उपचार, स्वायल हेल्थ कार्ड योजना के तहत मिट्टी जांच के बारे में विस्तार से बताया गया। खरीफ मौसम में सब्जी की खेती को बढ़ावा देने और अधिक आमदनी प्राप्त करने के लिए लत्तीदार सब्जी के बारे में जानकारी दिया गया। प्रति बुन्द अधिक फसल के तहत पीडीएमसी योजना के बारे मे किसानों को टपक और फ़व्वारा सिंचाई से इकाई स्थापित करने हेतु जानकारी दी गयी। इस इकाई से कम पानी से फसलों की खेती किया जाता है। किसान समृध्दि योजना अन्तर्गत चलित सोलर पम्पसेट 2 एचपी के लाभ एवं इसके आवेदन की प्रकिया की भी जानकारी दी गई। पीएम कुसुम योजना अन्तर्गत 2, 3 एवं 5 एचपी का सोलर पम्पसेट के लाभ एवं इसके आवेदन भरने की प्रक्रिया भी विस्तार से उपस्थित कृषकों को बताया गया। कृषकों के सवालों का समाधान भी किया गया।

मौके पर जिला कृषि पदाधिकारी मृत्युंजय कुमार, जिला उद्यान पदाधिकारी प्रोसेनजीत महतो, भूमि संरक्षण पदाधिकारी सूजित एक्का,कृषि विज्ञान केंद्र महेशपुर के वरिय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉक्टर संजय कुमार, कृषि विज्ञान केंद्र महेशपुर के सहायक अध्यापक आलोका वॉग, डॉक्टर विनोद कुमार, कृषि वैज्ञानिक महेशपुर, एस एस मुंडा, कृषि अभियांत्रिकी वैज्ञानिक, महेशपुर, , एससीओ मुहम्मद शमीम अंसारी, पंचायत के सैंकड़ों कृषक, प्रगतिशील कृषक एवं कृषक मित्र उपस्थित रहे।

## परिसदन भवन स्थित सभागार में विधानसभा की गैर सरकारी संकल्प समिति की समीक्षात्मक बैठक की गई आयोजित

**दुमका।**
**ललित कुमार पाल की रिर्पोट**

परिसदन भवन स्थित सभागार में आज विधानसभा की गैर सरकारी संकल्प समिति की समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता समिति के सभापति एवं धनबाद विधायक श्री राज सिन्हा ने की।बैठक में समिति के सदस्य शिकारीपाड़ा विधायक श्री आलोक कुमार सोरेन भी उपस्थित थे।

बैठक में समिति द्वारा पेयजलापूर्ति योजनाएं, शहरी जलापूर्ति योजनाएं, भूमि सुधार, खनन, स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, खाद्य, आपूर्ति, वन, श्रम, ग्रामीण कार्य, कल्याण, पथ निर्माण, पशुपालन सहित विभिन्न विभागों द्वारा विगत तीन वित्तीय वर्षों में संचालित विकास योजनाओं की समीक्षा की गई।

समिति ने जिला स्तरीय सभी विभागों के पदाधिकारियों से अद्यतन प्रगति प्रतिवेदन के आधार पर जनहित से जुड़े मामलों में जानकारी प्राप्त की एवं आवश्यक सुझाव व निर्देश दिए।

सभापति श्री राज सिन्हा ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी योजनाओं की प्रगति में तेजी लाई जाए। यदि किसी योजना के संचालन में कोई समस्या आ रही हो, तो उसे शीघ्र दूर कर समयबद्ध रूप से पूर्ण किया जाए। उन्होंने जनहित की योजनाओं को प्राथमिकता देते हुए समय-समय पर उनकी निगरानी और निरीक्षण सुनिश्चित करने का निर्देश भी दिया।

बैठक में उप विकास आयुक्त रवि जैन, सिविल सर्जन दुमका सहित विभिन्न विभागों के वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

## आगामी 30 जुन को प्रखंड मुख्यालय परिसर में आयोजित होने वाले हुल दिवस पर सिद्धों कान्हु मुर्मू आदिवासी एभेन बैसी सचीव ने धोबा पंचायत के ग्रामीणों को दिया न्योता

**रामगढ़ / रामजी साह।**

**रामगढ़ प्रखंड के धोबा पंचायत के धोबा आदिवासी टोला में** आगामी 30 जून को प्रखंड मुख्यालय परिसर के पिछे मैदान में विशाल हुल दिवस समारोह आयोजन को लेकर ग्रामीणों के साथ सिद्धों कान्हु मुर्मू आदिवासी एभेन बैसी की बैठक जमीन हांसदा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।जिसमें लोगों को 30जुन को आयोजित होने वाले हुल दिवस पर प्रखंड मुख्यालय परिसर पहुंचने हेतू न्योता दिया गया। तथा हुल दिवस की महत्ता पर प्रखंड सचीव बिहारी हांसदा द्वारा प्रकाश डाला गया तथा लोगों को जागरूक किया गया।मौके पर बिहारी हांसदा,मंगल सोरेन,सुलेमान हांसदा,मुंशी मुर्मू आदि मौजूद थे।

## डीसी ने बाल आश्रय गृह के बच्चों के साथ किया संवाद, आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने का दिया आश्वासन

● उपायुक्त ने बच्चों का मनोबल बढ़ाते हुए जीवन में अच्छा लक्ष्य प्राप्त करने के लिए किया प्रेरित

**सुस्मित तिवारी**
**आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़**

पाकुड़ उपायुक्त मनीष कुमार ने बाल देखभाल संस्थान- बाल आश्रय गृह, पाकुड़ में आवासित बच्चों एवं उनके अभिभावकों के साथ संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उपायुक्त मनीष कुमार ने बाल देखभाल संस्थान के बच्चों एवं उनके अभिभावकों के साथ संवाद किया। इस दौरान उपायुक्त ने बच्चों से सीधे संवाद कर उनकी दिनचर्या, आवश्यकताओं और समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। उपायुक्त ने बच्चों से आश्रय में दी जारी सुविधाओं के बारे में भी फीडबैक ली। इस दौरान अभिभावकों ने बारी-बारी से बच्चों को दी जा रही सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। उपायुक्त ने बच्चों को दी जा रही सुविधाओं पर संतोष व्यक्त किया और उनके कल्याण के लिए काम जारी रखने का निर्देश दिया। इस दौरान उपायुक्त ने उपस्थित अभिभावकों से भी बच्चों के अंदर विश्वास पैदा करने तथा अपनी क्षमता अनुसार उनके जीवन के विकास में योगदान करने को कहा। उपायुक्त ने कहा कि बच्चों की समय- समय पर काउंसलिंग की जाए और बच्चों को दिये जाने वाले भोजन की गुणवत्ता एवं शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाए।यह बच्चे भविष्य में अपने पैरों पर खड़े हों, इस दिशा में इनकी शिक्षा पर विशेष फोकस किया जाए और साथ ही इनके अंदर स्किल को भी बढ़ावा दिया जाए। नियमित रूप से दिए जाने वाले भोजन के अलावा पौष्टिक आहार से भरपूर खाना भी दिया जाए। स्वास्थ्य सेवाओं के दृष्टिगत समय- समय पर बच्चों का रुटीन चैकअप किया जाए। साथ ही उपायुक्त ने बाल देखभाल संस्थान में उपलब्ध संसाधन एवं उपलब्ध कराए जाने वाले विभिन्न संसाधन / सुविधाओं के संबंध में आश्रय गृह के संचालक से जानकारी प्राप्त किया एवं आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। संवाद कार्यक्रम के तहत बाल आश्रय गृह के परिसर में उपायुक्त एवं विशेष कार्य पदाधिकारी सहित अन्य पदाधिकारियों एवं कर्मियों के द्वारा पौधारोपण किया गया।

मौके पर विशेष कार्य पदाधिकारी त्रिभुवन कुमार सिंह, सहायक निदेशक, सामाजिक सुरक्षा कोषांग, पाकुड़, जिला बाल संरक्षण पदाधिकारी, पाकुड़, जिला बाल संरक्षण इकाई के सभी पदाधिकारी, बाल देखभाल संस्थान के संचालक, अधीक्षक समेत अन्य कर्मी उपस्थित थे।कास आयुक्त रवि जैन को उनके कार्यों से अवगत कराया तथा सभी अधिकारियों से परिचय प्राप्त भी कराया। प्रभार लेते ही उन्होंने कहा कि जिले में विकास के एक नए मानक को स्थापित किया है। सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाना तथा योजनाओं का क्रियान्वयन नियमानुसार धरातल पर उतारना प्राथमिकता होगी।

## रेलवे प्रशासन के द्वारा रेलवे स्टेशन पाकुड़ में बृहत जांच शिविर लगाया गया

● महिला रेल कर्मियों एवं रेल कर्मियों के परिवार जनों के स्वास्थ्य जांच किया गया

**सुस्मित तिवारी**
**आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़**

**पाकुड़-** बुधवार को रेलवे स्टेशन, पाकुड़ में रेलवे प्रशासन द्वारा महिला रेल कर्मियों एवं रेल कर्मियों के परिवार जनों के स्वास्थ्य जांच हेतु एक वृहत स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया गया, जिसमें ऑर्थोपेडिक हावड़ा हॉस्पिटल से चार महिला रोग विशेषज्ञ चिकित्सक सहित पूरी जांच टीम पाकुड़ में उपलब्ध रही । इस क्रम में महिला डॉक्टरों ने महिला रेलकर्मी ,पाकुड़ एवं आसपास में कार्यरत कर्मचारियों के परिवार जनों के स्वास्थ्य जांच की गई । इस क्रम में पाकुड़ रेलवे लॉकअप डिस्पेंसरी में कार्यरत डॉक्टर समीम द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई ।साथ ही ईस्टर्न रेलवे मेंस यूनियन के कार्यकर्ताओं द्वारा रेलवे कॉलोनी में जागरूकता अभियान चलाया गया ,ताकि अधिक से अधिक रेलवे कर्मियों के परिवारों को, उनके बच्चों को इस जांच सुविधा एवं इस हेल्थ कैंप का अधिक से अधिक लाभ मिल सके । इस अवसर पर सभी विभाग के कर्मचारी एवं सभी विभाग के सुपरवाइजर तत्पर रहे एवं उन्होंने अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को इस स्वास्थ्य जांच शिविर का लाभ लेने के लिए प्रेरित किया। विश्वास जांच शिविर में कल 52 महिला कर्मियों ने इस जांच शिविर का लाभ उठाया। इस अवसर पर ऑर्थोपेडिक हॉस्पिटल हावड़ा से डॉक्टर शिवानी सरदार, वरिष्ठ मंडल चिकित्सक हावड़ा, डॉक्टर नयन मनी विश्वास वरिष्ठ मंडल चिकित्सक (प्रसूति रोग विशेषज्ञ), डॉक्टर रेशमी वासु ,वरिष्ठ मंडल चिकित्सक, हावड़ा तथा डॉक्टर मृणाल मंडल एवं डॉ अब्दुस समीम, वरिष्ठ मंडल चिकित्सक रामपुरहाट सहित पूरी जांच टीम ने भाग लिया। इसमें जांचोपरांत महिला रेल कर्मियों एवं उनके परिवार जनों को आवश्यक दवाइयायों का वितरण किया गया एवं जिन महिला कर्मियों अथवा परिवार जनों को विशेष जांच की आवश्यकता है ,उन्हें विशेष जांच एवं इलाज हेतु ऑर्थोपेडिक हावड़ा आने का आग्रह किया गया है। इस अवसर पर ईस्टर्न रेलवे मेंस यूनियन पाकुड़ शाखा के शाखा सचिव संजय कुमार ओझा सहित शाखा के कोषाध्यक्ष अमर कुमार मल्होत्रा, विकास कुमार गौतम कुमार यादव एवं अन्य कार्यकर्तागण सक्रिय दिखे ,जिन्होंने इस चिकित्सा शिविर के आयोजन में आगे बढ़-चढ़कर कर योगदान दिया।

## ट्रेक्टर और टेम्पो की टक्कर में टेम्पो सवार सात लोग घायल हो गए

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam**

**साहिबगंज।** बरहेट थाना क्षेत्र अंतर्गत मंगलवार की रात्रि लालमाटी चौक के पास ट्रेक्टर और टेम्पो की टक्कर में टेम्पो सवार सात लोग घायल हो गए। सभी घायलों का प्राथमिक उपचार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर बबलू कुमार ने किया। घायलों में पाडेरबथान गाँव निवासी 22 वर्षीय चंपई मुर्मू, 45 वर्षीय रयमत हेंब्रम, 26 वर्षीया दीबी मरांडी, तलबड़िया गाँव निवासी 30 वर्षीय ताजुद्दीन अंसारी को छोड़ कुसमा डाक बंगला निवासी 60 वर्षीय झगड़ा प्रसाद साह छोटा कदमा गांव निवासी 35 वर्षीय सलीम अंसारी एवं 70 वर्षीय विनोद स्वर्णकार को बेहतर इलाज के लिए रेफर कर दिया गया। घटना के संबंध में मिली जानकारी के अनुसार उपरोक्त सभी एक टेंपो पर सवार होकर बरहेट हाट से अपने-अपने घर के लिए जा रहा था। लालमाटी चौक के पास विपरीत दिशा से आ रहे ट्रैक्टर से टेंपो में टक्कर लग गया जिससे टेम्पो दुर्घटनाग्रस्त हो गया। घटना की जानकारी मिलते ही बरहेट थाना पुलिस आवश्यक कार्यवाही में जुट गई। वहीं देर रात्रि ईलाज के लिए ले जाने के दौरान पाडेरबथान गाँव निवासी 22 वर्षीय चंपई मुर्मू की मौत हो गई।

आक्रोशित ग्रामीणों ने बुधवार के सुबह साहिबगंज गोविंदपुर मुख्य सड़क को मुआवजा की मांग को लेकर पाडेरबथान के पास किया जाम। मंगलवार और बुधवार की रात्रि टेंपो दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल पाडेरबथान गांव निवासी 22 वर्षीय चंपई मुर्मू की मौत ईलाज के लिए ले जाने के दौरान हो गई। मौत के बाद परिजनों एवं ग्रामीण ने आक्रोशित होकर साहेबगंज गोविंदपुर मुख्य सड़क को मुआवजे की मांग को लेकर करीब डेढ़ घंटे तक जाम रखा जानकारी के अनुसार मृतक के परिजनों को सहयोग राशि के रूप में कल 50 हजार दिए जाने की बात कही गई और तत्काल 10 हजार दिया गया, इसके बाद थाना प्रभारी ने ग्रामीणों को समझा-बुझाकर सड़क जाम हटवाया। सड़क जाम के दौरान यात्रियों को परेशानियों का सामना करना पड़ा।

# उपायुक्त ने ड्रेगन फ्रूट की खेती का किया निरीक्षण

● उपायुक्त ने पूर्व प्रधानध्यापक एवं किसानों को प्रोत्साहित किया, ड्रैगन फ्रूट की खेती से अच्छा मुनाफा कमा सकते जिले के किसान

**सुस्मित तिवारी**
**आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़**

पाकुड़ उपायुक्त मनीष कुमार के द्वारा पाकुड़ प्रखंड के झिकरहटी, केकेडीएम उच्च विद्यालय के पूर्व प्रधानध्यापक दिलीप घोष एवं किसान मनारुल हक द्वारा विद्यालय के बंजर भूमि पर किए गए ड्रैगन फ्रूट खेती का निरीक्षण किया। उपायुक्त मनीष कुमार ने पूर्व प्रधानध्यापक दिलीप घोष एवं किसान मनारुल हक के द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि विद्यालय परिसर के आसपास बंजर जमीन को मॉडल फार्मर के रूप में उस जमीन को स्थापित किया है। ड्रैगन फ्रूट की खेती पाकुड़ जिले में पहली बार किया गया है। साथ ही जिला के अन्य किसान भी यहां का विजिट जरूर करें। उपायुक्त ने कहा कि यहां पर मक्का का पौधा एवं अमरूद एवं आदि का पौधा लगा हुआ है, जिसका बाजार में काफी डिमांड है। उन्होंने कहा कि डायरेक्टली मार्केट लिकेज कर इनको सही दाम कैसे मिले इसपर कार्य किया जाएगा। उपायुक्त ने बताया कि ड्रैगन फ्रूट के गुणकारी लाभों के चलते बाजार में इसकी मांग में निरंतर बढ़ोतरी हो रही है।

इसके अलावा उपायुक्त ने झिकरहटी स्थित केकेडीएम उच्च विद्यालय का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान ग्रामीणों के द्वारा अतिरिक्त कक्षाओं के लिए भवन एवं पानी की समस्या को लेकर डीप बोरिंग की मांग की गई। उपायुक्त ने कहा कि जल्द ही यहां पर अतिरिक्त कक्षाओं के लिए भवन एवं डीप बोरिंग किया जाएगा।

# ऐसा भी क्या मुश्किल है कश्मीरियों पर भरोसा करना !

## >> विचार

> "कश्मीर एक अनूठा राज्य है। यह तीन तरफ से पाकिस्तान और चीन से घिरा हुआ है। निर्वाचित राज्य सरकार को प्रक्रिया में शामिल न करके वे यह संकेत देना चाहते हैं कि उमर की सरकार विश्वसनीय नहीं है और शांति बहाल करने या आतंकवाद को रोकना उनके वश की बात नहीं है। निराशा के स्वर में वह कहते हैं, नेशनल कॉन्फ्रेंस ने भारी कीमत चुकाई है और अपने हजारों कार्यकर्ताओं को आतंकवादियों के हाथों खोया है। कभी-कभी तो मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वे हम पर इसलिए भरोसा नहीं करते क्योंकि हम कश्मीरी और मुसलमान हैं। वे भूल जाते हैं: आप स्थानीय लोगों को शामिल किए बिना आतंकवाद से नहीं लड़ सकते। इंस्टीट्यूट ऑफ कॉन्फ्लिक्ट मैनेजमेंट के निदेशक और आतंकवाद निरोध के विशेषज्ञ डॉ. अजय साहनी इस धारणा से सहमत हैं।

**रश्मि सहगल**

पहलगाम आतंकी हमले और उसके बाद पाकिस्तान के साथ चार दिन तक चले संघर्ष से सरकार ने क्या सबक लिया? जम्मू-कश्मीर की संवेदनशीलता और उपमहाद्वीप की भू-राजनीति में इसके महत्व को देखते हुए, माना जा रहा था कि सरकार कुछ सबक सीखेगी और उसके अनुरूप जरूरी सुधार करेगी। इसके बजाय, आम कश्मीरियों को निशाना बनाने से लेकर टकराव से पहले सीमावर्ती क्षेत्रों से नागरिकों को सुरक्षित बाहर निकालने में विफल रहने तक, उसने वह सब कुछ किया जो सिर्फ निराश-हताश करने वाला था। घाटी में स्थानीय लोगों द्वारा देश के साथ एकजुटता का सहज प्रदर्शन राज्य को उसकी गरिमा बहाल करने के साथ उनका भरोसा वापस अर्जित करने का भी अवसर था। लेकिन एक बड़ा अवसर हाथ से निकल गया- क्योंकि सरकार अपनी समझ पर पड़ा कुहासा साफ किए बगैर आगे बढ़ती रही। पहलगाम हादसे के बाद, कश्मीर पर नजर रखने वाले ज्यादातर लोग सहमत थे कि लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई उमर अब्दुल्ला की अगुआई वाली सरकार को सुरक्षा से जुड़े सभी मामलों में शामिल रहना चाहिए। लेकिन 29 मई को केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, गृह मंत्रालय, सुरक्षा बलों और खुफिया एजेंसियों के अधिकारियों के साथ एक उच्च स्तरीय सुरक्षा बैठक करते वक्त मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला को सीधे-सीधे नजरअंदाज कर दिया। इरादा एकदम साफ था: जम्मू-कश्मीर में कानून और व्यवस्था पर खास नियंत्रण बनाए रखना। क्या यह समझदारी भरा फैसला है? यह अहम सवाल है! इस साल ऐसा तीसरी बार हुआ है जब केंद्र सरकार ने मुख्यमंत्री को दरकिनार किया है- पहले फरवरी और फिर अप्रैल में। बार-बार दरकिनार किए जाने से नेशनल कॉन्फ्रेंस के कई विधायकों को आलोचना करने का अवसर मिला, जिन्होंने अमित शाह और एलजी पर मुख्यमंत्री कार्यालय को सोची-समझी रणनीति के तहत कमजोर करने का आरोप लगाया। पहलगाम आतंकी हमले के बाद, उमर अब्दुल्ला सरकार ने जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल करने की मांग फिर से दोहराई- एक ऐसा कदम जिससे क्षेत्र की शीर्ष सुरक्षा संस्था, 'एकीकृत कमान' का नियंत्रण फिर से निर्वाचित मुख्यमंत्री के हाथ में आ जाएगा। नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता नासिर असलम वानी ने ठीक ही कहा, मुख्यमंत्री कोई बाहरी व्यक्ति नहीं हैं और हर निर्णय लेने में उनकी हिस्सेदारी होनी ही चाहिए। कश्मीर की सुरक्षा-व्यवस्था में महज केन्द्र सरकार, सशस्त्र बल, खुफिया एजेंसियां और एलजी ही तो एकमात्र खिलाड़ी नहीं होने चाहिए। वानी ने कहा, असल और प्रमुख हितधारक तो राज्य के लोग हैं; और अगर अपने

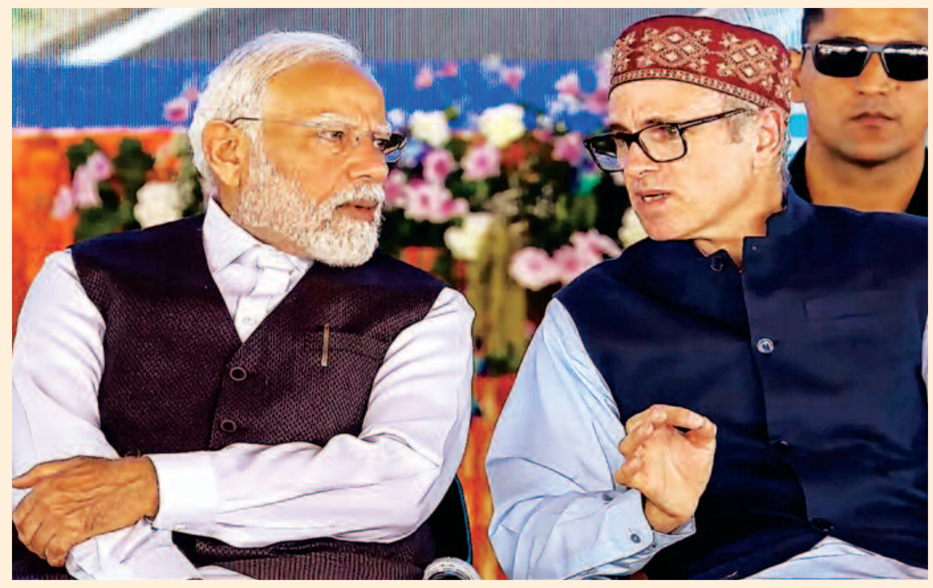

मामलों की जिम्मेदारी उनके पास रहती है, तो कोई क्यों आश्चर्य करे कि पहलगाम जैसे क्रूर अत्याचार इतनी आसानी से तो नहीं होंगे। यह जनता ही है जो सुरक्षा उपायों या उनकी चूक का खामियाजा भुगतती है और यह एक विडंबना है कि ऐसे मामलों में उनकी कोई भागीदारी नहीं है जो सीधे उनसे संबंधित हैं। उन्होंने कहा कि केन्द्र और कश्मीरी अवाम के बीच भरोसा कायम करना महत्वपूर्ण है, लेकिन निर्वाचित सरकार को उसकी सही शक्तियों से वंचित रखने वाला मौजूदा रवैया और बार-बार वादे के बावजूद उन्हें पूरा करने में केन्द्र की विफलता सिर्फ अविश्वास को जन्म देता है। कुलगाम से लगातार पांचवीं बार चुने गए सीपीएम विधायक मोहम्मद यूसुफ तारिगामी इस पूरे प्रकरण में बहुत स्पष्ट दिखते हैं। तारिगामी बताते हैं कि जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम, 2019 के तहत कानून और व्यवस्था एलजी के अधिकार क्षेत्र में है और इसकी देखरेख सीधे गृह मंत्रालय करता है। उनका कहना है, "कश्मीर एक अनूठा राज्य है। यह तीन तरफ से पाकिस्तान और चीन से घिरा हुआ है। निर्वाचित राज्य सरकार को प्रक्रिया में शामिल न करके वे यह संकेत देना चाहते हैं कि उमर की सरकार विश्वसनीय नहीं है और शांति बहाल करने या आतंकवाद को रोकना उनके वश की बात नहीं है। निराशा के स्वर में वह कहते हैं, नेशनल कॉन्फ्रेंस ने भारी कीमत चुकाई है और अपने हजारों कार्यकर्ताओं को आतंकवादियों के हाथों खोया है। कभी-कभी तो मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वे हम पर इसलिए भरोसा नहीं करते क्योंकि हम कश्मीरी और मुसलमान हैं। वे भूल जाते हैं: आप स्थानीय लोगों को शामिल किए बिना आतंकवाद से नहीं लड़ सकते। इंस्टीट्यूट ऑफ कॉन्फ्लिक्ट मैनेजमेंट के निदेशक और आतंकवाद निरोध के विशेषज्ञ डॉ. अजय साहनी इस धारणा से सहमत हैं। वह कहते हैं, यह सरकार राज्य सरकारों को जिम्मेदारी सौंपने में विश्वास नहीं करती है। स्पष्ट है कि उन्हें स्थानीय आबादी पर भरोसा नहीं है क्योंकि वे मुसलमान हैं। इनके जेहन में उनके प्रति बुनियादी दुश्मनी का भाव है। उमर अब्दुल्ला ने स्वीकार किया है कि उनके लिए हालात कितने मुश्किल हैं, सारी शक्तियों से वंचित, जनता की अपेक्षाओं और गृह मंत्रालय तथा उपराज्यपाल की परस्पर विरोधी मांगों के बीच उनके लिए यह सब किसी महीन तार पर चलने जैसा है। जम्मू-कश्मीर में सत्ता के कई केंद्रों की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कहा, हमारे (जम्मू-कश्मीर में) यहां अजीबो-गरीब हालात हैं। (बतौर पर्यटन मंत्री) पर्यटक मेरी जिम्मेदारी हैं लेकिन पर्यटकों की सुरक्षा मेरे जिम्मे नहीं है। यहां तीन सरकारों को मिलकर काम करना होगा- जम्मू-कश्मीर की निर्वाचित सरकार, जम्मू-कश्मीर की गैर-निर्वाचित सरकार और भारत सरकार। नाम न बताने की शर्त पर एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया, वरिष्ठ पुलिस अफसरों की जगह बाहरी लोग लाए जा रहे हैं, जिन्हें न यहां के इलाकों की जानकारी है और न स्थानीय लोगों की मानसिकता की समझ। इसमें कोई शक नहीं कि पहलगाम में सुरक्षा में बड़ी चूक हुई। इस बात की विस्तृत जांच होनी चाहिए कि ऐसा होने कैसे दिया गया। इससे भी अप्रिय बात यह कि मारे गए पर्यटकों के शव बैसरन मैदान में तीन घंटे तक पड़े रहे, और कई को तो उठाकर पैदल नीचे पहलगाम ले जाया गया, जबकि उन्हें हेलीकॉप्टर से अस्पताल ले जाया जाना चाहिए था। अगले दिन जब गृह मंत्री ने बैसरन का दौरा किया, तो उन्हें सुरक्षा कवच देने के लिए 700 पैराट्रूपर्स और अन्य सुरक्षाकर्मी लगाये गए! उमर अब्दुल्ला सरकार से जनता लगातार नाराज होती जा रही है। मार्च में बजट पारित होने के बावजूद विधायकों का स्थानीय क्षेत्र विकास (एलएडी) फंड अभी तक जारी नहीं हुआ है। इससे जनता इसलिए भी बेचैन है, क्योंकि निर्वाचित प्रतिनिधि छोटे-छोटे विकास कार्यों को भी मंजूरी देने की स्थिति में नहीं हैं। अब हालात को और बदतर बनाने के लिए जम्मू के बीजेपी नेताओं को घाटी के हालात का आकलन करने का जिम्मा दे दिया गया है। श्रीनगर में बिजली का सामान बेचने वाले मोहम्मद पेरेज खान ने कहा, बीजेपी नेताओं से आकलन करने के लिए क्यों कहा जाना चाहिए? इससे हमारा संदेह बहुत ज्यादा बढ़ गया है। चार दिनों तक चले संघर्ष में सबसे ज्यादा मौतें जम्मू-कश्मीर में हुईं। पाकिस्तान की ओर से सीमा पार से की गई भारी गोलाबारी में 13 नागरिक मारे गए और 59 घायल हुए। मृतकों में पांच बच्चे भी हैं। तोप के गोले नागरिक इलाकों में गिरे और कितने ही घर, स्कूल और अन्य इमारतें ध्वस्त हो गईं। उमर अब्दुल्ला ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग करके सभी सीमावर्ती जिलों के डिप्टी कमिश्नरों के साथ एक आपातकालीन बैठक की और प्रत्येक सीमावर्ती जिले को 5 करोड़ रुपये और अन्य जिलों को 2 करोड़ रुपये की आकस्मिक निधि तत्काल जारी करने का आदेश दिया। उन्होंने संवेदनशील सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले लोगों के लिए आश्रय और बंकर भी तत्काल उपलब्ध कराने पर जोर दिया। जम्मू-कश्मीर इस वक्त संघर्ष का सबसे बड़ा क्षेत्र है। फिर यह कैसी विडंबना है कि 8 मई को महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय बैठक होती है, और जिसमें थल सेना, नौसेना, वायु सेना और पुलिस के शीर्ष अधिकारी इस बात पर चर्चा करने के लिए जुटते हैं कि राज्य की मशीनरी और रक्षा बलों के बीच समन्वय और तैयारियों को किस तरह बढ़ाया जाए। तारिगामी कहते हैं कि यह काम तो श्रीनगर में होना चाहिए था- "इसीलिए हम राज्य के दर्जे की मांग कर रहे हैं। संसद में सरकार के आश्वासन के बावजूद, ऐसा लगता नहीं है कि केन्द्र हमें निकट भविष्य में राज्य का दर्जा देगा।

## संपादकीय

### पिता की खामोश मासूमियत

हमने किसी सोते हुए बच्चे को देखा होगा। उसे देखते हुए क्या हमें ऐसा नहीं लगता कि यह कितना मासूम है? उसके चेहरे पर जो मासूमियत होती है, उसकी तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती। वह चेहरा हमारे सामने सदैव होता है, बच्चे के बड़े होने तक। हम उसी चेहरे को हमेशा प्यार करते हैं। एक और चेहरा हमारे सामने होता है। हम कोशिश करके उसे याद कर सकते हैं। हमसे कुछ सहायता प्राप्त करने वाला या कहा जाए कि हमसे उधार मांगने वाला चेहरा। इस चेहरे के भाव कुछ अलग से होते हैं, पर वह भी मासूम ही होता है। इस चेहरे पर दो तरह के भाव पाए जाते हैं। एक तो स्वाभिमान का, दूसरा शर्म का। जो हाथ पहले कभी किसी के आगे नहीं फैले होंगे, किसी वक्त वही हाथ कुछ मांगने के लिए किसी के सामने फैलाने पड़ते हैं। जो हाथ सदैव देने के लिए उठे होते हैं, बाद में वही मांगने के लिए उठते हैं। इन दोनों भावों को हम उस वक्त देख सकते हैं, जब हमसे कोई पहली बार उधार मांग रहा हो। मासूमियत वाले दो चेहरे और होते हैं। ये चेहरे होते हैं हमारे माता-पिता के। यह बात भले ही गले से नीचे नहीं उतर रही हो, पर यह सच है कि माता-पिता के चेहरे भी मासूम होते हैं। अगर हमें अपने माता-पिता के चेहरे पर मासूमियत नजर नहीं आ रही है, तो हमें अपनी समझदारी और दृष्टि पर गौर करने व उसमें सुधार करने की जरूरत है। अफसोस है कि हमें अपने माता-पिता कभी मासूम नहीं लगते। हालांकि, मां को इस सामाजिक व्यवस्था में मिले दर्जे की वजह से सर्वोच्च स्थान पर देखा जाता रहा है और इस नाते कई बार उनके चेहरे में मासूमियत दिखती है, जो स्वाभाविक और सही है। लेकिन पिता को आमतौर पर इस दृष्टि से नहीं देखा जाता। यह वह चेहरा होता है, जो सदैव सख्त दिखाई देता है। लोग इसी सख्त और गंभीरता वाले चेहरे से डर जाते हैं। हम उनके भीतर अजस्र रूप से बहती उस स्वच्छंद नदी के प्रवाह को नहीं देख पाते, जो सदैव बना रहता है। जो देख पाते हैं, वे बहुत ही भाग्यशाली होते हैं। आज जीवन मूल्य तेजी से बदल रहे हैं। सामाजिक जीवन अब कुछ ऐसी जटिलताओं से गुजर रहा है कि पिता-पुत्र के बीच की दूरियां बहुत बढ़ गई हैं। आपाधापी इतनी है कि घर में रहने वाले और तेजी से बड़े होते बच्चों के साथ संवाद तो जैसे गायब हो गया है। कई बार संवाद का काम आंखें ही कर लेती हैं। प्यार से गले लगाने के दृश्य तो अब यदा-कदा ही दिखाई देते हैं। पिता-पुत्र के बीच संवाद के सेतु का काम मां को ही करना होता है। जहां मां न हो, वहां तो स्थिति और भी विकट होती है। बच्चे को बड़ा होते देखना भला किसे नहीं भाता, पर बच्चा इतना भी बड़ा न बन जाए कि उससे संवाद करने के लिए वातावरण को हल्का करने की आवश्यकता पड़े। दिन भारी लगने लगते हैं, जब बच्चे से बात करने के लिए पिता को इंतजार करना पड़ता है। संभव है कई घरों में वातावरण हल्का रहता हो। पिता और पुत्र एक मित्र की तरह संवाद करते दिखाई देते हों। साथ-साथ घूमने जाना, एक साथ मिल कर भोजन करना आदि क्रियाकलाप हों। ऐसे माहौल में पता ही नहीं चलता कि घर में किसकी चलती है, पिता की या बेटे की। एक उम्र के बाद पिता और भी अधिक खामोश होने लगते हैं।

# अपनी गर्मी की छुट्टी को यादगार बनाएं

**विजय गर्ग**

गर्मी की छुट्टी को यादगार बनाने के तरीके में शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चों को छुट्टियों से बहुत प्यार है। जैसे ही उनकी घोषणा की जाती है, उनके चेहरे खुशी से झूम उठते हैं। यह स्कूल की दैनिक हलचल से स्वतंत्रता प्राप्त करने का एक सुनहरा समय है, सुबह जल्दी उठने के लिए नहीं, पसंदीदा खेल खेलने के लिए, यात्रा करने और परिवार के साथ लंबा समय बिताने के लिए। छुट्टियों के दौरान, बच्चों को ऐसा काम दिया जाना चाहिए जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है और उनकी प्रगति और विकास से संबंधित है। छुट्टी के काम का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम का अभ्यास करने तक सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि बच्चों के मन, मस्तिष्क, शरीर और चरित्र को भी पूरी तरह से विकसित करना चाहिए। दूसरे, अगर हम इस बार को बच्चों के कौशल को निखारने का एक विशेष अवसर कहते हैं, तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। बच्चे इस समय का अच्छा उपयोग करके अपने ज्ञान में मूल्यवान परिवर्धन कर सकते हैं।

**होमवर्क पूरा करना :** पहली बात जो बच्चों को करनी है, वह शिक्षकों द्वारा दिए गए होमवर्क को करना है। जो बच्चे अपने लक्ष्य के पीछे हैं, वे कड़ी मेहनत कर सकते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। स्कूल के माध्यम से बच्चों को विशेष अवकाश गृहकार्य उपलब्ध कराया गया है। यह काम बहुत दिलचस्प और ज्ञान बढ़ाने वाला है। इस काम पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। वैसे भी पढ़ाई में नई ऊंचाइयों को हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत की जरूरत होती है। बच्चे छुट्टी के अवसर का लाभ उठा सकते हैं और पाठ-सहायता गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं।

**जीवन कौशल प्रशिक्षण :** शिक्षा केवल पुस्तकों तक ही सीमित नहीं है। बच्चों को घर के काम, खाना बनाना, बजट बनाना, चीजों का ख्याल रखना आदि सीखने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। बच्चों को सिखाया जाना चाहिए कि दैनिक कार्यों की सूची कैसे बनाई जाए, खरीदारी की सूची बनाएं और खर्चों का अनुमान लगाएं, सरल व्यंजनों को बनाने की कोशिश करें, आदि। उन्हें बताया जाना चाहिए कि अपने कमरे को कैसे साफ रखें, सब कुछ अपनी जगह पर रखें, आदि। इस तरह के कार्य बच्चों में आत्मनिर्भरता और जिम्मेदारी की भावना पैदा करते हैं।

**सुंदर लेखन :** विद्वानों का कहना है कि अगर लेखन सुंदर है, तो अध्ययन करना आसान हो जाता है। छुट्टियों के दौरान, बच्चों को अपने लेखन को सुंदर बनाने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इस काम के लिए हस्तलिखित प्रतियों का उपयोग किया जा सकता है। प्रत्येक अक्षर की संरचना को गहराई से समझा जा सकता है। सुंदर लेखन के लिए निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है। परीक्षाओं में सुंदर लेखन बहुत महत्वपूर्ण है। इससे छात्रों को अपने पेपर में बहुत अच्छे अंक मिल सकते हैं क्योंकि जब शिक्षक पेपर चेक करता है तो उन्हें पेपर चेक करने में कोई दिक्कत नहीं होती है। इससे छात्रों को पेपर में बहुत अच्छे अंक मिलते हैं।

ड्राइंग और पेंटिंग का काम :बच्चों के हितों के अनुसार अवकाश का काम किया जाना चाहिए। छुट्टियों के दौरान ड्राइंग और पेंटिंग भी की जा सकती है। एक बच्चा जो ड्राइंग में अच्छा है, वह अपनी पढ़ाई में अधिक प्रगति कर सकता है। जबकि यह एक बहुत ही दिलचस्प विषय है, यह ज्ञान को भी बढ़ाता है। यह काम बच्चों की कल्पना को बढ़ाता है और उनकी आंतरिक क्षमताओं को विकसित करता है। यदि संभव हो, तो बच्चों को पेंटिंग में छुट्टियों के दौरान कोचिंग दी जानी चाहिए ताकि बच्चों के कौशल में सुधार हो सके।

**खेलकूद और योग में भाग लेना :** छुट्टियों के दौरान बच्चों को अपने शरीर को तंदुरुस्त रखने के लिए खेलों में भाग लेना चाहिए। खुले मैदान में खेले जाने वाले आउटडोर खेलों में भाग लेना चाहिए। इसके अलावा इनडोर खेलों में भी भाग लिया जा सकता है। खेलों से बच्चे में सहयोग, सहजता, बड़ों के प्रति सम्मान और अनुशासन की भावना विकसित होती है। इसके अलावा छुट्टियों के दौरान छोटे बच्चों को कबड्डी, लुका-छिपी, बरहन-डीटी, कोटला-छपकी आदि खेलों में भी भाग लेना चाहिए। इनसे बच्चों में धैर्य, शक्ति और टीम वर्क के गुण बढ़ते हैं। छुट्टियों के दौरान बच्चों को किसी उपयुक्त शिविर में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जिससे बच्चों के चरित्र में सुधार हो सके और इससे छात्रों का स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। तकनीकी युग से संबंधित कार्य आज के दौर में तकनीक का बहुत महत्व है। शर्त यह है कि इसे बर्बाद न किया जाए। बच्चों को ऑडियो-वीडियो प्रोजेक्ट बनाने के बारे में बताया जाना चाहिए। रील या वीडियो के माध्यम से शैक्षणिक सामग्री का निर्माण और उसके अध्ययन को गहराई से समझाया जाना चाहिए, ताकि भविष्य में वे तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर सफलता प्राप्त कर सकें। आज के समय में बच्चों को कंप्यूटर का ज्ञान होना जरूरी है, इसलिए छुट्टियों में बच्चों को कंप्यूटर की कोचिंग भी देनी चाहिए, ताकि छुट्टियों में बच्चे कंप्यूटर में एक्सपर्ट बन सकें।

**पर्यावरण संरक्षण :** छुट्टियों के दिनों में बच्चे पर्यावरण की देखभाल के लिए आगे आ सकते हैं। वास्तव में पर्यावरण को खुशनुमा बनाना हम सबका कर्तव्य है। हम गांव के आम स्थानों, स्कूलों और अपने घर के बगीचों की सुरक्षा करके और नए पौधे लगाकर इसमें अपना योगदान दे सकते हैं। जो हमारे जीवन के लिए बहुत जरूरी है। बच्चों को पौधों की देखभाल के लिए प्रेरित करने की जरूरत है ताकि उन्हें पर्यावरण के बारे में जानकारी मिल सके।

**प्रतिदिन टहलना और व्यायाम करना :** रोजाना सैर और व्यायाम भी छुट्टियों का हिस्सा होना चाहिए। हल्का-फुल्का व्यायाम और सैर करके हम स्वस्थ रह सकते हैं। रोजाना सैर करने से कई बीमारियाँ दूर होती हैं। इसलिए सुबह की सैर और व्यायाम को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए।

**खिलौने बनाना :** बच्चे पुरानी और इस्तेमाल की हुई चीज़ों से खिलौने बना सकते हैं। यह गतिविधि रोचक और सार्थक दोनों है। यह बच्चों को अपनी प्रतिभा को विकसित करने का सुनहरा अवसर देता है।

**साहित्यिक पुस्तकों का अध्ययन :** छुट्टियों के दौरान लाइब्रेरी की किताबें पढ़नी चाहिए। कहानियाँ, आत्मकथाएँ, ऐतिहासिक किताबें या धार्मिक ग्रंथ बच्चों की सोच को व्यापक बनाते हैं। इसके अलावा अच्छी और ज्ञानवर्धक किताबें हमारे घर की लाइब्रेरी का हिस्सा होनी चाहिए। अच्छा साहित्य पढ़ने से न केवल हमारा ज्ञान बढ़ता है बल्कि हमारा शब्द भंडार भी बढ़ता है। हमें उन्हें महान विद्वानों, वैज्ञानिकों और गणितज्ञों की किताबें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि उनमें वैज्ञानिक सोच विकसित हो सके।

**पर्यटन :** कान और आँखों के बीच सिर्फ़ चार अंगुल का फासला नहीं होता। यह अंतर बहुत बड़ा है। किसी भी चीज़ के बारे में पढ़ने से ज़्यादा जानकारी आपको उसे देखकर मिलती है। अगर आप ताजमहल के बारे में विस्तार से लिखना चाहते हैं, तो उसे अपनी आँखों से देखना बहुत ज़रूरी है। इसलिए बच्चों के लिए सैद्धांतिक ज्ञान ही काफ़ी नहीं है, उन्हें ऐतिहासिक जगहों पर जाना चाहिए, जिससे उन्हें व्यावहारिक जानकारी मिले।

**माता-पिता की मदद करना :** बच्चों को छुट्टियों के दौरान घर और बाहर के कामों में अपने माता-पिता की मदद भी करनी चाहिए। इससे बड़ों के प्रति सम्मान बढ़ता है। वहीं दूसरी ओर काम करने की इच्छा और जिम्मेदारी का अहसास भी बढ़ता है।

**सामाजिक रूप से जिम्मेदार कार्य :** बच्चों को सामाजिक भावना से जुड़ने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। कम क्षमता वाले बच्चों को उपचारात्मक कक्षाएं लगाकर शिक्षित करने का प्रयास किया जाना चाहिए। यदि संभव हो तो उनके घर जाकर उन्हें शिक्षित करना बहुत ही ईमानदारी का काम होगा। इसके अलावा पानी बचाने के लिए पोस्टर बनाना, पक्षियों के लिए पानी के बर्तन रखना, पर्यावरण संरक्षण के लिए पेड़ लगाना आदि छुट्टियों के दौरान किए जाने वाले महत्वपूर्ण कार्यों में शामिल किए जाने चाहिए। छुट्टियों में किए जाने वाले काम बच्चों को न केवल पढ़ाई में बल्कि जीवन के हर पहलू में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करते हैं, जो उन्हें रचनात्मक, सीखने योग्य और जीवन कौशल से परिपूर्ण बनाते हैं। बच्चों को हर दिन कुछ नया सीखने, सोचने और करने के लिए उत्साहित होना चाहिए। इसलिए गर्मी की छुट्टियों का सदुपयोग करते हुए बच्चों को अपनी कला और प्रतिभा को निखारने का अवसर नहीं छोड़ना चाहिए। आज के समय के संदर्भ में इन नेक कामों की अधिक आवश्यकता है।

**(विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब)**

# आप दूसरों की मदद करते रहिए, भगवान आपकी मदद करेगा

**बिस्वा रंजन**

हमें हमेशा दुसरो की मदद करनी चाहिए, आपकी एक छोटी सी मदद से किसी की जिंदिगी बदल सकती है। इस कहानी में भी कुछ ऐसा ही होता है।हररोज की तरह गुप्ता जी स्कूटर पर सवार होकर के सुबह झ सुबह दफ्तर जा रहे थे। उनकी पत्नी ने कहा कि वापस आते हुए सेब ले करके आना।जब ऑफिस की दिशा में रवाना हो रहे थे, तो फ्लाइ ओवर से पहले ही एक सड़क किनारे बैठी हुई एक महिला दिखी, जो सेब बेच रही थी।उन्होंने अपना स्कूटर रोक लिया और सवाल किया, क्या भाव है, माताजी? महिला ने उत्तर दिया, चालीस रुपये किलो। इस पर गुप्ता जी, मोलभाव पर अड़ गए। गुप्ता जी कहने लगे कि तीस रुपए प्रति किलो, माताजी ने कहना शुरू किया पैंतीस रुपए प्रति किलो। इस पर गुप्ता जी ने उत्तर दिया, तीस रुपए से एक रुपए ज्यादा नहीं दूंगा। माताजी ने कहा, बेटा, इससे कम नहीं, पैंतीस रुपए प्रति किलो ले लो ना। गुप्ता जी ने अपने स्कूटर की रेस बढ़ाई और कहा, तीस रुपए से एक रुपए ज्यादा नहीं मिलेगा। माताजी कहती है, बेटा, ऐसा मत करो, ले लो ना पैंतीस रुपए प्रति किलो।" गुप्ता जी ने अपने ऑफिस की दिशा में स्कूटर चलाते हुए वहां से बाहर निकल लिया और ऑफिस पहुँच गए।शाम को फिर से बाहर निकलते समय वो एक फल भंडार में पहुँच गए, जिसमें विभिन्न फलों का विकल्प है। अब वहाँ मोलभाव करने का कोई विकल्प नहीं था, क्योंकि उस स्थान पर एक फिक्स्ड रेट का बोर्ड लगा हुआ था।जब वह वहाँ पहुंचे और देखा कि सेब का मूल्य पचास रुपये किलो है, तो गुप्ता जी को थोड़ी हैरानी हुई। क्योकि वहाँ सड़क किनारे उपलब्ध हो रहे सेब का मूल्य चालीस रुपये किलो था।उन्हें यह लगा कि कुछ अजीब सा हो रहा है, इसलिए वह तेजी से फल भंडार के मालिक के पास गए और बोले, भाई साहब, चालीस रुपये किलो में दो ना। फल भंडार के मालिक ने हंसते हुए कहा, भाई साहब, यहाँ सब फिक्स्ड रेट में मिलता है, आप यहाँ पर मोल-भाव नहीं कर सकते, अगर आपको मोल-भाव करना है तो किसी ओर जगह से ले लो। गुप्ता जी ने कहा, ठीक है, लेकिन मुझे पता चला कि बाहर की दुकानों में तो यही रेट है। फल भंडार के मालिक ने कहा, भाई साहब, यहाँ तो वह नहीं है, कृपया आप एक बार जो पीछे बोर्ड पर लिखा है उसे पढ़ ले, कि मोलभाव करके हमें शर्मिंदा न करें। गुप्ता जी शर्म से वहाँ से निकल गए, उम्मीद में कि फ्लाइओवर के नीचे किनारे पर जो महिला बैठी थी, वह शायद

अब भी वही होगी और वहाँ से सेब खरीदने का विचार किया जा सकता है।उन्होंने स्कूटर को दौड़ाया और पहुँचे तो वहाँ महिला बैठी हुई थी। महिला ने गुप्ता जी को पहचान लिया और कहने लगी कि पैंतीस रुपये किलो बस मोलभाव मत करो गुप्ता जी मुस्कुराए और कहा, "कोई बात नहीं माताजी, आप दो किलो सेब पैक कर दीजिए और इसके लिए मैं आपको सौ रुपये दे दूंगा।"महिला ने कहा, "मेरे पास खुले पैसे नहीं है।" शर्मा जी ने कहा, "खुले की जरूरत नहीं है, आप रख लो सौ रुपये और दो किलो सेब मुझे दे दो।"महिला ने मुस्कराते हुए कहा, "आपका बहुत धन्यवाद।" गुप्ता जी ने कहा की मै अभी अभी एक बड़ी दूकान में देख कर आया हु वहा पर भी सेब ५० रूपये किलो ही मिलते है, तो वहा से लेने से अच्छा है की मै आपके यहाँ से ले लू।माता जी की आंखों में आंसू आ गए, उन्होंने कहा, मैं कैसे बताऊं हमारी स्थिति इतनी कठिन हो गई है कि सड़क किनारे फल बेचने में मजबूर हूं। मेरे पति की मृत्यु हो गई नथी और वे बीमार थे। कर्जा भी बढ़ गया और हम सब से सहारा मांगते रहे, इसी कष्ट से बाहर निकलने के लिए मुझे सड़क किनारे ये फल बेचने पड़ रहे है। यह एक आशा है कि कोई इसे खरीद लेगा, लेकिन कोई खरीदता ही नहीं।इस पर गुप्ता जी ने कहा, इस तरह की बातें मत करो, मैं कल सुबह फिर आऊंगा और कुछ और पैसे लेकर तुम्हारे पास आऊंगा। घर पहुंचकर गुप्ता जी ने अपनी पत्नी को दो किलो सेब दे दिए और उनसे कहा, मुझे पांच सौ रुपए का एक नोट लाकर के दो कल किसी की मदद करनी है।मैडम ने पूछा, "क्या हुआ?" और गुप्ता जी ने उन्हें पूरी कहानी सुनाई। उन्होंने कहा, हम पता नहीं क्यों मोलभाव करते हैं, सड़क किनारे जो सामान बेचते हैं उन लोगों से जो अपनी मेहनत से जी रहे हैं और लाचार होते हैं। हमें उनकी मदद करनी चाहिए इस तरह की कठिनाईयों में।लाचार होने के बावजूद, वे अपनी जीवनशैली को बनाए रख रहे हैं और हम उनसे भी मोल भाव कर रहे होते हैं जबकि बड़े बड़े शोरूम में जाते हैं और पैसे देकर के आ जाते हैं।अगले दिन गुप्ता जी ने माता जी के पास पहुंचकर पांच सौ का नोट दिया और कहा, माता जी, आप अब कर्जा चुकाना शुरू करें और फल लाना शुरू करें मंडी से।माताजी ने कहा, "बेटा, तुम्हारे पांच सौ रुपए का कर्जा मै कैसे चुकाऊंगी?" गुप्ता जी ने कहा, "चिंता मत करो, मैं आपसे फल खरीदता रहूंगा।"ऑफिस में जाकर गुप्ता जी ने इस बात को अपने साथियों के साथ साझा किया और उन्होंने भी इस माता जी से फल खरीदने का निर्णय लिया।सभी साथियों ने मिलकर पैसे इकट्ठा किए और एक ठेलागाड़ी माताजी को खरीदकर दे दी। इससे माताजी को काफी फायदा हुआ और धीरे-धीरे उसका धंधा भी अच्छे से चलने लगा। हमें हमेशा दुसरो की मदद करनी चाहिए, आपकी एक छोटी सी मदद से किसी की जिंदिगी बदल सकती है। आप दूसरों की मदद करते रहिए भगवान आपकी मदद करेगा, और मोल भाव करना बंद कीजिए।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक व संपादक **सरोज चौधरी** द्वारा ई-37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित तथा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस लालगुटवा रांची से मुद्रित, **संस्थापक संपादक : स्व. राधाकृष्ण चौधरी, प्रबंध संपादक अरूण कुमार चौधरी * फोन :** 9471170557/08084674042, **ई-मेल :** aadivashiexpress@gmail.com

## संक्षिप्त समाचार

### मोहम्मद इकबाल के नेतृत्व में बिंदुवासनी हॉल्ट पर भव्य महा धरना प्रदर्शन

**अजय कुमार कुशवाहा आदिवासी एक्सप्रेस**
धरना प्रदर्शन में क्षेत्र के सैकड़ों स्थानीय नागरिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं जनप्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

बरहरवा साहिबगंज धरना का मुख्य उद्देश्य रेलवे प्रशासन का ध्यान स्थानीय लोगों की वर्षों पुरानी मांगों की ओर आकर्षित कराना था। धरना स्थल पर जनसमूह ने शांतिपूर्ण ढंग से अपनी बात रखी और सरकार से अपनी जायज़ मांगों को मानने की अपील की।

**धरना में रखी गई मुख्य मांगे इस प्रकार हैं:**

**पहली मांग:** 53433/53434 आजिमगंज-बरहरवा पैसेंजर ट्रेन का बिंदुवासनी हॉल्ट पर ठहराव सुनिश्चित किया जाए। इस स्टेशन पर ठहराव न होने से स्थानीय यात्रियों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। यदि इस ट्रेन का ठहराव किया जाता है तो क्षेत्र के विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों और व्यापारियों को बहुत बड़ी सुविधा मिलेगी।

**दूसरी मांग:** 53022 साहिबगंज-आज़िमगंज पैसेंजर ट्रेन का ठहराव भी बिंदुवासनी हॉल्ट पर किया जाए। यह ट्रेन भी सैकड़ों लोगों के दैनिक जीवन में बेहद उपयोगी साबित होगी। यदि इसका ठहराव सुनिश्चित किया जाता है तो लोगों को अपने कार्यस्थलों, विद्यालयों और अन्य ज़रूरी कामों के लिए सुगम आवागमन मिलेगा।

### पतना चौक के बाबा भूतेश्वर नाथ मंदिर में पीपल और बरगद की शादी संपन्न हुई

**आदिवासी एक्सप्रेस प्रिंस मिश्रा**
बरहरवा/ पतना चौक बाबा भूतेश्वर नाथ मंदिर में पीपल और बरगद के पेड़ की शादी की रस्म पूरी की गई। इस दौरान क्षेत्र से भक्तों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार पीपल और बरगद के पेड़ दोनों को भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण माना जाता है। बरगद को भगवान विष्णु का निवास माना जाता है। कुछ क्षेत्रों में पीपल और बरगद के पेड़ की शादी की जाती है। इस शादी में पीपल के पेड़ को दुल्हन की तरह सजाया जाता है और बरगद के पेड़ को दूल्हे की तरह सजाया जाता। फिर पारंपरिक तरीके से दोनों की शादी की जाती है। जिसमें मंदिर के पुजारी रविंद्र नाथ पांडे मुख्य जजमान के रूप में रामप्रवेश सिंह और संजीत संजीत शाह उपस्थित थे। साथ मे महाप्रसाद में खिचड़ी का भोग लगा जिसमें भक्तों ने प्रसाद के रूप में ग्रहण किया कमिटी सदस्यों में मुन्ना श्रीवास्तव, रामप्रवेश दोलन, संजीत, मंटू, दिवाकर ,बंटी के साथ अन्य सदस्य उपस्थित रहे हैं।

### भगवान जगन्नाथ की स्नान ध्यान पूजा के पश्चात हुए अज्ञातवास, 27 को होगा रथ पूजा एवं मेला का आयोजन

**बड़कागांव संजय कुमार**
**बड़कागांव।** राम जानकी मंदिर में रथ यात्रा को लेकर बुधवार से तैयारी शुरू हो गई। भगवान जगन्नाथ ,भाई बलभद्र एवं बहन सुभद्रा को दूध दही मधु गंगाजल से स्नान ध्यान कराने तथा नए वस्त्र पहनाने तथा पूजा अर्चना के पश्चात उन्हें प्रसाद स्वरूप काजू किशमिश फल आदि पौष्टिक आहार से भोग लगाया गया। आज से 15 दिनों के लिए भगवान अज्ञातवास में चले गए हैं। मान्यता व परंपरा के अनुसार इस दौरान रोजाना चीरैता का जूस, अनार जूस अन्य फल का जूस पुजारी के द्वारा भगवान को अर्पित किया जाएगा ताकि भगवान का स्वास्थ्य बेहतर बना रहे। 26 जून को भगवान का अज्ञातवास हटेगा स्नान ध्यान कराया जाएगा और उन्हें 56 भोग लगाया जाएगा। 27 जून को रथ मेला का आयोजन होगा। बताते चलें कि बड़कागांव राम जानकी मंदिर में 1941 से प्रखंड का इकलौता रथ पूजा एवं मेला लगता आ रहा है। जहां श्रद्धालु हजारों की संख्या में शामिल होते हैं एवं पूजा अर्चना करते हैं। मौके पर उपस्थित लोगों में मुख्य रूप से पुजारी चिंतामणि महतो,गायत्री देवी,सतीश मिश्रा ,पिंटू गुप्ता, कीर्तन महतो ,बीना देवी ,सुनीता देवी,प्रकाश महतो,अंतू महतो ,बंधन महतो,पदुम महतो ,रविंद्र लाल ,हरिनाथ राम ,कैलाश कुमार,आनंद कुमारअन्य कई श्रद्धालु उपस्थित थें।

### ब्लॉक परिसर में शौचालय बंद, लोगों को परेशानी

**बड़कागांव संजय कुमार**
**बड़कागांव।** प्रखंड सह अंचल कार्यालय में पुरुष शौचालय बंद रहने के कारण ग्रामीणों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। अपने कार्य के लिए अंचल कार्यालय आए वाहिद अली ने कहा कि मैं ग्राउंड फ्लोर में शौच के लिए शौचालय के लिए गया, तो देखा की दरवाजे में ताला बंद है, पिछले कई दिनों से शौचालय बंद है ।जिसके कारण कामकाज के लिए ब्लॉक आए लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। मामले को लेकर बीडीओ जितेंद्र कुमार मंडल से पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि हो सकता है बिजली नहीं रहने के कारण टंकी में पानी नहीं चढ़ा होगा, जिसके कारण बंद होगा।

बताते चलें कि कई बार देखने को मिला है कि पानी नहीं रहने के कारण लोग शौचालय को गंदा हीं छोड़ जाते हैं।

# विजली व्यवस्था चरमराई तो सीधे लोगों के मौलिक अधिकारों पर प्रभाव

**झिकटिया में नया 200kva ट्रांसफार्मर लगाने को लेकर निर्देशित किया**

**अजय कुमार कुशवाहा आदिवासी एक्सप्रेस जिला ब्यूरो साहिबगंज।** बरहरवा तपतपाती गर्मी और चिलचिलाती धूप से जहाँ लोगों का जीना दुशवार है ऐसे में अगर विजली व्यवस्था चरमराई तो सीधे लोगों के मौलिक अधिकारों पर प्रभाव पड़ता है। बरहरवा और पतना प्रखण्ड अंतर्गत संयुक्त गाँव झिकटिया में बीते आठ दिनों से बिजली पूर्ण रूप से ठप्प है, बीते दिनों आसमानी बिजली और तूफानी बारिश के कारण कुछ बिजली के तार एवं झिकटिया के बिजली उपभोक्ताओं को बिजली आपूर्ति होने वाली ट्रांसफार्मर जल गए ,जिसकी सूचना बिजली विभाग को दिए जाने के बाद भी आठ दिनों तक इसका समाधान नहीं निकला और लोग इस भीषण गर्मी में परेशान थे ,मामले को लेकर स्थानीय ग्रामीणों ने पाकुड़ विधानसभा विधायिका निसात आलम को लिखित शिकायत कर समस्या के समाधान को लेकर गुहार लगाई,जिसके बाद विधायिका द्वारा बरहरवा बिजली के पदधिकारियों को झिकटिया में नया 200 kva ट्रांसफार्मर लगाने को लेकर नि5र्देशित किया गया। तत्पश्चात बिजली विभाग द्वारा झिकटिया चौक में खुदाई और पोल गाड़ने का काम शुरू कर दिया गया, ग्रामीण भी उम्मीद लगाए बैठे थे कि बुधवार को ट्रांसफार्मर लगने के बाद बिजली आपूर्ति की जाएगी परंतु ऐसा नहीं हुआ।

**आक्रोशित ग्रामीणों ने सड़क जाम कर धरना प्रदर्शन**

विजली विभाग द्वारा बुधवार को नया ट्रांसफार्मर लगाने का आश्वाशन दिया गया था लेकिन जब ट्रैक्टर में लोड होकर ट्रांसफर्मर झिकटिया पहुँची तो सभी चौक गए, नए ट्रांसफर्मर की जगह पुरानी और क्षतिग्रस्त ट्रांसफार्मर भेजा गया था जिस ट्रांसफार्मर से तेल का स्त्राव हो रहा था या देखकर ग्रामीण पूरी तरह आकर्षित हो गए और बिजली विभाग के लापरवाही और सौतेला व्यवहार का नारा लगाते हुए झिकटिया चौक के चौराहे को जाम कर धरना प्रदर्शन करने लगे मामले को लेकर ग्रामीणों से पूछ गया तो ग्रामीणों ने बताया कि जिस वाहन से ट्रांसफार्मर यहाँ लगाने के लिए लाया जा रहा था उसके ड्राइवर को दबाव देने पर चालक ने बताया कि नया ट्रांसफार्मर कहीं और क्रेशर में भेज दिया गया है और पुराना ट्रांसफार्मर खोलकर यहां लाने को कहा गया है, इसी बात से नाराज होकर ग्रामीणों ने बिजली विभाग के खिलाफ मोर्चा खोल दिया और मांग करने लगे जब तक 200 द्म1ड्ड का नया ट्रांसफर्मर नहीं लगाया जाएगा तब तक सड़क यातायात पूरी तरह से बाधित रहेगी और महिला पुरुष सभी धरना पर बैठे रहेंगें।हालांकि बरहरवा थाना पुलिस मौके पर पहुँची और आक्रोशित ग्रामीणों को शांत करने का प्रयास कर रहे थे ताकि किसी प्रकार की कोई अप्रिय घटना न घटित हो।

वहीं प्रदर्शन मैं बहुत सारे ग्रामीण शामिल थे ST SC महिला विंग राष्ट्रीय अध्यक्ष रीता पासवान के प्रयास से ग्रामीणों को नया ट्रांसफार्मर मिला बिजली विभाग के कोई भी पदधिकारी मौके पर नहीं पहुँचे थे,फोन के माध्यम से जानकारी दी गई कि नया ट्रांसफार्मर जल्द ही लगा कर विजली आपूर्ति बहाल की जाएगी।खबर लिखे जाने तक सड़क पर यातायात बाधित थी और ग्रामीणों का प्रदर्शन जारी था।

# शहर में सीसीटीवी निगरानी को लेकर डीसी ने की समीक्षा बैठक, खराब कैमरों के शीघ्र मरम्मति का निर्देश

**आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता साहिबगंज।** डीसी हेमंत सती की अध्यक्षता में गोपनीय कार्यालय में सीसीटीवी कैमरा निगरानी समिति की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में शहर में लगे सीसीटीवी कैमरों की वर्तमान स्थिति, उनकी कार्यक्षमता एवं तकनीकी समस्याओं पर चर्चा की गई। डीसी ने विशेष रूप से खराब पड़े कैमरों की मरम्मति एवं उनकी प्रभावी निगरानी सुनिश्चित करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि शहर की सुरक्षा व्यवस्था को और सुदृढ़ बनाने के लिए सीसीटीवी प्रणाली को सतत और सुचारू बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। बैठक में बताया गया कि प्रायः विभिन्न स्थानों पर सीसीटीवी कैमरों के वायर कटने की घटनाएं सामने आ रही हैं, जिससे कैमरे बंद हो जा रहे हैं। इस पर संज्ञान लेते हुए डीसी ने संबंधित एजेंसी को निर्देशित किया कि जिन स्थानों पर बार-बार वायर कटने की समस्या उत्पन्न हो रही है, वहां केबल को भूमिगत (अंडरग्राउंड) करने की प्रक्रिया तत्काल प्रारंभ की जाए ताकि भविष्य में ऐसे अवरोध उत्पन्न न हों। बैठक में अपर समाहर्ता गौतम भगत, मुख्यालय डीएसपी विजय कुमार कुशवाहा, जिला आपूर्ति पदाधिकारी झुनू कुमार मिश्रा, जिला श्रम अधीक्षक धीरेन्द्र नाथ महतो, जिला विद्युत आपूर्ति पदाधिकारी शंभूनाथ चौधरी, सदर एसडीपीओ किशोर तिर्की, नगर प्रशासक अभिषेक कुमार सिंह समेत कार्यकारी एजेंसियों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। बैठक के अंत में डीसी ने सभी पदाधिकारियों से समन्वय स्थापित कर सीसीटीवी की मरम्मति कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर निष्पादित करने का निर्देश दिया।

# सुखदेव विद्रोही के द्वारा जिलाध्यक्ष पद के लिए निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam साहिबगंज।** राष्ट्रीय जनता दल साहिबगंज के जिला अध्यक्ष पद की निर्वाचन प्रक्रिया हेतु पार्टी संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकारों के अधीन सत्यनारायण यादव तीनपहाड निवासी को निर्वाची पदाधिकारी संजय भारद्वाज एवं सुखदेव विद्रोही के द्वारा जिलाध्यक्ष पद के लिए निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। वहीं 12 वीं बार जिलाध्यक्ष पद पर आसीन होने पर उनके समर्थकों में खुशी का माहौल देखने को मिला। और उनको चारों तरफ से बधाईयां आने लगा। वहीं निर्वाची पदाधिकारीयों द्वारा उन्हें जिलाध्यक्ष का प्रमाण पत्र सौंपा गया। इस दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं ने लालू यादव जिंदाबाद, तेजस्वी यादव, जिंदाबाद के नारे लगाए। इस मौके पर निर्वाची पदाधिकारी संजय भारद्वाज, सुखदेव विद्रोही, प्रदेश सचिव मुन्ना यादव, संजय यादव, पंचानन साहा, मुन्नवर हुसैन, युवा जिलाध्यक्ष सद्दाम हुसैन, जलपा हेंब्रम, जियाउर अंसारी, रामावतार सिंह, रेमाफुल हुसैन के अलावा सभी प्रखंड अध्यक्ष,डेलीगेट मेंबर के साथ सैकड़ों पार्टी कार्यकर्ता मौजूद थे।

# पीछे से टक्कर मारकर रौंद दिया जिससे युवक की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam साहिबगंज।** तीनपहाड़ थाना क्षेत्र अंतर्गत जस्कुटी मुख्य पथ के समीप बुधवार की दोपहर हाइवा (जेएच 01 बीजेड 4949) ने बाइक चालक लखीराम हांसदा 35 वर्ष को पीछे से टक्कर मारकर रौंद दिया जिससे युवक की घटनास्थल पर ही दर्दनाक मौत हो गई। मृत युवक निश्चिंता गाँव का रहने वाला बताया जा रहा है। मृत युवक अपने घर से तीनपहाड़ बाजार करने जा रहा था कि उसी दरमियान हाइवा ने बाइक चालक को कुचल दिया और हाइवा के ड्राइवर मौके देख फरार हो गए। घटना के वक्त दोनो हाइवा पर ओवरलोडेड स्टोन चिप्स था। घटना होते ही गाँव के ग्रामीण घटना स्थल पर भीड़ जुट गई। वहीं गाँव के ग्रामीणों ने घटना की जानकारी तीनपहाड़ थाना पुलिस को दिया, जिसके बाद तीनपहाड़ थाना प्रभारी एमके पांडेय, तालझारी थाना प्रभारी व अन्य पुलिस बल घटना स्थल पर पहुँच गए। जिसके बाद तीनपहाड़ थाना प्रभारी ने उग्र ग्रामीणों को समझाने मे जुट गए। इधर घटना की जानकारी मिलते ही बोरियो विधानसभा के पूर्व विद्यायक लोबिन हेम्ब्रम घटना स्थल पहुँच मृतक के स्वजनों एवं ग्रामीणों से घंटो बातचीत किया। जिसके बाद ग्रामीणों ने अपनी मांग मे कहा ग्रामीण सड़क मे रोजाना ओवरलोडेड हाइवा स्पीड मे पार होता है जिससे हमलोग काफी परेशान है। कई बार आर के एस के हाइवा चालक को समझाया गया जिसके बाद भी आर के एस के ड्राइवर सुधरने का नाम नही ले रही है।

### राजमहल विधायक ने विद्युत एमडी व जीएम से किए वार्ता,30 मेगावाट विद्युत आपूर्ति कर क्षेत्र को मिले निर्बाध बिजली

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam साहिबगंज।** राजमहल विधायक आदरणीय मो ताजउद्दीन उर्फ एमटी राजा ने राजमहल विधानसभा क्षेत्र सहित साहिबगंज जिला में लगातार बिजली संकट के कारण क्षेत्र के लोगों को हो रही परेशानी पर संज्ञान लेते हुए उन्होंने बुधवार को दूरभाष पर विद्युत विभाग के एमडी एवं जीएम सहित अन्य वरीय पदाधिकारी से वार्ता कर क्षेत्र में हो रही बिजली संकट के कारण उपभोक्ताओं को परेशानी से अवगत कराया. उन्होंने कहा कि काम मेगावाट बिजली मिलने से क्षेत्र के लोगों को रोटेशन में लंबे-लंबे अंतराल पर विद्युत आपूर्ति हो रही है. इस उमस भरी गर्मी में लोगों का जीना दुभर हो गया है.लगातार हो रही विद्युत समस्या से क्षेत्र के लोग परेशान हैं.विभाग इस पर त्वरित संज्ञान ले. 30 मेगावाट की विद्युत आपूर्ति क्षेत्र के लिए कराना सुनिश्चित करें ताकि क्षेत्र के लोगों को निर्बाध बिजली मिल सके. विभाग को कहा है कि रात्रि के समय से ही फूल मेगावाट बिजली उपलब्ध कराकर लगातार विद्युत आपूर्ति कराएं.उन्होंने स्थानीय पावर हाउस के पदाधिकारी एवं कर्मी को भी निर्देश देते हुए कहा है कि आवश्यकता के अनुरूप पर्याप्त मेगावाट बिजली मिलने के बाद बिजली कटौती की किसी प्रकार की शिकायत क्षेत्र से नहीं मिले इसका विद्युत कर्मी ध्यान रखेंगे.

### दो स्वास्थ्य केंद्रों देवपहाड़ एवं दुर्गाटोला में एएनएम की पदस्थापना कर दी

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam साहिबगंज।** बोरियो प्रखंड में डीसी के आदेश पर सिविल सर्जन प्रवीण कुमार संथालिया ने बोरियो सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अंतर्गत कई माह से रिक्त रहे दो स्वास्थ्य केंद्रों देवपहाड़ एवं दुर्गाटोला में एएनएम की पदस्थापना कर दी। मिली जानकारी के अनुसार जिला समन्वय समिति की समीक्षात्मक बैठक में लिए गए निर्णय के आलोक में डीसी के आदेश पर सीएस ने सीएचसी बोरियो के अंतर्गत आयुष्मान आरोग्य मंदिर देवपहाड़ में सदर अस्पताल साहिबगंज में प्रतिनियुक्ति एएनएम निशा टुडू एवं आयुष्मान आरोग्य मंदिर दुर्गाटोला में प्रेरणा भारती को पद स्थापित किया है। दोनों ने अपना योगदान बोरियो सीएचसी में दे दिया है। दोनों स्वास्थ्य केंद्रों में कई माह से एएनएम का पद रिक्त था।

### सड़क दुर्घटना में बची हुई घायल

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam साहिबगंज।** नगर के कुलीपाड़ा मोहल्ले में टोटो के टक्कर से 3 साल की बच्ची घायल हो गई घायल बच्ची को परिजनों ने इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया अस्पताल में चिकित्सक ऋतुराज के द्वारा इलाज प्रारंभ किया गया बताया जा रहा है कि कुलीपाड़ा निवासी मो आमीन इकबाल के 3 वर्ष कि पुत्री सड़क पर खेल रही थी उसी दौरान तेज रफ्तार टोटो चालक ई रिक्शा लेकर बरतल्लाह से रेलवे स्टेशन के तरफ जा रहा था. उसी दौरान 3 साल की बच्ची नुसरत प्रवीण को टोटो चालक ने टक्कर मार दिया टक्कर लगने से बच्ची मूर्छित हो गई और घायल हो गई।

# पूर्व विधायक अनंत ओझा ने नारियल फोड़कर रथ यात्रा शुरू

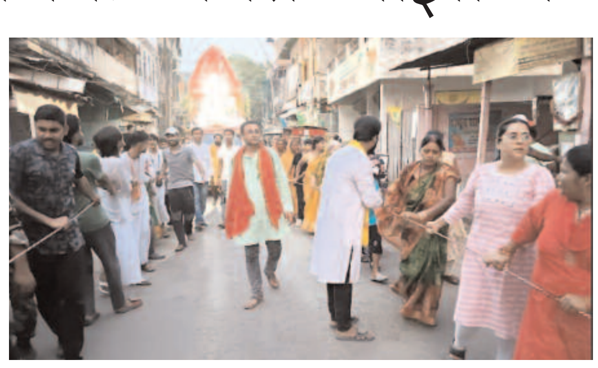

**आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam साहिबगंज।** भगवान जगन्नाथ बलभद्र बहन सुभद्रा जी का स्नान रथ यात्रा बुधवार को ढोल नगाड़ा गाजे बाजे कीर्तन के साथ रानी सती मंदिर से विधिवत रूप से निकला। पूर्व विधायक अनंत ओझा ने नारियल फोड़कर रथ यात्रा शुरू किया। इससे पूर्व बोरियो इस्कॉन मंदिर के मुख्य पुरोहित चन्दन प्रभु ने वैदिक मंत्रोचारण के साथ विधिवत रूप से भगवान जगन्नाथ भगवान बलभद्र बहन सुभद्रा का पूजन आरती किया, दोपहर में 56 भोग लगाया गया। उसके बाद भगवान को विधिवत रूप से रथ में विराजमान कराया और पूजा अर्चना किया। वही भक्तो ने जगत के पालनहार प्रभु जगन्नाथ बलभद्र बहन सुभद्रा का जयकारा लगाते हुए नगर भ्रमण कराया। नगर भ्रमण के दौरान जय जगन्नाथ, हरि बोल, के जयकारा लगा। स्नान रथ यात्रा शहर के पुरानी साहिबगंज, किदवई पथ, सकरूगढ़ पूर्वी फाटक, कॉलेज रोड, स्टेशन चौक, पटेल चौक, गांधी चौक होते हुए अमख पंचायत भवन बड़ी धर्मशाला पहुंचा। जगह जगह भगवान जगन्नाथ का पूजन किया गया, बाटा रोड में किन्नरों ने भी विधिवत रूप से पूजन किया। वही बड़ी धर्मशाला पहुंचने पर भगवान को विधिवत रूप से रथ से उतारकर पूजन स्थान ले जाया गया। जहां विधिवत रूप से स्नान पूजन कराया गया। जिसमें गंगा यमुना गंगोत्री, यमुनोत्री, हरिद्वार का जल से स्नान कराया गया। दूध, चन्दन, दही, मधु, ईख का रस, फल का रस, फूल, शुद्ध देशी घी, शंख का जल, सुगंधित तेल सहित अन्य से स्नान कराया गया। स्नान के बाद श्रृंगार करके पूजन आरती किया गया और भक्तों के बीच भगवान का प्रसाद वितरण किया गया। वही आज भगवान जगन्नाथ बलभद्र बहन सुभद्रा के साथ बोरियो इस्कॉन मन्दिर के लिए रवाना होंगे। पुरोहित ने बताया कि भगवान जगन्नाथ अपने भाई बहनों के साथ 15 दिनों का अनवसर वास पर जाएंगे। 15 दिनों बाद अनवसर से बाहर आयेगे, तब रथ यात्रा निकलेगी। मौके पर कन्हैया स्थान इस्कॉन मंदिर के मुख्य कृष्ण कृपा सिंधु दास, संजय पटेल, अजय कुमार, नितेश यादव, अंकित सर्राफ, रामानंद साह, बोरियो इस्कॉन मंदिर, बरहेट इस्कॉन मंदिर, कन्हैया स्थान इस्कॉन मंदिर, मालदा इस्कॉन मंदिर के भक्त सहित जिला से हजारों कृष्ण भक्त उपस्थित थे।

# झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड के अध्यक्ष सह मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव अविनाश कुमार से बिजली की समस्या को लेकर विधायक निसात आलम और तनवीर आलम ने किया मुलाकात

**अजय कुमार कुशवाहा आदिवासी एक्सप्रेस**
**पाकुड़** विधानसभा क्षेत्र में पिछले एक महीने से अनियमित विद्युत आपूर्ति से परेशान उपभोक्ताओं के लिए एक सुखद खबर सामने आई है पूरे मामले को लेकर पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र की विधायक सह निसात आलम एंव झारखंड कांग्रेस प्रदेश महासचिव तनवीर आलम ने झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड के अध्यक्ष सह मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव अविनाश कुमार से उनके रांची कार्यालय में मुलाकात कर समस्याओं से अवगत कराया है विधायक निसात आलम ने बताया कि पाकुड विधानसभा क्षेत्र में गर्मी के मौसम में बिजली की स्थिति काफी खराब हो गई है जितनी पावर सप्लाई हम लोगों के चाहिए उसके मुकाबले हम लोगों को पावर नहीं मिल रहा है इस कारण पावर ग्रिड और पावर सबस्टेशन से लोड सेटिंग के आधार पर विद्युत पावर सप्लाई की जाती है इस कारण कई घंटे तक अलग-अलग फिडर में विद्युत आपूर्ति बाधित होती है इससे उपभोक्ताओं को परेशानी होती है इसी के समाधान को लेकर वरिष्ठ आईएएस सह झारखंड बिजली वितरण निगम लिमिटेड अध्यक्ष अविनाश कुमार से मुलाकात किया गया है उन्होंने तत्काल विभाग के अधिकारियों से दूरभाष पर वार्ता कर सख्त निर्देश दिया इस दिशा में आवश्यक पहल करें ताकि पाकुड़ क्षेत्र में बिजली की समस्या ना हो और उपभोक्ताओं को नियमित बिजली प्राप्त हो सके।

## संक्षिप्त समाचार

### डोरंडा पावर हाउस के लंचर व्यवस्था को लेकर सैकड़ो की संख्या में लोगों ने घेराव किया

● 24 घंटे के अंदर विद्युत व्यवस्था में सुधार किया जाय, वर्ना फिर आंदोलन होगा

**गिरिडीह, प्रतिनिधि।** बुधवार को डोरंडा क्षेत्र के तमाम ग्राम वासियों सैकड़ो की संख्या में लंचर बिजली व्यवस्था के लेकर डोरंडा पावर हाउस का घेराव किया गया। लगातार कई दिनों से बिजली व्यवस्था काफी लचर हो गई है। प्रत्येक दिन 10 घंटा बिजली सुविधा दी जा रही है, जबकि ग्रामीणों का कहना है कि डोरंडा पावर हाउस होने के बावजूद बिजली व्यवस्था लंचर है, अगर 24 घंटा में 18 से 20 घंटा तक बिजली उपलब्ध नहीं करवाया जाता है तो डोरंडा पावर हाउस से लाइन सप्लाई नहीं करने दिया जाएगा ।इसके लिए सभी ग्रामीण बिजली विभाग से लड़ाई के लिए तैयार हैं। इसके लिए सड़क पर भी उतरना पड़ेगा तो सभी तैयार हैं। तमाम ग्रामीण उपस्थित हुए। मौके पर गौतम किशोर, सत्यम सिन्हा ,पंकज सिंह ,रामनिवास पांडे , संतोष राम, महेंद्र सिंह, पिंटू राम, राजेश बरनवाल, बबलू विश्वकर्मा, दीपक चंद्र, शिव वर्मा ,राहुल विश्वकर्मा आड़ सैकड़ो लोग सम्मिलित हुए।

### अपर समाहर्ता द्वारा उनके कार्यालय कक्ष में केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण प्रणाली की समीक्षा बैठक आयोजित

**गिरिडीह, प्रतिनिधि।** गिरिडीह उपायुक्त के निदेशानुसार अपर समाहर्ता द्वारा उनके कार्यालय कक्ष में केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण प्रणाली(सीपी ग्रामस) की समीक्षा बैठक आयोजित की गई । बैठक में पोर्टल पर प्राप्त होने वाले शिकायतों का जल्द से जल्द समाधान करने का निर्देश दिया। पोर्टल में विशेष रूप से जिन विभाग के मामले लंबित थे उसको 2 दिनों के अंदर निष्पादित करने का निर्देश दिया गया। केंद्रीकृत लोक शिकायत निवारण प्रणाली(सीपी ग्रामस) एक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म है जिसके माध्यम से कोई नागरिक किसी भी विभाग से संबंधित अपनी शिकायत दर्ज करा सकता है। यह प्रणाली शिकायतों के पंजीकरण, उनका मॉनिटरिंग, संबंधित विभागों को फॉरवर्डिंग और समाधान की समयबद्धता सुनिश्चित करता है। शिकायतकर्ता अपनी शिकायत की स्थिति को ट्रैकिंग सुविधा के माध्यम से देख सकते है। दूरदराज के लोगो को इस सुविधा के माध्यम से काफी सहायता मिली है। इस ऑनलाइन प्रणाली से, विभागीय जवाबदेही और लोक शिकायत निवारण में काफी सहायता मिली है। यह समयबद्धता एवं पारदर्शिता के साथ कार्य करता है। सभी नागरिकों को सूचित किया जाता है कि वे किसी भी सरकारी सेवा या विभाग से जुड़ी समस्या या शिकायत होने पर www.pgportal.gov.in पर लॉग इन कर अपनी शिकायत दर्ज कर सकते है।

### नशा मुक्ति अभियान के तहत जिले के विभिन्न प्रखंडों में भारत को नशा मुक्त बनाने का शपथ लिया गया

**आदिवासी एक्सप्रेस**
**हजारीबाग।** उपायुक्त शशि प्रकाश सिंह के निर्देशानुसार नशा मुक्त अभियान के तहत जिले के विभिन्न प्रखंड कार्यालयों, पंचायत क्षेत्रों व नगर निगम क्षेत्र अंतर्गत जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। साथ ही लोगों को नशा मुक्त भारत बनाने में सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु शपथ दिलाई गई। इसी उद्देश्य के तहत डाडी, बड़कागांव प्रखंड सहित अन्य प्रखंडों में आंगनबाड़ी सेविका, प्रखंड एवं अंचल के सभी कर्मी द्वारा नशा मुक्त अभियान के तहत शपथ ली गई। वहीं हजारीबाग नगर निगम के सफाई शाखा में नगर आयुक्त महोदया की अध्यक्षता में सभी वार्ड जमादार, टिपर ड्राइवर और सफाईकर्मी के बीच भारत को नशामुक्त बनाने का शपथ लिया गया।

# गिरिडीह समाहरणालय सभागार में उपायुक्त रामनिवास यादव की अध्यक्षता में मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास एवं अन्य योजनाओं की समीक्षा बैठक आयोजित कर दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

● योजनाओं को धरातल पर लाने हेतु केवल कार्यालय में नहीं बल्कि स्वयं क्षेत्र भ्रमण करें सभी पदाधिकारी: उपायुक्त

● सभी योजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के साथ-साथ सभी योग्य लाभुकों को चिन्हित करना आवश्यक: उपायुक्त

● योजनाओं के क्रियान्वयन एवं लाभुको को लाभान्वित करने में कोताही बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जाएगी: उपायुक्त

● जरूरतमंद एवं योग्य लाभुकों को ही मिले आवास का लाभ , जनसमस्याओं का समाधान पहली प्राथमिकता: उपायुक्त

**शुभम सौरभ**
**गिरिडीह, विशेष प्रतिनिधि।** समाहरणालय सभागार में जिला उपायुक्त रामनिवास यादव की अध्यक्षता में मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास एवं अन्य योजनाओं को लेकर पदाधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक का आयोजन किया। बैठक के दौरान उपायुक्त ने विभिन्न विभागों द्वारा किए जा रहे कार्यों से संबंधित पूर्व में किए गए बैठक में दिए गए दिशा- निर्देशों की समीक्षा करते हुए कार्य प्रगति की जानकारी प्राप्त की तथा योजनाबद्ध तरीके से कार्य करते हुए लंबित कार्य को जल्द से जल्द पूर्ण करने के निर्देश दिए।

**सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को दिए गए सख्त निर्देश, योजनाओं के क्रियान्वयन में समयबद्धता के साथ कार्य करें, किसी भी कीमत पर कोताही बरदाश्त नहीं की जाएगी**

बैठक में केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित मनरेगा, आवास सहित विभिन्न विकासात्मक योजनाओं की बारी-बारी समीक्षा करते हुए सभी संबंधित अधिकारियों को निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप शत-प्रतिशत प्रगति सुनिश्चित करने का सख्त निर्देश दिया गया। बैठक में उपायुक्त ने मनरेगा के तहत कार्यान्वित योजनाओं में दीदी बड़ी, बिरसा हरित ग्राम योजना, बिरसा हरित सिंचाई कूप संवर्धन योजना, पौधारोपण, डोभा, पशु शेड समेत विभिन्न विकासात्मक योजनाओं की बारी-बारी समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। इसके साथ ही आवास योजनाओं की समीक्षा करते हुए उन्होंने अब तक हुए प्रगति की समीक्षा किए। साथ ही साथ तय समय पर सभी योजनाओं को पूर्ण करने का निर्देश भी दिए।

**पदाधिकारी क्षेत्र भ्रमण कर स्वयं निरीक्षण करें**

इसके अलावा उपायुक्त ने सभी संबंधित अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्र अंतर्गत किए जा रहे कार्यों की निरीक्षण करते हुए प्रतिवेदन समर्पित करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि योजनाओं को धरातल पर उतरने के लिए स्वयं निरीक्षण करना आवश्यक है। सभी योजनाओं के प्रगति की समीक्षा प्रतिवेदन समर्पित कर पारदर्शिता एवं गुणवत्तापूर्ण कार्य करने सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। वहीं उपायुक्त ने विभिन्न विभागों अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में आने वाली समस्याओं पर चर्चा कर आपसी समन्वय स्थापित करते हुए संबंधित विभाग से सम्पर्क स्थापित कर कार्य करने की बात कही। समीक्षा के क्रम में उपायुक्त ने सभी विभागों को सख्त निर्देश दिया कि विकास कार्य प्रभावित न हो, योजनाओं के क्रियान्वयन एवं लाभुको को लाभान्वित करने में लापरवाही बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने कहा कि जो भी लोग गरीब हैं और उन्हें आवास नहीं मिला है, वैसे लोगों को प्राथमिकता देते हुए जल्द से जल्द आवास के लाभ से लाभान्वित करवाए। इसके साथ ही उन्होंने पदाधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि वे आपसी समन्वय स्थापित करते हुए योजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी लाएं एवं प्रगति सुनिश्चित करें। वहीं सभी प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी को मनरेगा में प्रतिदिन अनुश्रवण करते हुए शत-प्रतिशत उपलब्धि हासिल करने का भी निर्देश दिया।

बैठक में उप विकास आयुक्त, निदेशक डीआरडीए, सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी, सभी बीपीओ, जिला समन्वयक, प्रधानमंत्री आवास समेत अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

# जमीन विवाद में पीड़ित ने लगाया मारपीट और जानलेवा हमला करने का आरोप, पुलिस अधीक्षक को दिया आवेदन

**गिरिडीह, प्रतिनिधि।** जिले के जमुआ प्रखंड अंतर्गत ग्राम चुंगलखार (मंझला टोला) के सुजीत पाण्डेय ने जमीन पर जबरन दीवाल देने एवं जानलेवा हमला करने के संबंध में गिरिडीह पुलिस अधीक्षक को दिया आवेदन। आवेदन में सुजीत पाण्डेय पिता स्व वासुदेव पाण्डेय ग्राम चुंगलखार (मंझला टोला) थाना हिरोडीह ने उल्लेख किया हैं कि मेरा गोतिया 1. उमेश चंद्र पाण्डेय 2. दिगम्बर पाण्डेय दोनों पिता स्व लाल बिहारी पाण्डेय 3. रंजीत पाण्डेय पिता उमेश चंद्र पाण्डेय 4. चम्पा देवी पति उमेश चंद्र पाण्डेय 5. सोनी देवी पति रंजीत पाण्डेय, 6. मनीषा देवी पति संजीत पाण्डेय 7. पर्मिला देवी पति दिगम्बर पाण्डेय सभी सकिनान ग्राम चुंगलखार का नजर मेरे हिस्से कि जमीन पर है और मेरे हिस्से कि जमीन को हड़पने के लिए उपरोक्त लोग तरह-तरह से षड्यंत्र रचते रहते है और उपरोक्त सभी लोग मिलकर दिनांक 19/03/2025 को मेरे जमीन पर जबरदस्ती मकान बना रहे थे जब मैंने मना किया तो सभी लोगों ने मुझपर

एवं मेरे परिवार वालों पर जानलेवा हमला किया था, जिसमे मै और मेरी माँ एवं अन्य सदस्य गंभीर रूप से जखमी हुए थे जिनका इलाज अभी चल रहा है और उस घटना से संबंधित दोनों पक्षों के बीच हिरोडीह थाना से मुकदमा दर्ज किया गया जिसका नं0 हिरोडीह थाना काण्ड संख्या 33/25 एवं 34/25 जो अभी न्यायालय में लंबित है बावजूद इसके उपरोक्त वर्णित लोगों का मनोबल काफी बढ़ा हुआ है और आए दिन ये लोग हमलोगों को जान से मारने का षड्यंत्र रचते रहते है और इसी षड्यंत्र के तहत दिनांक 05/06/2025 को पुनः सभी ने मिलकर मेरे हिस्से कि जमीन पर काम लगा दिया जब हम मना करने गए तब जान से मारने का धमकी देता है, इस बात कि सूचना फोन के माध्यम से मैंने हिरोडीह थाना में दिया तो वहाँ से कोई भी कार्यवाही नहीं किया गया। उक्त लोग बाजबर्दस्ती मेरे हिस्से कि जमीन को हड़पना चाह रहे हैं मना करने पर पूर्व मे भी जानलेवा हमला कर चुके हैं और कभी भी हमलोगों कि जान ले सकते है और मेरे हिस्से कि जमीन पर अवैध रूप से कब्जा करने एवं मना करने पर जानलेवा हमला करने एवं धमकी देने के कारण मै एवं मेरा पूरा परिवार उक्त लोगों से भयभीत है क्योंकि 19/03/2025 को उक्त लोगों ने हमलोगों के ऊपर जानलेवा हमला करने के बावजूद खुले आम घूम रहे है और थाना से उन्हे अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया है इसलिए उनलोगों का मानोबल बढ़ा हुआ है। अतः श्रीमान से अनुरोध है कि उपरोक्त तथ्यों कि जांच पड़ताल कर उचित कानूनी कार्यवाई करने का आदेश हिरोडीह थाना को अविलंब देने का कृपा प्रदान करे ताकि मेरे एवं मेरे परिवार के जान व माल कि रक्षा हो सके।

### जमुआ में बिजली की लचर व्यवस्था को लेकर जमुआ विधायक मंजू कुमारी ने जताई नाराज़गी ! दिया 24 घंटे का अल्टीमेटम, सुधार नहीं तो होगा आंदोलन

● जिला मुख्यालय से लेकर प्रखंड मुख्यालयों के कर्मी भ्रष्टाचार में लिप्त है: मंजू कुमारी

● बिजली कटौती को लेकर विधायक ने किया प्रेस कॉन्फ्रेंस

● जमुआ स्वास्थ्य केंद्र में गर्भवती महिलाओं की देखरेख और आवश्यक सामग्री के वितरण में हो रही लापरवाही पर भी नाराज़गी जताई

● दो दिनों के भीतर बिजली व्यवस्था में सुधार नहीं हुआ तो होगा आंदोलन: जमुआ विधायक मंजू कुमारी

**शुभम सौरभ**
**गिरिडीह, विशेष प्रतिनिधि।** जमुआ विधानसभा में बिजली कटौती को लेकर जमुआ विधायक मंजू कुमारी ने बुधवार को जमुआ प्रखंड के डाक-बंगला में प्रेसवार्ता की। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में बिजली आपूर्ति को लेकर लगातार बिजली विभाग के अधिकारियों से बात कर रही हूं, ताकि विधानसभा में बिजली बहाल हो सके। इस भीषण गर्मी में जमुआ और देवरी में लो वोल्टेज के साथ मात्र दो से तीन घंटे से भी कम बिजली आपूर्ति की जा रही है। उन्होंने बिजली विभाग की कार्यशैली पर जमकर निशाना साधा और चेतावनी भरे लहजे में कहा कि यदि दो दिनों के भीतर बिजली व्यवस्था में सुधार नहीं हुआ, तो आंदोलन किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बिजली समस्या को लेकर विभाग को ज्ञापन सौंपेंगे। कहा कि बिजली नहीं रहने के कारण विद्यार्थियों को पढ़ाई करने में काफी दिक्कते हो रही है। किसान पटवन नहीं कर पा रहे हैं। वहीं महागठबंधन की राज्य सरकार पर भड़ास निकालते हुए कहा कि यहां की सरकार विकास विरोधी है। जिला मुख्यालय से लेकर प्रखंड मुख्यालयों के कर्मी भ्रष्टाचार में लिप्त है। वहीं स्वास्थ्य विभाग के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जमुआ में लोगों को सही सुविधाएं नहीं मिलने पर नाराजगी जताई। कहा कि इसके पूर्व भी संबंधित विभाग के सीएस को असुविधाएं की जानकारी दी गई थी। लेकिन उनके कानों तक जूं तक नहीं गुंजी। कहा कि अगर संबंधित विभाग के कर्मी अपने रूपों को नहीं सुधरे तो जोरदार आंदोलन किया जाएगा।

**दोनों प्रखंडों में बिजली विभाग द्वारा की जा रही अनियमित बिजली आपूर्ति से आम जनता त्रस्त**

जमुआ विधायक मंजू कुमारी ने कहा कि जमुआ विधानसभा क्षेत्र के दोनों प्रखंडों में बिजली विभाग द्वारा की जा रही अनियमित बिजली आपूर्ति से आम जनता त्रस्त है। लताकी फीडर, जमुआ फीडर, करहरी फीडर, चिलगा फीडर समेत फ़िडरों में 24 घंटे में मात्र दो घंटे ही बिजली दी जा रही है, जिससे लोगों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि सोमवार को बिजली विभाग के अधिकारियों से उनकी बातचीत हुई थी, जिसमें विभाग ने तकनीकी कारणों का हवाला देते हुए समस्या के शीघ्र समाधान का आश्वासन दिया।

**क्या तकनीकी समस्या सिर्फ जमुआ विधानसभा में ही है**

जमुआ विधायक मंजू कुमारी ने दो टूक कहा कि अगर 24 घंटे के भीतर बिजली आपूर्ति सुचारु नहीं होती है, तो प्रखंड कार्यालय से लेकर बिजली विभाग के मुख्यालय तक धरना-प्रदर्शन किया जाएगा और घेराव भी होगा।

**जमुआ और देवरी प्रखंड के भ्रष्ट अधिकारियों को भी कड़ी चेतावनी दी**

इसी के साथ उन्होंने जमुआ और देवरी प्रखंड के भ्रष्ट अधिकारियों को भी कड़ी चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि भ्रष्ट रवैये को छोड़कर जनसेवा करें, अन्यथा जनता के सहयोग से इन भ्रष्ट पदाधिकारियों के कार्यालयों का घेराव किया जाएगा और उनकी मनमानी नहीं चलने दी जाएगी। जमुआ विधायक मंजू कुमारी ने सभी सरकारी दफ्तरों में पदस्थापित अधिकारियों को अल्टीमेटम देते हुए कहा कि वे अपने कार्यों में सुधार लाएं, नहीं तो उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

**जमुआ स्वास्थ्य केंद्र में गर्भवती महिलाओं की देखरेख और आवश्यक सामग्री के वितरण में लापरवाही**

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान उन्होंने जमुआ स्वास्थ्य केंद्र में गर्भवती महिलाओं की देखरेख और आवश्यक सामग्री के वितरण में हो रही लापरवाही पर भी नाराज़गी जताई और इस संबंध में सिविल सर्जन से कार्रवाई की मांग की।

**इनकी थीं मौजूदगी**

मौके पर भाजपा नेता राजेंद्र राय, परमेश्वर यादव, प्रदीप सिंह, गोपाल कृष्ण पांडेय, रूपलाल दास, विनय राय, महेश सिंह, सोनू मोदी, सुनील राय, दयानंद राय, राजकुमार सिंह, परिणय सिन्हा, अनुपम सिन्हा, पप्पू वर्मा, रंजन सिंह, सुमित कुमार, संजय सिंह आदि अन्य उपस्थित थे।

# पंचायत सचिवालय नावाडीह एवं जरिड़ीह में कानूनी जागरूकता सह साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन

**गिरिडीह, प्रतिनिधि।** न्याय आपके द्वारा अब पहुंचने लगा लोग क़ानून का लाभ लेने लगेगा है अब सरकार की सभी योजनाओं का लाभ अब लोगो को मिलने लगा है समाज के गरीब, कमजोर तथा पीड़ित वर्ग के लोगों को निशुल्क सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से नालसा नई दिल्ली और झालसा रांची के आदेशानुसार एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकार गिरिडीह के द्वारा चलंत लोक अदालत के माध्यम से पंचायत सचिवालय नावाडीह एवं पंचायत सचिवालय जरिड़ीह में कानूनी जागरूकता सह साक्षरता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में माध्यस्था केंद्र के अधिवक्ता उदय मोहन पाठक एवं मोहम्मद शाहनवाज आलम पारा लीगल वॉलिंटियर सरोजित कुमार, रमेश कुमार,कामेश्वर कुमार,हीरा देवी, सुबोध कुमा साव ने अपने विचारों को रखा। कार्यक्रम को

संबोधित करते हुए उदय मोहन पाठक ने कहा कि जिले में लोक अदालत के माध्यम से सुलहनिए योग्य मामलों का निष्पादन निशुल्क किया जाता है।

अधिवक्ता मो. शाहनवाज़ ने जिला विधिक सेवा प्राधिकार के बारे में बताते हुए कहा कि विधिक सेवा प्राधिकार अधिनियम 1987 के अंतर्गत प्रत्येक जिले में इसका गठन किया गया है। हमारे देश के संविधान के अनुच्छेद 39-क में हर नागरिकों को सामाजिक न्याय प्राप्त करने का अधिकार है। ताकि कोई भी व्यक्ति आर्थिक या किसी अन्य कारण से न्याय से वंचित न रह सकता है। जिला विधिक सेवा प्राधिकार न्याय पाने योग्य व्यक्तियों को निशुल्क कानूनी सेवा उपलब्ध कराता है। वहीं विवादों के निपटने के लिए लोक अदालत के माध्यम से आपसी समाधान के जरिए विवादों के निपटारा कराए जाते हैं। प्रशिछु अधिवक्ता अर्क रंजन जिला विधिक सेवा प्राधिकार के तहत निशुल्क कानूनी सेवा के लिए योग्य व्यक्ति वह होंगे जिनका वार्षिक आय 3 लाख से कम हो, कोई भी महिला या कोई भी बच्चा, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, दिव्यांग व्यक्ति , हिरासत में रह रहे व्यक्ति, आपदा हिंसा, बाढ़, सूखा ,भूकंप, मानव तस्करी, दुर्व्यवहार आदि से प्रभावित व्यक्ति।उक्त अवसर पर नावाडीह के मुखिया संतोष वर्मा जरीडीह के मुखिया अनिता देवी जेएसएलपीएस के सीसी बालेश्वर सिंह पंचायत सचिव कांत वर्मा दिनेश हाज़रा, उपमुखिया, वर्डसदस्य,पंचायंत समिति सदस्य, महिला समूह की सदस्य उद्दीन अंसारी मकसूद अंसारी अजय वर्मा मितान महतो पीताम्बर पाण्डेय गीता देवी ममता शर्मा रुक्मणी देवी पुष्पा देवी मितन महतो ग्रामीण उपस्थित थे।

# गिरिडीह उपायुक्त ने जल जीवन मिशन एवं जलापूर्ति तथा स्वच्छता योजना समेत विभिन्न योजनाओं की बारी-बारी समीक्षा की, दिए जरूरी दिशा-निर्देश

● पूरी पारदर्शिता व गुणवत्ता के साथ करें जल जीवन मिशन से संबंधित कार्य : उपायुक्त

● शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में खराब पड़े चापानलों एवं जालमीनार को जल्द ही दुरुस्त कराए: उपायुक्त

**शुभम सौरभ**
**गिरिडीह, विशेष प्रतिनिधि।** समाहरणालय सभागार में उपायुक्त रामनिवास यादव की अध्यक्षता में जल जीवन मिशन एवं जलापूर्ति तथा स्वच्छता योजना समेत विभिन्न योजनाओं की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में उपायुक्त द्वारा पूर्व की बैठक में दिए गए दिशा-निर्देश के अनुपालन को लेकर समीक्षा किया गया तथा जलापूर्ति योजना के क्रियान्वयन, पेयजल समस्या के निराकरण और जल जीवन मिशन के तहत योजनाओं की प्रगति पर चर्चा की गई। जनशिकायतों एवं समाचार पत्रों के माध्यम से प्राप्त होने वाले

पेयजल से सभी संबंधित सभी समस्याओं का निराकरण करते हुए प्रतिवेदन समर्पित करने का निर्देश दिया। सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को योजनाओं की जांच करते हुए उसका जल्द से जल्द निराकरण करने का निर्देश दिया। जल जीवन मिशन के तहत पेयजल आपूर्ति योजना के क्रियान्वयन हेतु एवं पेयजल समस्या का त्वरित निराकरण करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए गए।

**सभी आंगनबाड़ी केंद्रों एवं विद्यालयों में पेयजल की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित करें**

बैठक के दौरान जल जीवन मिशन के तहत सभी गांवों, स्कूलों, आंगनवाड़ी केंद्रों और अन्य संस्थानों में पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने का निर्देश देते हुए गिरिडीह उपायुक्त रामनिवास यादव ने सभी संबंधित अधिकारियों को क्षेत्र भ्रमण कर पेयजल की संचालित योजनाओं में आ रही समस्याओं की जांच करने एवं समस्याओं का सामाधान करने को कहा। उन्होंने कहा कि भीषण गर्मी में पानी की किल्लत न हो, लोगों को सुगम रूप से जल की उपलब्धता सुनिश्चित हो, इसके लिए कार्य करें। खास कर विद्यालयों ओर आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों को पेयजल की पर्याप्त उपलब्धता हो सुनिश्चित करें।साथ ही क्षेत्र भ्रमण के दौरान पाए जाने वाले खराब चापाकलों/ नलकूपों/ जलमीनारों की जल्द से जल्द मरम्मती सुनिश्चित कराएं। बैठक में पेयजल आपूर्ति से संबंधित कार्य, पेयजल स्त्रोतों की स्थिति, पानी टंकी की स्थिति, मरम्मत कार्य आदि से संबंधित विषयों पर विस्तारपूर्वक चर्चा कर आवश्यक व उचित दिशा निर्देश दिया गया। प्रखंडवार ओडीएफ प्लस सहित अन्य बिंदुओं पर भी बारी-बारी से समीक्षा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। इसके अलावा बैठक में उपायुक्त ने स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण को लेकर किए जा रहे कार्यों की भी समीक्षा की। बैठक में उप विकास आयुक्त, डीआरडीए डायरेक्टर,समाज कल्याण पदाधिकारी ,जिला जनसंपर्क पदाधिकारी ,जिला पंचायती राज पदाधिकारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी, सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी, सभी सहायक अभियंता, कनीय अभियंता, सभी प्रखंड समन्वयक एवं संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

## संक्षिप्त समाचार

### हरे पेड़ लगाकर राजद अध्यक्ष लालू यादव का मनाया गया जन्म दिन

**बांका संवाददाता श्रीकान्त यादव**
बांका कटोरिया क्षेत्र के जमदाहा पंचायत अतर्गत खोनाटीकर गाँव में राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लालू प्रसाद यादव जी के 78वाँ जन्म दिवस समारोह मनाया गया। जिसमें सामाजिक न्याय एवं सद्भाव दिवस के रूप में दलित महादलित वंचित शोषित समाज के टोला में गरीब बच्चों को भोजन खिलानें तथा पठन-पाठन सामाग्री का वितरण करनें के बाद पौधारोपण कर बैनर तले धूम-धाम से मनाया गया। मैके पर राजद अध्यक्ष मीर अख्तर अली प्रावण्ड प्रकोष्ठ अध्यक्ष पिन्टु पोद्दार प0 अध्यक्ष सुरेश यादव युवा समाजसेवी राजद कार्यकत्ता दिलीप कुमार एवं प्रकाश मोहली के साथ, मिथुन कुमार, सुभाष मोहली,किशोर मंडस अन्य ग्रामीण मौजूद थे।

### शिबू सोरेन के नाम पर हो बोकारो हवाई अड्डा, सरना विकास समिति ने बैठक कर की मांग

**संवाददाता द्वारा**
**बोकारो।** बोकारो सरना विकास समिति ने बोकारो हवाई अड्डे का नाम झारखंड के वरिष्ठ नेता और दिशोम गुरु शिबू सोरेन के नाम पर रखने की मांग की है। इस संबंध में समिति की एक अहम बैठक बुधवार को सेक्टर-12 में आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता महेश मुंडा ने की। बैठक में समिति के सदस्यों ने एकमत से कहा कि दिशोम गुरु शिबू सोरेन की कर्मभूमि बोकारो रही है और उन्होंने आदिवासी समाज के उत्थान के लिए लंबा संघर्ष किया है। ऐसे जननायक के नाम पर बोकारो एयरपोर्ट का नामकरण होना चाहिए। बैठक में वक्ताओं ने कहा कि जैसे पटना एयरपोर्ट का नाम छात्र आंदोलन के नायक जयप्रकाश नारायण के नाम पर है, कोयलांचल विश्वविद्यालय का नाम बिनोद बिहारी महतो के नाम पर और नया मेडिकल कॉलेज स्व. जगन्नाथ महतो के नाम पर बन रहा है, वैसे ही बोकारो एयरपोर्ट का नाम दिशोम गुरु के नाम पर रखना न्यायोचित होगा।
महेश मुंडा ने कहा कि सरना विकास समिति का एक प्रतिनिधिमंडल जल्द ही मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मिलकर इस संबंध में ज्ञापन सौंपेगा। समिति ने केंद्र सरकार से भी इस मांग पर विचार करने की अपील की है। बैठक में चंदू सिंह मुंडा, अजय सवांइयां, संजू सामंता, मणिलाल मुंडा, गणेश बिरूआ, रोहित कच्चप, आकाश सोय और लक्ष्मण मरांडी सहित कई सदस्य उपस्थित थे।

### झारखंड में हुक्का बार पर बैन, पब्लिस प्लेस में सिगरेट पीने पर लगेगा 1000 रुपये जुर्माना

**क्राइम संवाददाता द्वारा**
**रांची।** झारखंड में हुक्का बार पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। साथ ही सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान तथा तंबाकू एवं इसके उत्पादों के सेवन तथा थूकने पर भी रोक होगा। यह जमानती लेकिन संज्ञेय अपराध होगा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पाद (विज्ञापन का प्रतिषेध और व्यापार तथा वाणिज्य, उत्पादन, प्रदाय और वितरण विनियमन) (झारखंड संशोधन) विधेयक, 2021 पर अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है। इस विधेयक में ही रोक तथा दंड और सजा का प्रविधान किया गया है। झारखंड विधानसभा ने 22 मार्च 2021 को ही इस विधेयक को पारित कर राज्यपाल के माध्यम से राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिए भेजा था। स्वीकृति के बाद विधेयक राजभवन को मिल गया है। विधि विभाग द्वारा संशोधन अधिनियम अधिसूचित किए जाने के साथ ही यह लागू हो जाएगा।
इस संशोधन विधेयक में कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति सार्वजनिक स्थानों पर तंबाकू या इसके उत्पादों का सेवन नहीं करेगा। सेवन का मतलब धूम्रपान और तंबाकू एवं इसके उत्पादों के थूकने से है। इसमें अधिनियम के उल्लंघन करने पर दंड की सीमा भी पांच गुना बढ़ाकर दो सौ से एक हजार रुपये कर दी गई है। इसमें 21 वर्ष से कम आयु के लोगों को तंबाकू बेचना दंडनीय अपराध की श्रेणी में रखा गया है।
संशोधन विधेयक में यह प्रविधान किया गया है कि कोई व्यक्ति स्वयं के लिए किसी अन्य के लिए किसी स्थान पर हुक्का बार का संचालन नहीं करेगा। इसका सार्वजनिक खानपान के स्थान पर भी प्रतिबंध रहेगा। इस तरह, होटल, रेस्तरां, बार में भी इसका संचालन नहीं होगा।हुक्का बार चलाने पर एक लाख तक दंड होगा जो 50 हजार रुपये से कम नहीं होगा। साथ ही इस अपराध में तीन साल तक की सजा होगी जो एक वर्ष से कम नहीं होगा।इस संशोधन के तहत स्कूल, अस्पताल, स्वास्थ्य संस्थान, सार्वजनिक कार्यालय के 100 मीटर की परिधि में सिगरेट एवं तंबाकू उत्पादों की बिक्री पर प्रतिबंध होगा। साथ ही कहीं भी खुला सिगरेट या इसका खुला पैकेट की बिक्री नहीं होगा।

### पहले लाठी, अब तलवार, कल एके-47 से केक काटेंगे?, लालू यादव पर मांझी का तंज

**नई दिल्ली।** बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने अपने जन्मदिन के अवसर पर तलवार से केक काटा, जिस पर राजनीति गरमाई हुई है। तलवार से केक काटने पर केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने लालू यादव पर तल्ख टिप्पणी की। मांझी ने सवाल करते हुए कहा कि जब वह सत्ता में थे तो लाठी की राजनीति करते थे, अब तलवार से केक काटकर क्या संदेश देना चाहते हैं? समाचार एजेंसी आईएएनएस से खास बातचीत में जीतन राम मांझी ने कहा कि लालू यादव से मेरा कोई व्यक्तिगत बैर नहीं है। मैं सिर्फ उनके कार्यों और कृत्यों को देखता हूं। जब वह सत्ता में थे, तो लाठी बजाओ, तेल पिलाओ की नीति से लोगों को गुमराह किया। कानून-व्यवस्था को भी बिगाड़ा और आज वह तलवार से केक काटते हैं। क्या तलवार से केक काटना उचित है? वह क्या जताना चाहते हैं? पहले लाठी लहराकर समाज को भटकाया और अब तलवार से केक काटकर अपनी ताकत दिखाना चाहते हैं? मांझी ने आगे कहा कि तलवार से केक काटने से उन्हें कोई फायदा नहीं होगा। यह गलत है। तलवार से केक काटना गलत है। अगर कल उन्हें सत्ता मिली, तो क्या वह एके-47 से केक काटेंगे? क्या यह उचित है? समाज को यह समझना चाहिए, इसलिए मैंने पोस्ट किया।

# कोल इंडिया परिवार के वैभव कुमार ने यूपीएससी-2024 में पाया 90वां रैंक, सीसीएल ने किया सम्मानित

**संवाददाता द्वारा**
आज 11 जून, 2025 को यूपीएससी-2024 परीक्षा में 90वां रैंक हासिल करने वाले, सेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड , कुजू क्षेत्र के अमला अधिकारी(प्रोजेक्ट एंड प्लानिंग) श्री वीरेश कुमार के सुपुत्र वैभव कुमार से सीसीएल सीएमडी श्री निलेंदु कुमार सिंह ने मुलाकात कर उन्हें सम्मानित किया।
इस अवसर पर सीएमडी श्री निलेंदु कुमार सिंह ने वैभव के माता-पिता श्री वीरेश कुमार एवं श्रीमती सुनीता कुमारी को भी शॉल एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया। इस खास मौके पर सीसीएल सीएमडी के साथ-साथ निदेशक(वित्त) श्री पवन कुमार

मिश्रा, निदेशक (मानव संसाधन) श्री हर्ष नाथ मिश्र, निदेशक (तकनीकी/संचालन) श्री चंद्र शेखर तिवारी, मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री पंकज कुमार सहित सीसी एवं पीआर विभाग के विभागाध्यक्ष श्री आलोक गुप्ता सहित अधिकारीगण उपस्थित रहें।
सीसीएल सीएमडी श्री निलेंदु कुमार सिंह ने कहा कि, ÷वैभव की यह सफलता केवल उनके परिवार की नहीं, बल्कि पूरे सीसीएल परिवार की सफलता है। आपने न सिर्फ अपने माता-पिता, बल्कि पूरे कोल इंडिया समूह को राष्ट्रीय पटल पर गौरवान्वित किया है। आप जिस पद पर होंगे, वहाँ से समाज के लिए सकारात्मक बदलाव की दिशा में कई कार्य कर सकते हैं। हमें गर्व है कि आप कोल इंडिया परिवार का हिस्सा हैं।
सीसीएल वृहद परिवार की तरफ से आपको हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।÷उल्लेखनीय है कि वैभव कुमार ने वर्ष 2023 में भी यूपीएससी परीक्षा में 151वीं रैंक प्राप्त की थी और वर्तमान में वे भारतीय राजस्व सेवा द्धत्र्क्र (ष्ट×द्धज्ञ) में कार्यरत हैं। इस बार की बेहतर रैंकिंग से उनके उज्जवल भविष्य की संभावनाएं और भी प्रबल हुई हैं।
वैभव कुमार की इस प्रेरणादायक यात्रा पर आधारित एक शॉर्ट फिल्म सीसीएल सीएमडी के सामने भी प्रदर्शित की गई, जिसमें उनके संघर्ष, समर्पण और सफलता की कहानी को भावनात्मक रूप से चित्रित किया गया था। इस फिल्म ने वैभव की उपलब्धि के पीछे की मेहनत और परिवार के योगदान को उजागर किया।सीएमडी श्री सिंह द्वारा ऐसे प्रेरणादायी सम्मान समारोहों का आयोजन ऐसे उपलब्धियों के समय किया जाता रहा है, ताकि सीसीएल परिवार के सदस्य एक-दूसरे की उपलब्धियों को साझा कर सकें और एकजुटता व प्रेरणा का भाव बना रहे।सीसीएल परिवार की ओर से वैभव कुमार को हार्दिक बधाई एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएं।

# तत्काल योजना में संशोधन

**संवाददाता द्वारा**
आम आदमी को तत्काल ट्रेन टिकटों का लाभ देने हेतु भारतीय रेलवे द्वारा कई कदम उठाते हुए नियमों में कुछ संशोधन किए गए हैं :-1. टिकट बुकिंग के लिए गलत सॉफ्टवेयर (Bot Softwares) का उपयोग करने के लिए पिछले छह महीनों में 2.5 करोड़ संदिग्ध IRCTC आईडी ब्लॉक की गई हैं। 2. व्यक्तिगत उपयोगकर्ताओं के लिए तत्काल ई-टिकट बुक करने के लिए अब आधार को अनिवार्य बना दिया गया है। 3. रेलवे काउंटर/विंडो पर तत्काल टिकट बुकिंग के लिए यात्रियों/प्रतिनिधियों को मोबाइल नंबर और ओटीपी प्रदान करना होगा। मोबाइल/ओटीपी के सफल प्रमाणीकरण के बाद ही तत्काल टिकट जारी हो पायेगा । 4. तत्काल टिकट बुकिंग के पहले 30 मिनट केवल व्यक्तिगत ऑनलाइन उपयोगकर्ताओं और स्टेशनों पर

पीआरएस काउंटर से टिकट बुक करने वाले व्यक्तियों के लिए उपलब्ध होंगे।
5. ट्रैवल एजेंट और अधिकृत एजेंसियां आधे घंटे के बाद ही टिकट बुक कर सकती हैं, यानी ट्रैवल एजेंट एसी क्लास में 10:30 बजे से और नॉन एसी के लिए 11÷30 बजे के बाद ही तत्काल टिकट बुक कर सकते हैं।
6. एसी के लिए 10:00 से 10:30 बजे तक और नॉन एसी के लिए 11:00 - 11:30 बजे तक व्यक्तिगत ऑनलाइन उपयोगकर्ता और पीआरएस काउंटर पर विंडो टिकट उपयोगकर्ताओं के लिए ही उपलब्ध रहेगी ।7. तत्काल टिकट बुकिंग के लिए गैर-आधार उपयोगकर्ता पीआरएस काउंटरों और अधिकृत ट्रैवल एजेंटों के माध्यम से टिकट बुक कर सकते हैं ।

**आधार के साथ ई-टिकटिंग**
1. दिनांक 01.07.2025 से IRCTC ऐप पर तत्काल टिकट बुकिंग केवल आधार सत्यापित आईडी से ही की जा सकेगी ।2. आधार प्रमाणीकरण के लिए ओटीपी का प्रावधान 15-07-2025 तक लागू किया जाएगा।3. यह सुनिश्चित करने के लिए कुछ प्रावधान किए गए हैं कि बॉट (या अन्य सॉफ़्टवेयर साधन) वास्तविक उपयोगकर्ताओं की तुलना में तेज़ी से टिकट बुक करने में सक्षम न हों।
मोबाइल ओटीपी के साथ विंडो टिकट बुकिंग- विंडो टिकट के लिए बुकिंग करने वाले व्यक्ति को एक मोबाइल नंबर देना होगा जिस पर सत्यापन के लिए ओटीपी भेजा जाएगा। यह प्रावधान 15.07.2025 तक लागू किया जाएगा।

### राजद नेताओं ने लालू प्रसाद यादव की 78 वां जन्मदिवस धूमधाम से मनाया

राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लालू प्रसाद यादव जी के 78 वाँ जन्मदिवस फुल्लीडुमर प्रखंड के सादपुर पंचायत के मनरेगा भवन के प्रांगण में केक काटकर ,एवं पौधा रोपण कर समारोहपूर्वक मनाया गया। वहीं इस मौके पर पूर्व मुखिया कैलाश बिहारी राय,मिडिया प्रभारी राहुल रंजन, विभास दास, जयद्रथ कुमार ,राकेश कुमार,बिवेकानंद माँझी, सनोज दास, रूपेश दास, श्यामल किशोर दास, हरे राम दास, गौरव कुमार दास सहित दर्जनों अन्य ग्रामवासी मौजूद थे।

# पारिवारिक कलह से तंग आकर महिला ने बेटे-बेटी के साथ कुएं में कुदकर दी जान

**स सू पंकज कुमार ठाकुर।**
चांदन थाना क्षेत्र के सिलजोरी पंचायत के बियाही गांव में पारिवारिक कलह से तंग आकर 23 वर्षीय एक महिला ने अपने बेटे-बेटी के साथ गांव स्थित बहियार के एक कुआं में कुदकर कथित तौर पर खुद खुशी कर लेने की मामला सामने आया है।शौच के लिए बहियार गए ग्रामीणों की नजर कुआं में तेरते हुए बच्चे की शव पर पड़ी। सुचना पर पहुंचे चांदन थानाध्यक्ष विष्णुदेव कुमार,पुअनि रविन्द्र कुमार, पुअनि रूपेश कुमार, पुअनि धर्मेन्द्र कुमार,पुअनि प्रिती कुमारी ने स्थानीय लोगों के सहयोग से इलेक्ट्रॉनिक पानी पंप मशिन लगाकर गहरे कुआं की पानी सुखाकर शव बाहर निकालने की प्रयास किया।कुआं अत्यधिक गहरे रहने पर शव

निकालने में हो रहे देरी को देखते हुए स्थानीय गोताखोर युवक ने मृतक सुजिता देवी उम्र 23 वर्ष पति चंदन यादव सा0बियाही व उनके बेटे शिवम कुमार उम्र 5 वर्ष व बेटी भवानी कुमारी उम्र 15 माह की शव को बाहर निकाला।कुआं में दोनों बच्चे के साथ मां ने जान देने की खबर आसपास के गांवों में आग की तरह फैल गई। तीनों शव को देखने सैंकड़ों महिला, पुरुष व बच्चे घटना स्थल पर पहुंच गए। मृतक महिला के पिता कुलदीप यादव सा0गादी धानवे, थाना चन्द्रमण्डी, जिला जमुई निवासी ने बताया कि सुजिता की विवाह 2019 में चंदन यादव पिता शंकर यादव के हिन्दू रीति रिवाज के साथ किया था। जिसमें दो संतान शिवम कुमार व भवानी कुमारी साथ गुजर वसर कर रहे थे।आज बुधवार सुबह शंकर यादव के द्वारा जल्द बियाही गांव आने की बात कहा। बियाही पहुंचने पर घर ताला लगा देखकर कुछ अनहोनी होने की आशंका हुई।आस-पड़ोस के लोगों से पुछे जाने पर कुआं है बच्चे की शव मिलने की बात कहा।कुआं के पास काफी भीड़ को देखकर पहुंचे तो नाती शिवम कुमार का शव कुएं में तेरते हुए मिला। घटना का कारण लोग अवैध संबंध को लेकर उपजे विवाद दबे जवान से बोल रहे हैं।चांदन थाना पुलिस ने तिनों शव को कुएं से बाहर निकलकर अपने कब्जे में पोस्टमार्टम के लिए बांका भेज दिया।इस संबंध में थानाध्यक्ष विष्णुदेव कुमार ने बताया मामला दर्ज कर सभी ऐंगल्स से जांच कर रहे हैं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट रिपोर्ट आने के बाद सही कारणों की पता लगेगा।

### असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने किया बराक घाटी के लिए एकीकृत विकास योजना तैयार

**पंकज नाथ, आदिवासी एक्सप्रेस, असम**
असम के मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा ने बराक घाटी क्षेत्र को मजबूत विकास पथ पर लाने और इसके विकास की गति को तेज करने के लिए कल मंगलवार को लोक सेवा भवन स्थित अपने कार्यालय में मंत्रियों, विधायकों और बराक घाटी विकास विभाग के पदाधिकारियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक की। बैठक में, कई सामाजिक, आर्थिक और रणनीतिक कारणों से बराक घाटी के महत्व पर जोर देते हुए, मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्वा सरमा ने बराक घाटी के तीन जिले श्रीभूमि, कछार और हैलाकांडी में संतुलित विकास के लिए एक सामान्य विकास लक्ष्य की बात कही । मुख्यमंत्री सरमा ने बराक घाटी में किए जा रहे तथा चल रहे विकास परियोजनाओं की समीक्षा करते हुए उन्हें जल्द पूरा करने पर भी जोर दिया। विकास पहलों को शुरू करने के लिए सामान्य विकास लक्ष्य पर जोर देते हुए, मुख्यमंत्री डॉ. सरमा ने कहा कि सरकार ऐसी परियोजनाओं की कल्पना कर रही है जो तीनों जिलों के लोगों को समान रूप से लाभान्वित करेंगी। इसलिए, उन्होंने लोगों पर दूरगामी प्रभाव डालने वाली और मूर्त परिवर्तन लाने की क्षमता रखने वाली परियोजनाओं को लेने के लिए हितधारकों और जिला पदाधिकारियों के बीच उचित समन्वय का आह्वान किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि बराक घाटी के लोगों, आम लोगों और खास तौर पर छात्रों के लाभ के लिए सरकार राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली के साथ-साथ कोलकाता में भी बराक घाटी भवन स्थापित करने के लिए कदम उठा रही है। बराक घाटी की समृद्ध सांस्कृतिक संपदा और यहां के युवाओं की खेल प्रतिभा को ध्यान में रखते हुए डॉ. सरमा ने बराक घाटी विकास विभाग से आने वाले दिनों में बराक सांस्कृतिक महोत्सव और बराक खेल महोत्सव आयोजित करने को कहा। उन्होंने विभाग से जिलों के सभी सिविल अस्पतालों में एमआरआई सुविधाएं शुरू करने के लिए भी कदम उठाने को कहा। इस बैठक में कछार जिले के संरक्षक मंत्री जयंत मल्लाबरुआ, खाद्य, पशु चिकित्सा और पशुपालन मंत्री कृष्णेंदु पॉल, नागरिक आपूर्ति और उपभोक्ता मामलों के मंत्री कौशिक राय, बराक घाटी के विधायक, मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव डॉ. केके द्विवेदी, बराक घाटी विकास विभाग के सचिव आदिल खान और अन्य कई अधिकारी उपस्थित थे।

# असम के कामरूप जिले की विकास समिति की बैठक सम्पन्न

**पंकज नाथ**
**आदिवासी एक्सप्रेस, असम**
असम के कामरूप जिले के जिला विकास आयुक्त सुशांत कुमार दत्ता की अध्यक्षता में जून माह की जिला विकास समिति की बैठक आज अमिनगांव स्थित एकीकृत जिला आयुक्त कार्यालय के सभागार में आयोजित हुई। आज की बैठक में पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग की प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, अमृत सरोवर आदि योजनाएँ, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग की जल जीवन मिशन और स्वच्छ भारत मिशन

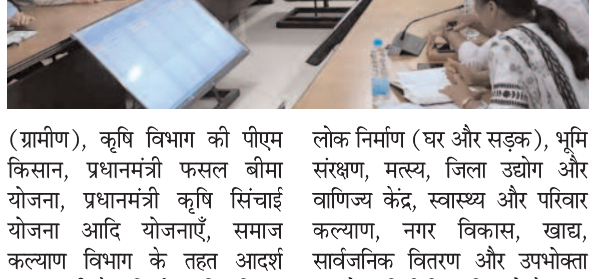

(ग्रामीण), कृषि विभाग की पीएम किसान, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना आदि योजनाएँ, समाज कल्याण विभाग के तहत आदर्श आंगनवाड़ी केंद्र निर्माण सहित शिक्षा, लोक निर्माण (घर और सड़क), भूमि संरक्षण, मत्स्य, जिला उद्योग और वाणिज्य केंद्र, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, नगर विकास, खाद्य, सार्वजनिक वितरण और उपभोक्ता मामले आदि विभिन्न विभागों के तहत जिले में चल रही सभी योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की गई। आज की बैठक में वन विभाग की ओर से अमृत वृक्ष आंदोलन के लिए कामरूप जिले में नर्सरी स्थापित करने के लिए उठाए गए कदमों के बारे में, और मत्स्य विभाग की ओर से जिले में एक्वा-टूरिज्म के लिए किए गए उपायों के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही, बैठक में असम आदर्श गांव योजना के तहत विकास खंडों में चल रहे कार्यों की भी जानकारी ली गई। आज की बैठक में कामरूप जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सिद्धार्थ गोस्वामी और विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

# नहीं रही सुकल्याण मोइत्रा की सास-मां बीना बारला

- चुरचू मध्य विद्यालय में शिक्षिका के पद से हुई थी सेवानिवृत्त
- भारतीय नौसेना के अधिकारी की थी बेटी

**आदिवासी एक्सप्रेस**
**हजारीबाग।** विनोबा भावे विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉ

सुकल्याण मोइत्रा की सास-मा एवं डॉ मोइत्रा की पत्नी सरिता बरला की माता बीना बारला का निधन बुधवार सुबह चुरचू प्रखंड के डूमर गांव में अपने निवास स्थान में हो गया।
वह कुछ समय से बीमार चल रही थी। उनके पिता स्वर्गीय बसंत अवध्या भारतीय नौसेना से अवकाश प्राप्त किए थे। शिक्षिका के रूप में मध्य विद्यालय चूरचू में लगभग चार दशक की सेवा के बाद वह 2007 में अवकाश प्राप्त की थी। उनके पति अवकाश प्राप्त शिक्षक डेविड बरला का निधन कुछ वर्ष पहले हुआ था।
इनका अंतिम संस्कार ग्राम डूमर में इनके पारिवारिक सिमेट्री मे संपन्न हुआ। आसपास के गांव तथा हजारीबाग नगर से बड़ी संख्या में रिश्तेदार और शुभचिंतक इसमें भाग लिए। रांची और बोकारो जिले से भी रिश्तेदार इस मौके पर अंतिम दर्शन के लिए पहुंचे।
डूमर ग्राम के संत लुका चर्च के पादरी निशांत कुमार भूईया एवं पादरी रंजीत मरांडी ने इस अवसर पर प्रार्थना सभा का संचालन किया। मौके पर ईसाई धर्म पुस्तक बाइबल की पंक्तियां पाठ की गई एवं ईसा मसीह के स्मरण में कई अर्थपूर्ण गीत की सामूहिक गायन हुई। अंत में सभी लोगों ने कबर पर पुष्प अर्पण कर उसे सजाया और मोमबत्ती और अगरबत्ती जलाकर बीना बरला को अंतिम विदाई दी।
बीना बारला ने अपने पीछे अपने स्वर्गीय बड़े पुत्र विनय बरला के परिवार के साथ-साथ छोटे पुत्र असीम बरला, दोनों पुत्री सरिता बरला, अर्चना बरला, दामाद सुकल्याण मोइत्रा, शिवाजी मोइत्रा सहित उनके परिवार एवं अनेकों रिश्तेदार को छोड़ गई।

## नहीं होगी चूक, हम हैं तैयार: अभिषेक मोहन गुप्ता

**एजेंसी**

**ग्वालियर।** ग्वालियर डिवीजन क्रिकेट एसोसिएशन (जीडीसीए) द्वारा मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वावधान में 12 जून से ग्वालियर के शंकरपुर स्थित श्रीमंत माधवराव सिंधिया क्रिकेट स्टेडियम में शुरू हो रही मध्यप्रदेश लीग 2024 की उपविजेता भोपाल लेपर्ड्स इस बार जोरदार वापसी के इरादे से मैदान में उतरने को तैयार है। इस सीजन में भोपाल लेपर्ड्स की शुरुआत 13 जून को जबलपुर रॉयल लायंस के खिलाफ होने वाली है। टीम इस सीजन के लिए दिन के साथ ही भविष्य की परिस्थितियों के अनुरूप फ्लडलाइट्स में भी खूब पसीना बहा रही है। अभ्यास सत्र के दौरान भोपाल लेपर्ड्स के मालिक अभिषेक मोहन गुप्ता ने कहा, इस बार हमारे पास तैयारी के लिए पर्याप्त समय था और हम इसका भरपूर उपयोग कर रहे हैं। हमने मैदान में फ्लडलाइट्स के नीचे अच्छी प्रैक्टिस की है और हम अपनी तैयारियों लेकर पूरी तरह से आश्वस्त हैं। पिछले साल खिताब से चूकने के बाद इस बार टीम ने अपने दल को रणनीतिक रूप से और मजबूत किया है ताकि संतुलित और शक्तिशाली टीम के साथ मैदान में उतर सकें। टीम की तैयारियों के बारे में गुप्ता ने आगे कहा, इस बार हमारा पूरा प्रयास है कि पिछली बार जो चूक हुई थी वहां से एक कदम आगे बढ़ाते हुए ट्रॉफी हासिल कर सकें। हमने अलग-अलग भूमिकाओं के लिए सही खिलाड़ियों को जोड़ा है। इस बार हमारी टीम पहले से ज्यादा संतुलित है। हमने तैयारी के लिए काफी समय निकाला और मुझे लगता है कि यही चीजें हमें टूर्नामेंट के अंत में टॉप पर पहुंचाएंगी।

## जेएससीए ने एमएस धोनी के आईसीसी हॉल ऑफ फेम में शामिल होने का जश्न मनाया

**रांची।** झारखंड राज्य क्रिकेट संघ (जेएससीए) ने आईसीसी हॉल ऑफ फेम में एमएस धोनी के शामिल होने के उपलक्ष्य में समारोह का आयोजन किया। खबर है कि 2025 बैच के हिस्से के रूप में, धोनी की उल्लेखनीय उपलब्धि की घोषणा लॉर्ड्स में विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल की पूर्व संध्या पर की गयी, जिसमें क्रिकेट में उनके उत्कृष्ट योगदान को मान्यता दी गयी। अपने शानदार 14 साल के अंतरराष्ट्रीय करियर के दौरान धोनी ने कई पुरस्कार जीते। भारत को कई जीत दिलाई और क्रिकेट के महान दिग्गजों में से एक के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत किया। जेएससीए समारोह में अजय नाथ शाहदेव (अध्यक्ष), संजय पांडे (उपाध्यक्ष), सौरभ तिवारी (सचिव), अमिताभ घोष (कोषाध्यक्ष), और अन्य सम्मानित समिति के सदस्यों के साथ-साथ एसोसिएशन के सदस्य शामिल हुए।

## हॉकी इंडिया ने 4 नेशंस टूर्नामेंट के लिए 24 सदस्यीय भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम घोषित की

**नई दिल्ली।** हॉकी इंडिया ने आगामी 4 नेशंस टूर्नामेंट के लिए भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम की घोषणा की, जो 21 से 25 जून तक जर्मनी के बर्लिन में आयोजित होगा। यह प्रतिष्ठित प्रतियोगिता चार मजबूत टीमों भारत, स्पेन, ऑस्ट्रेलिया और मेज़बान जर्मनी के बीच खेली जाएगी। प्रतियोगिता के प्रारूप के अनुसार प्रत्येक टीम एकल राउंड-रॉबिन पूल चरण में एक-दूसरे के खिलाफ खेलेगी। इसके बाद शीर्ष दो टीमें फाइनल में भिड़ेंगी, जबकि तीसरे और चौथे स्थान पर रहने वाली टीमें एक वर्गीकरण मैच खेलेंगी। यह टूर्नामेंट भारतीय जूनियर टीम के लिए एफआईएच जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप 2025 की तैयारी का अहम हिस्सा होगा, जो इस साल के अंत में चेन्नई और मदुरै में 28 नवंबर से 10 दिसंबर तक आयोजित होगा। भारतीय टीम की कमान अरिजीत सिंह हंडल के हाथों में होगी, जो अपनी आक्रामक क्षमता और नेतृत्व कौशल के लिए हमेशा प्रशंसा प्राप्त करते हैं। डिफेंडर अमीर अली, जो अपनी ठंडक और अनुभव के लिए जाने जाते हैं, को उपकप्तान नियुक्त किया गया है। इस टूर्नामेंट और टीम के बारे में भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम के कोच पीआर श्रीजेश ने कहा, '4 नेशंस टूर्नामेंट हमारे एफआईएच जूनियर विश्व कप की तैयारी के रोडमैप का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

## अर्जेंटीना ने मेसी के बिना खेलना सीख लिया : स्कैलोनी

**नई दिल्ली।** अर्जेंटीना के कोच लियोनेल स्कैलोनी ने कोलंबिया के खिलाफ होने वाले वर्ल्ड कप क्वालीफायर मुकाबले से पहले कहा कि उनकी टीम अब लियोनेल मेसी की अनुपस्थिति में भी बिना किसी समस्या के खेल सकती है और अब उन्हें लाइन-अप में बदलाव करने की जरूरत नहीं पड़ती। मेसी ने 2005 में अर्जेंटीना के लिए अपने अंतरराष्ट्रीय करियर की शुरुआत की थी और अब तक 192 मैचों में 112 गोल किए हैं। उन्होंने 2022 में वर्ल्ड कप, दो कोपा अमेरिका खिताब और 2008 बीजिंग ओलंपिक में गोल्ड मेडल जीता है। 37 वर्षीय मेसी मार्च में हुए उरुग्वे के खिलाफ 1-0 की जीत और ब्राजील के खिलाफ 4-1 की शानदार जीत में चोट के कारण नहीं खेले थे, लेकिन अर्जेंटीना ने उस अंतरराष्ट्रीय ब्रेक में 2026 वर्ल्ड कप के लिए अपनी जगह पक्की कर ली थी। मेसी इस महीने के वर्ल्ड कप क्वालीफायर्स के लिए टीम में लौटे और चिली के खिलाफ 1-0 की जीत में उन्हें सब्स्टीट्यूट के तौर पर मैदान में उतारा गया। स्कैलोनी ने ब्यूनस आयर्स में पत्रकारों से कहा, अब टीम इस स्थिति में है कि वह मेसी के साथ या बिना एक ही तरह से खेल सकती है।

# निकोलस पूरन बने एमआई न्यूयॉर्क के कप्तान

**एजेंसी**

**नई दिल्ली ।** वेस्टइंडीज के पूर्व क्रिकेटर निकोलस पूरन को अमेरिका की मेजर लीग क्रिकेट (एमएलसी) में एमआई न्यूयॉर्क टीम का कप्तान नियुक्त किया गया है। 2025 सीजन से पहले यह घोषणा ऐसे समय पर की गई है जब पूरन ने ठीक एक दिन पहले ही अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की थी।फ्रेंचाइजी ने एक बयान में बताया कि हमारा हीरो, हमारा लीजेंड, हमारा कप्तान! 29 वर्षीय पॉकेट डायनामाइट, एमआई न्यूयॉर्क सुपरस्टार निकोलस पूरन को कॉग्निजेंट मेजर लीग क्रिकेट के 2025 सीजन से पहले एमआई न्यूयॉर्क का कप्तान बनाया गया है। निकोलस को दुनिया के बेहतरीन टी20 खिलाड़ियों में गिना जाता है।

उन्होंने वेस्टइंडीज के लिए कुल 167 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले, जिसमें 106 टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले शामिल हैं, जो किसी भी वेस्टइंडीज खिलाड़ी द्वारा सबसे ज्यादा हैं। इसके साथ ही वे वेस्टइंडीज की ओर से टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे अधिक रन बनाने वाले बल्लेबाज भी रहे, जिन्होंने 2,275 रन बनाए। निकोलस पूरन ने 2024 में अपने करियर का सबसे शानदार वर्ष बिताया। उन्होंने कैलेंडर ईयर में रिकॉर्ड 170 छक्के लगाए। इसके बाद इस साल आईपीएल 2025 में लखनऊ सुपर जायंट्स की तरफ से खेलते हुए शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने इस सीजन कुल 524 रन बनाए, जिसमें उनका स्ट्राइक रेट 196.25 रहा और उन्होंने पांच अर्धशतक जड़े। अब एमआई न्यूयॉर्क की कप्तानी का जिम्मा संभालते हुए निकोलस पूरन फ्रेंचाइजी क्रिकेट में अपने अनुभव और आक्रामक बल्लेबाजी का जलवा अमेरिका की लीग में दिखाने को तैयार हैं।

## फीफा विश्व कप 2026 क्वालिफायर - वांग युडोंग के पेनल्टी गोल से चीन ने बहरीन को 1-0 से हराया

**एजेंसी**

**चोंगकिंग।** 18 वर्षीय युवा फारवर्ड वांग युडोंग द्वारा इंजरी टाइम में किए गए पेनल्टी गोल की बदौलत चीन ने बहरीन को 1-0 से हराकर फीफा विश्व कप 2026 क्वालिफाइंग अभियान का समापन जीत के साथ किया।

पिछले गुरुवार को क्रमशः इंडोनेशिया और सऊदी अरब से हारने के बाद चीन और बहरीन दोनों ही टीमें ग्रुप स्टेज से बाहर हो चुकी थीं और एशियाई क्वालिफायर प्लेऑफ के अगले चरण में जगह नहीं बना सकीं। सम्मान के मैच कहे जा रहे इस अंतिम मुकाबले के पहले हाफ में दोनों टीमों के पास गोल करने के बहुत कम मौके आए। दूसरे हाफ में चीन ने बेहतर नियंत्रण दिखाया। वांग युडोंग ने बाएं छोर से लगातार आक्रमण किए और कई बार गोल के करीब पहुंचे, लेकिन बहरीन के गोलकीपर ने उनके सभी प्रयासों को नाकाम कर दिया।

आख़िरकार, 93वें मिनट में वांग को अपनी मेहनत का फल मिला। वांग झिमिंग की क्रॉस गेंद पर बहरीन के डिफेंडर के हैंडबॉल करने पर चीन को पेनल्टी मिली, जिसे वांग युडोंग ने शांत चित्त होकर गोल में बदलते हुए अपना पहला अंतरराष्ट्रीय गोल दर्ज किया। इस जीत के साथ चीन ने क्वालिफायर अभियान में कुल 9 अंक (3 जीत, 7 हार) अर्जित किए और ग्रुप सी में पांचवें स्थान पर रहा, बहरीन से तीन अंक आगे। ग्रुप सी की टॉप टीम जापान पहले ही अगले साल के विश्व कप के लिए क्वालीफाई कर चुकी है, जबकि दूसरा स्थान सऊदी अरब और ऑस्ट्रेलिया के बीच सीधे मुकाबले से तय होगा।

## चिली लगातार तीसरे फीफा वर्ल्ड कप से बाहर, कोच रिकार्डो गरेका ने दिया इस्तीफा

**एजेंसी**

**साओ पाउलो।** चिली की राष्ट्रीय फुटबॉल टीम को एक और बड़ा झटका लगा है। टीम फीफा विश्व कप 2026 के लिए क्वालिफाई करने में नाकाम रही है और लगातार तीसरे वर्ल्ड कप से बाहर हो गई है। एल एल्टो (बोलीविया) में खेले गए मुकाबले में चिली को बोलीविया के हाथों 0-2 से हार झेलनी पड़ी, जिससे वह दक्षिण अमेरिकी क्वालीफाइंग राउंड-रॉबिन प्रतियोगिता में सबसे आखिरी स्थान पर ही बनी रही। इस निराशाजनक प्रदर्शन के बाद टीम के मुख्य कोच रिकार्डो गरेका ने इस्तीफे की घोषणा कर दी। अर्जेंटीना के 67 वर्षीय इस कोच ने मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, मैं खिलाड़ियों और अधिकारियों को उनके समर्थन के लिए सार्वजनिक रूप से धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं अब टीम को छोड़ रहा हूं। चिली की 'गोल्डन जनरेशन' जिसने 2015 और 2016 में दो कोपा अमेरिका खिताब जीते थे, अब इतिहास बन चुकी है। टीम के दिग्गज स्ट्राइकर एलेक्सिस सांचेज़ ने हार के बाद कहा, बहुत दुख हो रहा है, मैंने ऐसा पहले कभी महसूस नहीं किया। हमें लोगों से माफ़ी मांगनी चाहिए।

बदलाव की शुरुआत हो चुकी है, गोल्डन जनरेशन अब दफन हो चुकी है – मैं अकेला बचा हूं। बोलीविया ने मैच की शुरुआत में ही पांचवें मिनट में मिगुएल तेरेसेरोस के गोल से बढ़त बना ली थी। 90वें मिनट में एंज़ो मोंटेरो ने दूसरा गोल कर चिली की उम्मीदों पर पूरी तरह पानी फेर दिया। यह मुकाबला ला पाज़ के बाहरी इलाके स्थित 4,150 मीटर की ऊंचाई पर एल एल्टो स्टेडियम में खेला गया। दूसरी ओर, उरुग्वे ने वेनेजुएला को 2-0 से हराकर क्वालिफाइंग स्टैंडिंग में बड़ी छलांग लगाई है। रोड्रिगो अग्विरे और जॉर्जियन डे अरेस्काएटा के गोलों की बदौलत उरुग्वे ने 16 मैचों में 24 अंकों के साथ शीर्ष छह में जगह मजबूत कर ली है, जो सीधे विश्व कप में एंट्री के लिए जरूरी है। अब सातवें स्थान की इंटरकॉन्टिनेंटल प्लेऑफ की दौड़ बोलीविया (17 अंक) और वेनेजुएला (18 अंक) के बीच रोचक बनती जा रही है।

## ब्राज़ील और इक्वाडोर ने पक्की की विश्व कप 2026 की टिकट

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** साओ पाउलो और लीमा में बुधवार (भारतीय समयानुसार) को खेले गए मुकाबलों में ब्राज़ील और इक्वाडोर ने फीफा विश्व कप 2026 के लिए अपनी जगह पक्की कर ली। ब्राज़ील ने कोरिंथियंस एरिना में पराग्वे को 1-0 से हराकर, जबकि इक्वाडोर ने पेरू के खिलाफ 0-0 की ड्रॉ खेलकर क्वालीफिकेशन सुनिश्चित किया। ब्राज़ील के लिए एकमात्र गोल रियल मैड्रिड के स्टार फॉरवर्ड विनीसियस जूनियर ने 44वें मिनट में किया। उन्होंने मैथ्यूस कुन्हा के पास पर नजदीक से गेंद को गोलपोस्ट में डालते हुए टीम को बढ़त दिलाई। यह ब्राज़ील के नए कोच कार्लो एंसेलोटी की पहली जीत रही, जो उनके घरेलू डेब्यू में ही मिली।इस जीत के साथ ब्राज़ील अब 16 मैचों में 25 अंकों के साथ कॉनमेबोल क्वालीफाइंग स्टैंडिंग में तीसरे स्थान पर पहुंच गया है, जिससे वह शीर्ष छह में रहते हुए सीधे विश्व कप के लिए क्वालिफाई कर गया। इसके साथ ही ब्राज़ील ने अपने ऐतिहासिक रिकॉर्ड को कायम रखा- वह एकमात्र देश है

जिसने अब तक हर फीफा विश्व कप टूर्नामेंट में भाग लिया है। वहीं इक्वाडोर ने भी पेरू से ड्रॉ खेलकर कुल 25 अंकों के साथ दक्षिण अमेरिका की टॉप छह टीमों में जगह बना ली। 2022 कतर विश्व कप में ग्रुप स्टेज से बाहर होने वाली इक्वाडोर की टीम अब पांचवीं बार विश्व कप में खेलेगी। पेरू के खिलाफ मुकाबले में इक्वाडोर को रेड कार्ड मिलने के बावजूद टीम ने साहसिक प्रदर्शन करते हुए जरूरी एक अंक हासिल किया। इन दोनों परिणामों के बाद दक्षिण अमेरिका से विश्व कप में प्रतिस्पर्धा करने वाली दो और टीमों का नाम तय हो गया है।

## फीफा विश्व कप 2026 क्वालिफायर्स: अल्माडा ने अर्जेंटीना की बचाई लाज, ऑस्ट्रेलिया-जापान सहित कई टीमें क्वालिफाई

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** खेले गए फीफा विश्व कप 2026 क्वालिफायर्स के मुकाबलों में रोमांच चरम पर रहा, जहां एक ओर अर्जेंटीना ने 10 खिलाड़ियों के साथ कोलंबिया से ड्रॉ खेलते हुए अपराजित क्रम बरकरार रखा, वहीं ऑस्ट्रेलिया, जापान, ईरान, दक्षिण कोरिया और उज़्बेकिस्तान जैसी टीमों ने अगले साल होने वाले विश्व कप के लिए अपना स्थान पक्का कर लिया।

**अल्माडा ने दिलाई अर्जेंटीना को राहत**

ब्यूनस आयर्स में खेले गए मुकाबले में अर्जेंटीना को कोलंबिया के खिलाफ 1-1 की बराबरी पर संतोष करना पड़ा। कोलंबिया ने मैच के 24वें मिनट में लुइस डियाज़ के शानदार एकल प्रयास से बढ़त बना ली थी। अर्जेंटीना की मुश्किलें तब और बढ़ गईं जब एंज़ो फर्नांडीज को

दूसरे हाफ में रेड कार्ड दिखाया गया, लेकिन 81वें मिनट में थियागो अल्माडा ने बराबरी का गोल दागकर अपनी टीम को हार से बचा लिया और अर्जेंटीना की अपराजित लय को पांच मैचों तक पहुंचा दिया।

**ऑस्ट्रेलिया की शानदार वापसी और क्वालिफिकेशन पक्का:** जेद्दा में ऑस्ट्रेलिया ने सऊदी अरब को 2-1 से हराकर लगातार छठी बार फीफा विश्व कप के लिए क्वालिफाई कर लिया। पहले गोल सऊदी अरब की ओर से अब्दुलरहमान अल-ओबूद ने 19वें मिनट में किया। लेकिन ऑस्ट्रेलिया ने पहले हाफ के अंत में कॉनर मेटकाफ और फिर दूसरे हाफ की शुरुआत में मिच ड्यूक के गोल की बदौलत वापसी की। गोलकीपर मैटी रयान ने अपने 100वें अंतरराष्ट्रीय मैच में आखिरी पलों में पेनल्टी बचाकर जीत सुनिश्चित की। जापान ने इंडोनेशिया को 6-0 से रौंदकर ग्रुप ष्ट में शीर्ष स्थान हासिल किया, जिसमें डाइची कामाडा ने पहले हाफ में दो गोल किए। ईरान ने तेहरान में नॉर्थ कोरिया को 3-0 से हराया और ग्रुप, में पहले स्थान पर रहा।

## आईओसी अध्यक्षीय हस्तांतरण समारोह 23 जून को

**एजेंसी**

**लुसाने (स्विट्ज़रलैंड)।** अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) के निवर्तमान अध्यक्ष थॉमस बाक 23 जून को एक विशेष समारोह के दौरान आधिकारिक रूप से अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी किर्स्टी कोवेंट्री को सौंपेंगे। यह हस्तांतरण समारोह आईओसी मुख्यालय 'ओलंपिक हाउस' में सुबह 11 बजे से दोपहर 12:15 बजे (भारतीय समयानुसार दोपहर 2ः30 बजे से 3ः45 बजे तक) आयोजित किया जाएगा। थॉमस बाक ने 2013 में ब्यूनस आयर्स में आयोजित 125वें आईओसी सत्र में चुनाव जीतकर नौवें अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला था। उन्होंने आठ वर्षों का पहला कार्यकाल पूरा करने के बाद मार्च 2021 में बिना किसी विरोध के पुनः निर्वाचित होकर दूसरा चार वर्षीय कार्यकाल शुरू किया। मार्च 2025 में ग्रीस में आयोजित 144वें आईओसी सत्र के दौरान उन्हें आईओसी का आजीवन मानद अध्यक्ष चुना गया। वहीं, मार्च 2025 में चुनी गई किर्स्टी कोवेंट्री आईओसी की 10वीं अध्यक्ष बनने जा रही हैं। वे इस ऐतिहासिक जिम्मेदारी को संभालने वाली पहली अफ्रीकी और पहली महिला अध्यक्ष होंगी।यह समारोह आईओसी मीडिया के यूट्यूब चैनल पर लाइव प्रसारित किया जाएगा, जिसे दुनियाभर के दर्शक देख सकेंगे।

# भारतीय शूटिंग को नई उड़ान देगा एसएलआई : एलावेनिल वलारिवन

**एजेंसी**

**नई दिल्ली।** नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एनआरएआई) द्वारा हाल ही में लॉन्च की गई शूटिंग लीग ऑफ इंडिया (एसएलआई) को लेकर देशभर में उत्साह का माहौल है। इस बीच भारत की स्टार शूटर एलावेनिल वलारिवन ने एसएलआई को खेल के लिए 'गेम-चेंजर' बताया है। म्यूनिख में आयोजित आईएसएसएफ वर्ल्ड कप में कांस्य पदक जीतने वाली एलावेनिल ने कहा कि वह इस लीग को लेकर बेहद उत्साहित हैं।एलावेनिल ने एक आधिकारिक बयान में कहा, यह हमारे खेल के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है क्योंकि ऐसा पहली बार हो रहा है। मैं इसे लेकर बहुत उत्साहित हूं और मुझे यकीन है कि हर खिलाड़ी इस लीग

को लेकर उत्साहित होगा। उन्होंने कहा, इस लीग में प्रतिस्पर्धा का स्तर बहुत ऊंचा होगा और इसका फायदा हमें अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में देखने को मिलेगा। यह सभी खिलाड़ियों के लिए एक अच्छा माहौल और बड़ा मोटिवेशन साबित होगा। एलावेनिल ने विदेशी खिलाड़ियों की भागीदारी को लेकर भी अपनी बात रखी। उन्होंने कहा, मैं हमेशा दूसरे एथलीट्स से सीखने के मौके का इंतजार करती हूं और यह लीग उनके अनुभव को अपनाने का एक बेहतरीन जरिया बनेगी। एक ही टीम में रहकर उनके आइडियाज को समझना और साझा करना आसान होगा। खासतौर पर युवा और नए खिलाड़ी सीनियर एथलीट्स से बहुत कुछ सीख सकेंगे और मैं खुद भी इस अनुभव को लेकर उत्साहित हूं। दो बार की ओलंपियन एलावेनिल का मानना है कि यह लीग शूटिंग को देशभर में नई पहचान दिलाएगी। उन्होंने कहा, यह लीग आम जनता के बीच शूटिंग खेल की समझ और लोकप्रियता को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएगी। जब लोग इस खेल को उसके असली प्रारूप में देखेंगे तो इससे जुड़ाव और बढ़ेगा और उम्मीद है कि ज्यादा युवा इसे पेशेवर रूप में अपनाना चाहेंगे। अंत में उन्होंने कहा, चूंकि लीग बड़े स्तर पर आयोजित की जा रही है और विदेशी खिलाड़ी भी इसका हिस्सा होंगे, तो यह युवाओं को इस खेल के प्रति आकर्षित करने में मदद करेगी। इससे नई पीढ़ी को शूटिंग को जानने और सीखने का बड़ा मौका मिलेगा।

## फीफा वर्ल्ड कप 2026 क्वालिफायर: डी ब्रून ने बेल्जियम को वेल्स के खिलाफ दिलाई रोमांचक जीते

**ब्रुसेल्स।** केविन डी ब्रून ने अंतिम क्षणों में गोल कर बेल्जियम को वेल्स के खिलाफ 4-3 से रोमांचक जीत दिलाई। हुए फीफा वर्ल्ड कप 2026 क्वालिफायर मुकाबले में बेल्जियम ने शुरुआती बढ़त गंवा दी थी, लेकिन डी ब्रून के 88वें मिनट में किए गए निर्णायक गोल ने मेज़बान टीम को राहत की सांस दी। बेल्जियम ने पहले हाफ घंटे के भीतर ही 3-0 की मजबूत बढ़त बना ली थी। 15वें मिनट में रोमेलु लुकाकू ने पेनल्टी पर गोल करके खाता खोला, इसके बाद कप्तान यूरी टीलमैंस ने 19वें और जर्मी डोकू ने 27वें मिनट में गोल दागे। हालांकि, वेल्स ने शानदार वापसी की। हाफ टाइम से ठीक पहले हैरी विल्सन ने पेनल्टी के जरिए वेल्स का खाता खोला। इसके बाद दूसरे हाफ में सोरबा थॉमस और ब्रेनन जॉनसन ने गोल कर स्कोर 3-3 कर दिया।

# भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने बेल्जियम को 2-1 से हराया

**एजेंसी**

**एंटवर्प।** भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम ने यूरोप दौरे पर अपना विजय अभियान जारी रखते हुए बेल्जियम के खिलाफ 2-1 से रोमांचक जीत दर्ज की। यह मुकाबला बेल्जियम के एंटवर्प स्थित हॉकी सेंटर ऑफ एक्सीलेंस, विलरिज्कसे प्लेन में खेला गया। भारत की ओर से ललथनतलुआंगी (35वें मिनट) और गीता यादव (50वें मिनट) ने गोल किए। मुकाबले की शुरुआत से दोनों टीमों के बीच जबरदस्त संघर्ष देखने को मिला, लेकिन पहले हाफ में कोई भी टीम गोल नहीं कर सकी। मैच का पहला गोल 35वें मिनट में भारत को पेनल्टी स्ट्रोक के रूप में मिला, जिसे ललथनतलुआंगी ने सफलतापूर्वक गोल में तब्दील कर भारत को बढ़त दिलाई। चौथे और अंतिम क्वार्टर में बेल्जियम की ओर से वैन हेलमॉन्ट ने 48वें मिनट में फील्ड गोल करते

हुए स्कोर को 1-1 की बराबरी पर ला दिया। हालांकि, इसके तुरंत बाद 50वें मिनट में गीता यादव ने शानदार फील्ड गोल करते हुए भारत को दोबारा बढ़त दिला दी।इसके बाद भारतीय डिफेंस ने मजबूती से खेल दिखाया और बेल्जियम के आखिरी समय में किए गए लगातार हमलों को नाकाम कर दिया। इस जीत के साथ भारत ने बेल्जियम के खिलाफ लगातार दूसरी जीत दर्ज की है। भारतीय जूनियर महिला टीम अब अपने यूरोप दौरे का अंतिम मुकाबला 12 जून को एक बार फिर बेल्जियम के खिलाफ खेलेगी।

# इंग्लैंड ने तीसरे टी20 में वेस्टइंडीज 37 रन से हराया, दूसरी बार किया क्लीन स्वीप

**एजेंसी**

**साउथैम्पटन।** इंग्लैंड ने साउथैम्पटन के यूटिलिटा बाउल मैदान पर खेले गए तीसरे और अंतिम टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले में वेस्टइंडीज को 37 रनों से हराकर तीन मैचों की श्रृंखला 3-0 से अपने नाम कर ली। यह इंग्लैंड की 2021 के बाद पहली टी20आई सीरीज में क्लीन स्वीप है। इस जीत के साथ इंग्लैंड ने सीमित ओवरों के नए कप्तान हैरी ब्रुक के नेतृत्व में लगातार दूसरी सीरीज में क्लीन स्वीप किया। टॉस हारने के बाद पहले बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड ने 3 विकेट पर 248 रन बनाए, जो घरेलू सरजमीं पर उनका अब तक का सर्वोच्च स्कोर है।

**डकेट और स्मिथ की धमाकेदार शुरुआत**

ओपनर बेन डकेट ने सिर्फ 20 गेंदों में अपना तीसरा टी20 अर्धशतक जड़ते हुए 84 रनों की धमाकेदार पारी खेली। उनके साथ जेमी स्मिथ ने भी 60 रनों की पारी खेलते हुए टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपना पहला अर्धशतक पूरा किया। दोनों ने मिलकर सिर्फ 9 ओवर में 120 रन जोड़े।जैकब बेथेल ने अंत में 36 रन की नाबाद तेज पारी खेली जिससे इंग्लैंड ने वेस्टइंडीज के सामने 249 रनों का विशाल लक्ष्य रखा।

**वेस्टइंडीज की लड़खड़ाती पारी**

लक्ष्य का पीछा करने उतरी वेस्टइंडीज की टीम ने 14 छक्के जरूर लगाए, लेकिन 8 विकेट पर 211 रन ही बना सकी। रोवमैन पॉवेल ने 45 गेंदों में नाबाद 79 रनों की शानदार पारी खेली, लेकिन बाकी बल्लेबाज उनका साथ नहीं दे सके।

इंग्लैंड की ओर से मार्क वुड ने 31 रन देकर 3 विकेट झटके। इस जीत के साथ इंग्लैंड ने वेस्टइंडीज के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में पहली बार 19-18 की बढ़त बना ली है।

**डकेट बने इंग्लैंड के भरोसेमंद ओपनर**

बेन डकेट ने अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी से एक बार फिर साबित कर दिया कि वे इंग्लैंड के सबसे भरोसेमंद मल्टी-फॉर्मेट ओपनर हैं। उनकी पारी में शानदार रिवर्स स्वीप, कवर्स के ऊपर से शॉट्स और स्क्वायर लेग के पीछे छक्का शामिल था, जिसने दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। डकेट की बल्लेबाजी ने युवा ओपनर स्मिथ को भी आत्मविश्वास दिया, जिन्होंने दोनों फॉर्मेट में इस सप्ताह पहला अर्धशतक जमाया है।

**वेस्टइंडीज के लिए चिंता की घड़ी**

पिछले 48 घंटे वेस्टइंडीज क्रिकेट के लिए सबसे निराशाजनक साबित हुए हैं। पहले रविवार को सीरीज हार और फिर एकतरफा हार। इसके बीच सोमवार को स्टार बल्लेबाज़ निकोलस पूरन ने सिर्फ 29 साल की उम्र में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेकर सभी को चौंका दिया। एक समय टी20 क्रिकेट की बादशाह रही वेस्टइंडीज टीम अब संघर्ष करती नजर आ रही है। हाल ही में समाप्त हुई इस सीरीज ने यह साफ कर दिया कि यह टीम अब उतनी प्रभावशाली नहीं रही, भले ही उसने इंग्लैंड से ज्यादा (35) छक्के लगाए हों।

स्कोरकार्ड :

इंग्लैंडः 248/3 (बेन डकेट 84, जेमी स्मिथ 60*, जैकब बेथेल 36*)

वेस्टइंडीजः 211/8 (रोवमैन पॉवेल 79*, शाई होप 45, मार्क वुड 3/31)

इंग्लैंड ने मैच 37 रन से जीता, सीरीज 3-0 से अपने नाम की।

## चुनिंदा दालों में तेजी, खाद्य तेल नरम

**एजेंसी**
**नई दिल्ली।** विदेशी बाजारों के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर आज आवक बढ़ने से खाद्य तेलों में भारी गिरावट देखी गयी जबकि मांग निकलने से चुनिंदा दाल दलहन में तेजी रही। इस दौरान मीठे के बाजार में टिकाव रहा।

तेल-तिलहनः वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का जून वायदा 40 रिंगिट उतरकर 3880 रिंगिट प्रति टन पर आ गया। वहीं, जून का अमेरिकी सोया तेल वायदा 0.15 सेंट की तेजी के साथ 47.53 सेंट प्रति पौंड बोला गया। इस दौरान घरेलू बाजार में मूंगफली तेल 220 रुपये प्रति क्विंटल, सूरजमुखी तेल 512 रुपये प्रति क्विंटल, सोया रिफाइंड 147 रुपये प्रति क्विंटल, पाम ऑयल 1099 रुपये प्रति क्विंटल और वनस्पति तेल 365 रुपये प्रति क्विंटल की नरमी देखी गयी। इस दौरान सरसों तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

**गुड़-चीनी :** मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर पड़े रहे।

**दाल-दलहनः** दाल-दलहन के बाजार में चुनिंदा दाल दलहनों में तेजी रही। इस दौरान मूंग दाल 100 रुपये प्रति क्विंटल, उड़द दाल 100 रुपये प्रति क्विंटल और अरहर दाल 100 रुपये प्रति क्विंटल उबल गयी जबकि चना, चना दाल और मसूर दाल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

**अनाज :** अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान चावल और गेहूं के दाम पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर पड़े रहे।

## पेट्रोल और डीजल की कीमतें स्थिर

**नई दिल्ली।** अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम आज स्थिर रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर आज अमेरिकी क्रूड 0.31 प्रतिशत बढ़कर 65.18 डॉलर प्रति बैरल पर रहा। इसी तरह लंदन ब्रेंट क्रूड 0.15 प्रतिशत की बढ़त के साथ 66.97 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

## विश्व बैंक ने की भारत के विकास पूर्वानुमान में 0.40 प्रतिशत की कटौती

**नई दिल्ली ।** विश्व बैंक ने व्यापार तनाव और नीति अनिश्चितता के बढ़ने से वैश्विक विकास दर के इस साल 2008 की वैश्विक मंदी के बाद सबसे कम रहने की उम्मीद जताते हुये भारत सहित दुनिया की लगभग 70 प्रतिशत अर्थव्यवस्थाओं के विकास पूर्वानुमान में कटौती कर दी है। चालू वित्त वर्ष में भारत के विकास पूर्वानुमान को 0.40 प्रतिशत की कटौती करते हुये 6.3 प्रतिशत कर दिया है। विश्व बैंक की नवीनतम वैश्विक आर्थिक संभावना रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक स्तर पर जारी उथल-पुथल के कारण सभी क्षेत्रों और आय समूहों में लगभग 70 प्रतिशत अर्थव्यवस्थाओं में विकास पूर्वानुमान में कटौती की गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि वित्त वर्ष 2025-26 में भारत की वृद्धि दर 6.3 प्रतिशत रहने का अनुमान है। जनवरी के अनुमानों की तुलना में पूर्वानुमान में 0.4 प्रतिशत की कमी की गई है। इसके लिए प्रमुख व्यापार भागीदारों में कमजोर गतिविधि और वैश्विक व्यापार बाधाओं में वृद्धि के कारण निर्यात में कमी को जिम्मेदार बताया गया है। वित्त वर्ष 2026-27 से शुरू होने वाले अगले दो वित्तीय वर्षों में, वृद्धि दर औसतन 6.6 प्रतिशत प्रति वर्ष तक पहुँचने की उम्मीद है, जिसे आंशिक रूप से निर्यात में वृद्धि में योगदान देने वाली मजबूत सेवा गतिविधि का समर्थन मिल सकता है। इसमें कहा गया है कि वित्त वर्ष 2026-27 में भारत की विकास दर 6.5 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2027-28 में 6.7 प्रतिशत रहने की उम्मीद है।

## मई में इक्विटी योजनाओं में शुद्ध प्रवाह में 22 प्रतिशत की गिरावट

**नयी दिल्ली।** भारत में मई में सीमा पर तनाव के बीच शेयर केंद्रित म्युचुअल फंडों शुद्ध निवेश में मासिक आधार पर करीब 22 प्रतिशत की गिरावट के बावजूद म्युचुअल फंड कंपनियों के प्रबंध के अंतर्गत कुल परिसंपत्तियाँ (एयूएम) सालाना आधार पर 12 प्रतिशत और मासिक आधार पर 0.5 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 72.19 लाख करोड़ रुपये के स्तर पर पहुँच गईं। जबकि अप्रैल में एयूएम 69.99 लाख करोड़ रुपए था। देश में म्युचुअल फंड कंपनियों की एसोसिएशन (एएमएफआई) की ओर से जारी मासिक रिपोर्ट के अनुसार कुल एयूएम में ओपन-एंडेड योजनाओं का हिस्सा 99.6 प्रतिशत के साथ सबसे अधिक रहा जो उनके प्रति निवेशकों के मजबूत जुड़ाव को दर्शाता है। रिपोर्ट के अनुसार शेयरों में केंद्रित म्युचुअल फंड में निवेश मई में शुद्ध निवेश मासिक आधार पर 21.66 प्रतिशत घटकर 19,013 करोड़ रुपये रह गया। यह इक्विटी फंड में लगातार पांचवें महीने निवेश में गिरावट है।

# भारत-अमेरिका ट्रेड डील में फंसा पेंच, अमेरिकी दबाव को मानने से भारत का इनकार

**एजेंसी**
**नई दिल्ली।** भारत और अमेरिका के बीच प्रस्तावित ट्रेड डील में कुछ मुद्दों को लेकर मामला फंसता नजर आ रहा है। भारत और अमेरिका के प्रतिनिधियों के बीच 4 से 10 जून के बीच दिल्ली में आपसी व्यापार से जुड़े सभी मुद्दों पर विस्तार से बातचीत हुई। इसके बाद अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल के कुछ सदस्य वापस लौट गए, जबकि कुछ सदस्यों की अभी भी भारतीय प्रतिनिधिमंडल से बातचीत जारी है। बताया जा रहा है कि एग्रीकल्चर, डेयरी, मेडिकल और डिजिटल सर्विसेस को लेकर भारत ने अमेरिका की मांग को पूरी तरह से ठुकरा दिया है। अमेरिका इन सेक्टर्स को ओपन करने का दबाव बना रहा है लेकिन भारत ने ऐसा करने से साफ इनकार कर दिया है। भारतीय पक्ष का मानना है कि दोनों देशों के बीच होने वाली ट्रेड डील पूरी तरह संतुलित होनी चाहिए, जिससे दोनों देशों के हितों का परस्पर ध्यान रखा

जा सके। भारत और अमेरिका दोनों देश डोनाल्ड ट्रंप की सरकार द्वारा शुरू की गई टैरिफ पॉलिसी को ध्यान में रखते हुए ट्रेड डील करना चाहते हैं। फिलहाल डोनाल्ड ट्रंप ने रेसिप्रोकल टैरिफ पर 8 जुलाई तक के लिए रोक लगा दी है। यही कारण है कि दोनों देशों के प्रतिनिधिमंडल 8 जुलाई के पहले ट्रेड डील को आखिरी रूप दे देना चाहते हैं, ताकि दोनों देशों के बीच होने वाले परस्पर कारोबार पर कोई असर न पड़े। ट्रेड डील को लेकर शुरू हुई बातचीत में अमेरिकी पक्ष पहले से ही डेयरी और एग्रीकल्चर सेक्टर को ओपन करने का दबाव बना रहा है। दूसरी ओर, भारत ने इन क्षेत्रों को संवेदनशील मानते हुए खोलने से इनकार कर दिया है। भारतीय पक्ष का मानना है कि अगर डेयरी और एग्रीकल्चर जैसे सेक्टर्स को पूरी तरह से ओपन कर दिया जाता है, तो इससे इन सेक्टर्स में विदेशी कंपनियों के साथ होने वाली प्रतिस्पर्धा को नियंत्रित करना मुश्किल हो जाएगा, जिससे भारतीय कारोबारियों को नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। जानकारों का कहना है कि भारत द्वारा इन सेक्टर्स को ओपन करने से साफ-साफ इनकार कर देने की वजह से भारत-अमेरिका ट्रेड डील के बीच गतिरोध की स्थिति बन गई है। अमेरिका का कहना है कि अगर भारत इन सेक्टर्स को ओपन करने के लिए तैयार नहीं होता है, तो फिर दोनों देशों के बीच ट्रेड डील नहीं हो सकता है।

## मुदा घोटाला मामले में ईडी ने बेंगलुरु में 100 करोड़ रुपये की संपत्तियां जब्त कीं

**एजेंसी**
**नई दिल्ली।** प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने मैसूर शहरी विकास प्राधिकरण (एमयूडीए) यानी मुदा घोटाला से जुड़े मामले में बेंगलुरु में 92 भूखंडों को अस्थायी रूप से जब्त किया है, जिनकी अनुमानित कीमत लगभग 100 करोड़ रुपये है। यह कार्रवाई मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम अधिनियम (पीएमएलए), 2002 के प्रावधानों के तहत की गई है। केंद्रीय जांच एजेंसी ईडी ने कहा कि इस घोटाले में मंगलवार को एक बयान में बताया कि अब तक जब्त की गई कुल संपत्तियों की राशि 400 करोड़ रुपये से अधिक पहुंच चुकी है। केंद्रीय एजेंसी के मुताबिक यह ताजा कार्रवाई चल रही जांच का हिस्सा है, जिसमें अबतक 400 करोड़ रुपये की संपत्तियां कुर्क की जा चुकी हैं।

ईडी ने आरोप लगाया है कि ये संपत्तियां हाउसिंग कोऑपरेटिव सोसाइटीज और व्यक्तियों जैसे संस्थाओं के नाम पर पंजीकृत हैं, जो मैसूर शहरी विकास प्राधिकरण के अधिकारियों सहित प्रभावशाली व्यक्तियों के लिए मुखौटा या डमी हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने कहा कि उसने सिद्धारमैया और अन्य के खिलाफ भारतीय दंड संहिता, 1860 और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988 की विभिन्न धाराओं के तहत लोकायुक्त पुलिस मैसूर द्वारा दर्ज की गई प्राथमिकी के आधार पर अपनी जांच शुरू की थी। ईडी की जांच में मुदा साइटों के आवंटन से जुड़े बड़े पैमाने पर घोटाले का पता चला है। एजेंसी का दावा है कि फर्जी आवंटन करने के लिए वैधानिक प्रावधानों और सरकारी आदेशों या दिशा-निर्देशों का उल्लंघन किया गया है।

## जोरदार लिस्टिंग के बाद गंगा बाथ फिटिंग्स के शेयरों पर लगा लोअर सर्किट

**एजेंसी**
**नई दिल्ली।** बाथरूम एक्सेसरीज बनाने वाली कंपनी गंगा बाथ फिटिंग्स के शेयरों की आज एनएसई के एसएमई सेगमेंट पर जबरदस्त एंट्री हुई। हालांकि लिस्टिंग के थोड़ी देर बाद ही बिकवाली का दबाव बन गया, जिसके कारण आईपीओ निवेशकों की खुशी फीकी पड़ गई। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 49 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज एनएसई के एसएमई सेगमेंट पर इसकी एंट्री 20.41 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 59 रुपये के स्तर पर हुई। लिस्टिंग के तुरंत बाद मुनाफा वसूली शुरू हो गई, जिससे ये शेयर टूट कर 56.05 रुपये के लोअर सर्किट लेवल पर आ गया। हालांकि लोअर सर्किट लगने के बावजूद कंपनी के आईपीओ निवेशक अभी भी 14.39 प्रतिशत के फायदे में हैं। गंगा बाथ फिटिंग्स का 32.65 करोड़ रुपये का आईपीओ 4 से 6 जून के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से मामूली रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 1.64 गुना

सब्सक्राइब हो गया था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 2.22 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 0.73 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 2.55 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 66.63 लाख नए शेयर जारी किए गए हैं। आईपीओ के जरिए जुटाए गए पैसे का इस्तेमाल कंपनी नए इक्विपमेंट खरीदने, वर्किंग कैपिटल की जरूरतों को पूरा करने और आम कॉर्पोरेट उद्देश्यों में करेगी।

## ऊर्जा अधिशेष के रूप में उभर रहा भारत : मनोहर लाल

**एजेंसी**
**नई दिल्ली।** केंद्रीय बिजली मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि पिछले दो महीने के दौरान देश में बिजली की कोई कमी नहीं हुई है। भारत ऊर्जा अधिशेष राष्ट्र के रूप में उभर रहा है। सरकार का लक्ष्य पूरे देश में 100 फीसदी घरों में बिजली पहुंचाना है। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने नई दिल्ली में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में बिजली के क्षेत्र में 11 वर्षों के परिवर्तनकारी विकास पर प्रकाश डालते हुए यह बात कही। वित्त वर्ष 2024-25 में बिजली की कमी 0.1 फीसदी रही है।

मनोहर लाल ने कहा कि हमारा लक्ष्य सभी को हर समय बिजली उपलब्ध कराना है और सरकार का लक्ष्य पूरे देश में 100 फीसदी घरों में बिजली पहुंचाना है।केंद्रीय बिजली मंत्री ने दावा किया है कि भारत अपनी सभी बिजली मांगों को पूरा करने वाला बिजली संपन्न देश बन गया है और बिजली अधिशेष वाले देश की राह पर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि कहा कि भंडारण परियोजनाओं के लिए अंतर-राज्यीय ट्रांसमिशन सिस्टम (आईएसटीएस) शुल्क की छूट को 30 जून, 2028 तक बढ़ा दिया गया है, जिससे इस तिथि से पहले आवंटित पंप स्टोरेज परियोजनाओं और चालू की गई बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणालियों को लाभ होगा। यह विस्तार भारत की बढ़ती

भंडारण जरूरतों को पूरा करने और ट्रांसमिशन लाइनों के उपयोग को अनुकूलित करने के लिए महत्वपूर्ण है।

# सर्राफा बाजार में लगातार चौथे दिन सोने की कीमत में गिरावट, चांदी में तेजी जारी

**एजेंसी**
**नई दिल्ली।** घरेलू सर्राफा बाजार में आज लगातार चौथे दिन सोने के भाव में गिरावट का रुख नजर आ रहा है। कीमत में आई गिरावट के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में आज 24 कैरेट सोना 97,570 रुपये से लेकर 97,720 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 89,440 रुपये से लेकर 89,590 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव बिक रहा है। सोना के विपरीत चांदी के भाव में भी आज तेजी का रुख नजर आ रहा है, जिसके कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में 1,000 रुपये महंगी होकर 1,09,100 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर बिक रही है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना 97,720 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 89,590 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है।

वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 97,570 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,440 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 97,620 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 89,490 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 97,570 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 89,440 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 97,570 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,440 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 97,720 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 89,590 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 97,620 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 89,490 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 97,720 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 89,590 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी आज सोना सस्ता हुआ है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 97,570 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

## शुरुआती कारोबार में उतार-चढ़ाव के बीच शेयर बाजार में तेजी का रुख, सेंसेक्स और निफ्टी उछले

**एजेंसी**
**नई दिल्ली।** घरेलू शेयर बाजार आज शुरुआती कारोबार के दौरान उतार-चढ़ाव का सामना करने के बाद बढ़त हासिल करता हुआ नजर आ रहा है। आज के कारोबार की शुरुआत मजबूती के साथ हुई थी। बाजार खुलने के कुछ देर बाद बिकवाली के दबाव में बेंचमार्क इंडेक्स सेंसेक्स और निफ्टी ने लाल निशान में गोता लगा दिया। हालांकि थोड़ी देर बाद लिवाली शुरू हो जाने के कारण इन दोनों सूचकांकों ने दोबारा हरे निशान में अपनी जगह बना ली। पहले एक घंटे का कारोबार होने के बाद सेंसेक्स 0.12 प्रतिशत और निफ्टी 0.21 प्रतिशत की मजबूती के साथ कारोबार कर रहे थे। शुरुआती एक घंटे का कारोबार होने के बाद स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से ग्रासिम इंडस्ट्रीज, इंडसइंड बैंक, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, टेक महिंद्रा और अल्ट्राटेक सीमेंट के शेयर 4.08 प्रतिशत से लेकर 1.42 प्रतिशत की मजबूती के साथ कारोबार कर रहे थे। दूसरी ओर आईसीआईसीआई बैंक, एशियन पेंट्स, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस, एचडीएफसी लाइफ और एटरनल के शेयर 1.26 प्रतिशत से लेकर 0.91 प्रतिशत की कमजोरी के साथ कारोबार करते हुए नजर आ रहे थे। अभी तक के कारोबार में स्टॉक मार्केट में 2,427 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हो रही थी। इनमें से 1,540 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में कारोबार कर रहे थे, जबकि 887 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में कारोबार कर रहे थे। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 20 शेयर लिवाली के सपोर्ट से हरे निशान में बने हुए थे।

# वित्त मंत्री ने एफएसडीसी की बैठक में दावा न की गई संपत्तियों की त्वरित वापसी और निर्बाध केवाईसी पर दिया जोर

**एजेंसी**
**नई दिल्ली।** केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने विनियामकों और विभागों से समन्वित बहु-एजेंसी विशेष जिला स्तरीय शिविरों का आयोजन करके दावा न किए गए धन के असली मालिकों को धन वापसी की प्रक्रिया में तेजी लाने का आग्रह किया। साथ ही उन्होंने सभी संस्थानों में अपने ग्राहक को जानें (केवाईसी) मानदंडों को सरल बनाने पर जोर दिया। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मुंबई में आयोजित वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफएसडीसी) की 29वीं बैठक की अध्यक्षता करते हुए यह बात कही। अपने संबोधन में वित्त मंत्री ने आम नागरिकों के हितों की रक्षा करने और अधिक उत्तरदायी वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र सुनिश्चित करने के उद्देश्य से सुधारों

पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि एफएसडीसी भारत में वित्तीय क्षेत्र के व्यापक विकास के लिए अंतर-नियामक समन्वय को और मजबूत करेगा। इस बैठक में केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी भी मौजूद रहे। वित्त मंत्री ने विनियामकों और विभागों से समन्वित बहु-एजेंसी विशेष जिला स्तरीय शिविरों का आयोजन करके दावा न की गई राशि के वास्तविक मालिकों को धन वापसी की प्रक्रिया में तेजी लाने का आग्रह किया। सीतारमण ने कहा कि आम नागरिकों के हितों को ध्यान में रखा जाना चाहिए और वास्तविक दावेदारों के धनों को वापस किया जाना चाहिए। उन्होंने एफएसडीसी से वित्तीय क्षेत्र में निर्बाध केवाईसी प्रक्रियाओं के लिए आगे सक्रिय कदम उठाने का आग्रह किया, ताकि उपयोगकर्ता अनुभव को बेहतर बनाया जा सके। सीतारमण ने एफएसडीसी की बैठक में अन्य बातों के साथ-साथ विनियमों की जवाबदेही बढ़ाने, दावा न की गई संपत्तियों में कमी लाने और रिफंड में तेजी लाने, केवाईसी प्रक्रिया को सरल और डिजिटल बनाने, निवेश अनुपात बढ़ाने, फैक्टरिंग सेवाओं में और सुधार करने तथा अकाउंट एग्रीगेटर नेटवर्क को बेहतर बनाने पर चर्चा की। इस बैठक में वित्त मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) गवर्नर संजय मल्होत्रा और पूंजी बाजार नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) के चेयरमैन तुहिन कांत पांडे और मुख्य आर्थिक सलाहकार भी मौजूद रहे।

# एसोचैम और स्विसमेम ने व्यापार, निवेश के लिए समझौते पर किए हस्ताक्षर

**एजेंसी**
**नई दिल्ली।** उद्योग मंडल एसोसिएटेड चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया (एसोचैम) ने मंगलवार को स्विट्जरलैंड के उद्योग संगठन स्विसमेम के साथ व्यापार एवं निवेश से संबंधित मुद्दों पर सूचनाओं के आदान-प्रदान तथा प्रसार के लिए को एक समझौते ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए।केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल की मौजूदगी में यह समझौता स्विट्जरलैंड के बर्न में किया गया है। इस समझौता ज्ञापन का मकसद दोनों देशों के विदेशी व्यापार से संबंधित तकनीकी हस्तांतरण, आर्थिक सहयोग, निवेश के अवसर, व्यापार मेले, प्रदर्शनियां, नीतियां और आर्थिक कानून जैसे क्षेत्रों में सहयोग करना है। इसके साथ ही दोनों उद्योग मंडल व्यापार मिशन, परियोजना अध्ययन समूहों, आयात, निर्यात, व्यापार और निवेश संबंधों के बदले में एक-दूसरे का सहयोग करेंगे। गोयल ने 'एक्स' पोस्ट पर जारी एक बयान में लिखा है, स्विस फेडरल काउंसिलर के उपाध्यक्ष गाइ परमेलिन के साथ मशीनरी, इलेक्ट्रिकल और

इसके अलावा सहयोग के क्षेत्रों में दोनों संगठनों के सदस्यों के हित में व्यापार एवं निवेश के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त गतिविधियों की खोज तथा उनका आयोजन करना भी शामिल है। पीयूष मेटल उद्योग पर एक उत्पादक बिजनेस राउंडटेबल की सह-अध्यक्षता की। इसके साथ ही नवाचार को बढ़ावा देने, साझेदारी को सुविधाजनक बनाने और संयुक्त कार्यबल प्रशिक्षण पर चर्चा की।

## कैंसर के उपचार टिब्सोवो कैपसूल बाजार में जारी

**एजेंसी**
**नई दिल्ली।** फ्रांस की प्रमुख फार्मा कंपनी सर्विअर समूह की भारतीय शाखा सर्विअर इंडिया ने कैंसर मरीजों के उपचार के लिए इवोसिडेनिब (टिब्सोवो) कैपसूल जारी करने की घोषणा की है। सर्विअर इंडिया ने मंगलवार को यहां बताया कि यह दवा उन कैंसर मरीजों के उपचार के लिए जारी की गई है जो तीव्र मायलॉइड ल्यूकेमिया और कोलेन्जियोकार्सिनोमा से ग्रस्त हैं और जिनमें आइसोसाइट्रेट डीहाइड्रोजनेज-1 म्यूटेशन पाया गया है। कंपनी के अनुसार इस दवा को आयात, बिक्री और वितरण के लिए 14 मई को केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) से मंजूरी मिली है। एक्यूट मायलॉइड ल्यूकेमिया एक जटिल रक्त संबंधी कैंसर है। अध्ययनों के मुताबिक, भारत में इससे पीड़ित केवल 30-40 प्रतिशत मरीजों को ही उचित उपचार मिल पाता है। बीमारी तेजी से बढ़ने और संक्रमण की वजह से इन मरीजों में मृत्यु दर काफी अधिक होती है। वहीं कोलेन्जियोकार्सिनोमा एक दुर्लभ प्रकार का ट्यूमर होता है, जो पित्त नलिका से उत्पन्न होता है। सर्विअर इंडिया के प्रबंध निदेशक ऑरेलियन ब्रेटन ने कहा कि कैंसर पीड़ित मरीजों तक अत्याधुनिक और सटीक उपचार पहुँचाना कंपनी का मुख्य उद्देश्य है।

# थर्ड पार्टी मोटर बीमा प्रीमियम में 25 फीसदी तक वृद्धि संभव, सरकार कर रही है समीक्षा

**एजेंसी**
**नई दिल्ली।** सरकार मोटर थर्ड पार्टी बीमा प्रीमियम बढ़ाने पर विचार कर रही है। यह सुझाव बीमा क्षेत्र के नियामक भारतीय बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) ने दिया है। आईआरडीएआई ने औसतन 18 फीसदी थर्ड पार्टी बीमा प्रीमियम बढ़ाने का सुझाव दिया है, जबकि कुछ गाड़ियों की कैटेगरी में यह बढ़ोतरी 20 से 25 फीसदी तक हो सकती है। आधिकारिक सूत्रों ने रिपोर्ट के हवाले से बताया कि सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय (एमओआरटीएच) भारतीय बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) की सिफारिशों के बाद मोटर थर्ड पार्टी (टीपी) बीमा प्रीमियम बढ़ाने के प्रस्ताव की सक्रियता से समीक्षा कर रहा है। इस प्रस्ताव में 18 फीसदी की औसत वृद्धि का सुझाव दिया गया है, जिसमें कम से कम एक वाहन श्रेणी के लिए 20-25 फीसदी की तीव्र वृद्धि शामिल है। जानकारों का कहना है कि

अगले 2-3 हफ्तों में इस मामले में अंतिम निर्णय की उम्मीद है, जिसके बाद मानक नियामक अभ्यास के अनुसार सार्वजनिक परामर्श के लिए एक मसौदा अधिसूचना जारी की जा सकती है। मंत्रालय की मंजूरी मिलने के बाद एक ड्राफ्ट नोटिफिकेशन सार्वजनिक सलाह-मशवरा के लिए जारी किया जाएगा। इसके बाद अन्य प्रक्रिया जैसे सुझाव लेना और समीक्षा करना किया जाएगा, तभी यह बदलाव लागू होंगे।

**क्या होता है थर्ड पार्टी इंश्योरेंसः** मोटर थर्ड पार्टी इंश्योरेंस, किसी सड़क हादसे में तीसरे पक्ष को होने वाले नुकसान की भरपाई करता है। इसका मतलब यह है कि अगर आपकी गाड़ी से किसी व्यक्ति को चोट लगती है या उसकी संपत्ति को नुकसान होता है तो इस बीमा से उसका खर्च कवर होता है। यह इंश्योरेंस मोटर व्हीकल एक्ट, 1988 के तहत अनिवार्य है। इस बीमा का मकसद यह है कि अगर आपकी गाड़ी से किसी और को नुकसान होता है तो वह खर्च बीमा कंपनी दे सके। उल्लेखनीय है कि पिछले तीन-चार सालों से मोटर थर्ड पार्टी बीमा प्रीमियम में कोई बदलाव नहीं किया गया था, जबकि इस सेक्टर में कई तरह की अनिश्चितताएं बनी हुई थीं। बीमा कंपनियां नियामक से प्रीमियम को बढ़ाने की मांग लगातार करता आ रहा है। ऐसे में जानकारों का मानना है कि अगर 20 फीसदी तक प्रीमियम बढ़ाया जाता है, तो इससे बीमा कंपनियों के प्रदर्शन में सुधार हो सकता है, जिससे इस सेक्टर को राहत मिल सकती है।

### पहले इस शख्स से जुड़ा था

# तेजस्वी प्रकाश

## का नाम, अब 10 साल बड़े करण कुंद्रा को कर रहीं डेट

10 जून 1993 को सउदी अरब के जेद्दा में एक ऐसी एक्ट्रेस का जन्म हुआ था, जिन्होंने भारतीय टीवी इंडस्ट्री में बड़ी पहचान बनाई. वहीं बिग बॉस जैसे चर्चित और विवादित रियलिटी शो को जीतकर वो हर किसी की जुबां पर आ गईं थीं. यहां बात हो रही तेजस्वी प्रकाश की. तेजस्वी प्रकाश आज किसी पहचान की मोहताज नहीं हैं. उन्होंने कम उम्र में ही काफी नाम कमा लिया है और उनके पास आज सुख सुविधा की हर एक चीज मौजूद है.तेजस्वी प्रकाश अपनी पर्सनल लाइफ से भी अक्सर ही सुर्खियों का हिस्सा बन जाती हैं. ये तो हर कोई जानता है कि तेजस्वी लंबे समय से मशहूर एक्टर करण कुंद्रा को डेट कर रही हैं,

लेकिन करण से पहले भी उनका नाम एक शख्स से जुड़ चुका है. आइए आपको बताते हैं कि आखिर पहले तेजस्वी के अफेयर की अफवाहें किसके साथ उड़ी थीं ?

तेजस्वी प्रकाश जब रोहित शेट्टी के मशहूर स्टंट शो 'खतरों के खिलाड़ी' के 10वें सीजन में काम कर रही थीं, तब उनका नाम टीवी अभिनेता शिविन नारंग से जुड़ा था. तब फैंस ने दोनों को ट्विन  नाम से भी बुलाना शुरू कर दिया था. आखिरकार तेजस्वी को इस मामले में अपनी चुप्पी तोड़नी पड़ी और उन्होंने शिविन को अपना अच्छा दोस्त बताया था.

## 'तू कौन सा तानसेन की औलाद हैं...' प्रियंका के आगे रो पड़े थे मीका सिंह... आवाज का उड़ता था मजाक

बॉलीवुड के मशहूर सिंगर मीका सिंह के लिए 10 जून का दिन बेहद खास होता है. उनका जन्म 10 जून 1977 को पश्चिम बंगाल के दुर्गापुर में हुआ था. आज अपना 48वां जन्मदिन मना रहे मीका ने बॉलीवुड गानों के साथ ही पंजाबी सॉन्ग से भी फैंस के बीच अच्छी खासी पहचान बनाई है. संगीत की दुनिया में सालों से राज कर रहे मीका के बर्थडे के मौके पर आज हम आपको उनसे जुड़ी कुछ खास बातें बताने जा रहे हैं. मीका आज म्यूजिक इंडस्ट्री का जाना-माना नाम हैं, लेकिन कभी लोग उनकी आवाज का मजाक उड़ाया करते थे.

**आवाज का मजाक उड़ाते थे लोग**

अन्य कलाकारों की तरह ही मीका सिंह को भी अपनी लाइफ में कड़े स्ट्रगल से गुजरना पड़ा है. आज उनकी आवाज के लाखों चाहने वाले हैं. जबकि कभी लोग उनकी आवाज को पसंद नहीं करते थे और उनका मजाक उड़ाते थे. मीका ने यूट्यूबर शुभांकर मिश्रा को दिए इंटरव्यू में खुलासा किया था कि लोग उन्हें ट्रोल करते हुए कहते थे कि, तू कौन सा तानसेन की औलाद हैं ?

**प्रियंका चोपड़ा के सामने रोने लगे थे मीका**

मीका ने इसी इंटरव्यू में ये खुलासा भी किया था कि एक बार वो प्रियंका चोपड़ा जैसी मशहूर एक्ट्रेस के सामने रो पड़े थे. मीका के मुताबिक वो एक शो कर रहे थे और उन्होंने 'बड़े अच्छे लगते हैं' गाना गाया था. तब सिंगर को अपने पुराने दिन याद आ गए थे जब उन्हें लोग ट्रोल करते थे. ऐसे में उनकी आंखों से आंसू छलक पड़े थे. तब प्रियंका, मीका के पास ही बैठीं हुईं थीं. मीका ने ये भी बताया था कि कभी-कभी वो अपने गाने सुनकर भी रोने लगते हैं.

**एक स्टेज शो के लेते हैं 50 लाख**

दिग्गज गायक दलेर मेहंदी के छोटे भाई मीका कभी जागरण और कीर्तन में गाया करते थे. बाद में वो फिल्मी दुनिया में आए. 'सावन में लग गई आग', 'आज की पार्टी', 'मौजा ही मौजा', 'ढिंक चिका', सुबह होने ना दे', और 'आपका क्या होगा' जैसे मशहूर गानों को आवाज दे चुके मीका एक गाने के लिए 10 से 13 लाख रुपये तक चार्ज करते हैं. वहीं वो एक स्टेज शो के लिए 50 लाख रुपये तक वसूलते हैं.